रेमन सेंडर

सात इनक़लाबी इतवार : : भाग—२

हंस पुस्तक

'हंस-पुस्तक' के अतर्गत आठवीं किताब

रेमन सेंडर की अमर कृति

"Seven Red Sundays" का हिन्दी रूपान्तर

सात इनक़लाबी इतवार

भाग दूसरा

8

अनुवादक : नारायणस्वरूप माथुर

—संपादक—

श्रीपतराय

बनारस

सरस्वती प्रेस

विघ्नात्मक कार्य में सफलता

मैं जेल में था। मैंने प्रतिज्ञा की थी कि उस वार्डर को इसका मज़ा चखाऊँगा। जेल से बाहर आने पर मैंने अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। पूर्वी क़ब्रिस्तान में अब उसके शव में से हुलहुल के पेड़ उग आये हैं। मुझे उम्रक़ैद हुई थी। किन्तु उन्होंने मेरे साथ दूसरे ही प्रकार का व्यवहार किया। वार्डर मुझे तंग नहीं करते थे। जेल मेरे लिए होटल के समान था। वहाँ के कुछ कर्मचारी मुझसे मित्रता करने के इच्छुक थे और प्रेमभाव से मेरे कन्धे पर हाथ रख दिया करते थे। मैं अवहेलना के भाव से इसको बरदाश्त कर लेता था। वे जानते हैं कि मैं 'घातक' हूँ। इस सद्व्यवहार के लिए मैंने उनके प्रति कोई कृतज्ञता भी प्रकट नहीं की। बहुत से अन्य कैदियों के समान मेरे लिए जेल एक विश्वविद्यालय था। मैंने वहाँ रहकर बहुत कुछ सीखा है। विभिन्न सामाजिक श्रेणियों

की पहचान, और आदर्श समाज कैसा होना चाहिये इसके सम्बन्ध में बहुत-सी विभिन्न कल्पनाएँ। इनके अतिरिक्त मैंने ऐसी बहुत-सी बातें भी सीखीं जो किसी और से बातचीत किये बिना स्वयं अपने विवेक द्वारा ही सीखी जा सकती हैं। वहाँ रहकर मैंने यह भी सीखा कि बूर्ज्वा लोगों के मध्य में रिवालवर लिये फिरना और कभी-कभी सर्व-हित के निमित्त उसे दिखाते रहना सफलता का कारण होता है। अब ज़रा मेरी ओर देखो तो। क्या यह जेलवाले हम लोगों को भूख, सर्दी और शारीरिक शोषण द्वारा मार डालने में अपनी ओर से कोई कसर रखते हैं? कम-से-कम मैं तो यही समझता हूँ। इससे अधिक इस विषय में कुछ और कहा ही नहीं जा सकता।

मैं अब 'तिमछली' गली में आ निकलता हूँ। यह गली अंधेरी है और सारे में जगह-जगह पेशाब पड़ा हुआ है। सब दरवाजे बंद हैं। एक घर में दो मज़दूर पड़े सो रहे हैं। उनके पास एक लम्बा-तड़ंगा युवक खड़ा है और उन्हें अपने पाँव से जथोड़कर जगा रहा है।

'मुँहजलो, उठ बैठो! मैं तुम्हारी दावत करूँगा।'

वह पिये हुए है। मैं उसकी आवाज़ पहचानता हूँ। यह फ़ाउ है।

'हल्लो! फ़ाउ!'

'अरे तुम हो, अरबैनो? ज़रा इन्हें तो देखो। कैसे सुअरों की तरह पड़े सो रहे हैं!'

'फिर तुम क्या चाहते हो?'

'इनकी दावत करना। आज रात को मैं ईश्वर तथा उसकी माता की नियाज़ करूँगा। मेरे अन्य पाँच मित्र वहाँ प्रतीक्षा कर रहे हैं!'

निकानार की हट्टी पर कुछ आदमी बैठे हुए हैं। उनमें से कई पुकार कर कहते हैं—'इन्हे रहने भी दो—फ़ाउ!'

सोनेवालों में से एक सचेत होकर पूछता है, 'अरे भाई क्या है?'

नितम्बों पर दोनों हाथ रखकर फ़ाऊ ऊपर-नीचे सिर हिलाकर कहता है—

'तुम सचमुच कुत्ते के पिल्ले हो। क्या तुम्हें सुनाई नहीं देता कि मैं तुम्हारी दावत कर रहा हूँ? जब कोई न्यौता दे तो फिर पूछना क्या!'

'ये दोनों भूखे हैं, क्योंकि ये उठकर फ़ाउ के पीछे हो लेते हैं।' मैं फ़ाउ के कंधे पर हाथ मारता हूँ और जैसी ही वह पेटी पर हाथ रखकर घूमता है, मैं कहता हूँ—

'क्यों भई, और हम? क्या हमारी दावत नहीं करोगे?'

वह उत्तर देता है कि उसे इस तरह का मज़ाक़ अच्छा नहीं मालूम होता। मैं आँख मारकर कहता हूँ—'तुम भी मेरी तरह हो। जेब हर समय गरम रहती है।'

'हाँ, जब काम मिलता रहता है।'

'हाँ, हाँ, जब काम होता है न?'

वह रिवालवर के घोड़े पर से उँगली हटाकर मेरे भ्रूकटाक्ष का आँख मारकर उत्तर देता है। मैं उसको धक्का देकर अंदर जाता हूँ। वह नशे में है—हुआ करे, इससे मुझे मतलब?

भोजनालय में इस समय बहुत कम आदमी हैं। जितने कम उतना ही अच्छा। जनाज़ों और जलूसों के साथ ही बड़ी-बड़ी भीड़ें भली मालूम होती हैं। सैलैंट और एसक्यूडर जो आज बार्सिलोना से आये हैं, एक मेज़ पर बैठे हुए हैं और सामर दूसरी पर। यह लोग परस्पर अपरिचित हैं। होटल का अध्यक्ष निकानॉर कुछ ही वर्ष पहले एक कुशल लड़ाका था, किन्तु जब से उसने एक मिस्त्री की पुत्री से विवाह कर लिया है सभी बातों को तिलाञ्जलि-सी दे दी है। फिर भी वह हमें भूला नहीं है। किसी-न-किसी रूप में बराबर हमारी सहायता करता रहता है। हमारे सम्बन्ध में उसकी एक निजी धारणा है। वह कहता है कि आजकल हमारा हाल उन प्रथम ईसाइयों जैसा है जिनको

रोमन अत्याचारी ज़मीन के नीचे गाड़ दिया करते थे। हम सर्वत्र परस्पर मिलते रहते हैं किन्तु पदाधिकारी सर्वत्र हमारे विरुद्ध हैं। उसके विचार में दो तीन शताब्दियों तक यही हाल रहेगा। आरम्भ में हमारी बड़ी दुर्दशा होगी; किन्तु प्रायः पाँच सौ वर्ष बाद हमारा बोलबाला होगा। कल के बाद, जिस प्रकार गूढ़ार्थ में लोग कहा करते हैं। फिर भी वह अच्छा जीव है और हमारी सहायता किया करता है। हाँ, कुछ सनकी अवश्य है, जैसा कि पहले से ही विदित हो गया होगा।

बार्सिलोना से आये हुए दोनों कामरेडों को साथ लेकर मैं सामर की मेज़ पर पहुँचता हूँ—

'आप इन लोगों से परिचित नहीं हैं। आपका शुभ नाम कामरेड सैलेंट है, आपका शुभस्थान लीरिडा के निकट है। और आप बार्सिलोना निवासी कामरेड एसक्यूडर हैं।'

ये दोनों कैटालन मंडल और सेविलयन-संस्था में एकता स्थापन करने का प्रयत्न करने की नीयत से एण्डालूशिया जा रहे हैं। एसक्यूडर नाटा है और ऐनक लगाता है। सैलेंट अधिक हृष्ट-पुष्ट है। हम लोग आपस में बातचीत करते हैं। ये दोनों भी हमारे विप्लवात्मक कार्य में योग देना चाहते हैं। मैं एसक्यूडर से यह स्वीकार करा लेता हूँ कि उसकी ऐनक उसके मार्ग में बाधक होगी। सामर कहता है कि जब यह एक नियुक्त कार्य के लिए एण्डालूशिया जा रहे हैं तो इनके लिए मैड्रिड में कोई जोखिम का काम करना अनुचित है। मैं भी इस बात का समर्थन करता हूँ।

एसक्यूडर को इस बात का बड़ा आश्चर्य है कि मैड्रिड की संस्था इस इतने बड़े षड्यन्त्र को कार्य रूप में परिणत कर सकी है और कहता है कि कैटेलोनिया में इस पर कोई कठिनता से विश्वास करेगा। साथ चलने को मना कर देने के कारण सैलेंट रुष्ट हो गया है। और यह है भी ठीक। इस प्रकार अकस्मात् तथा अप्रत्याशित रूप से

क्रान्ति में सक्रिय भाग लेने के अवसर मनुष्य को रोज़-रोज़ नहीं मिला करते। इतने में तीन कामरेड और आते हैं। मेहमानों को मिलाकर हम अब सात हो जाते हैं। सामर के अतिरिक्त हममें से कोई शराब नहीं पीता। सामर के सामने बराण्डी का एक गिलास रक्खा है। यह बात भी उसकी इन बातों में से एक है जिनके द्वारा वह अपने आपको औरों से विभिन्न बनाये रखने का प्रयत्न किया करता है। हमारे केन्द्र की कार्यक्षमता पर कैटेलोनिया निवासियों को बड़ा आश्चर्य होता है। हमारे पीछे आनेवाले कामरेड, जुआँन सेगोविया, फ़ेलाइप रिकार्ट, और ग्रेको अपने साथ नवीन समाचार भी लाये हैं। वे हमें बतलाते हैं कि नवीन तथा प्राचीन कैस्टाइल की सभी संस्थाएँ आम हड़ताल में सम्मिलित हो गई हैं। जब हम यह कहते हैं कि हम तो सभी कुछ कर डालने और सहने को कटिबद्ध हैं और कैटेलोनिया और एण्डालूशिया भी हमारा साथ देने के लिए विवश हो जायँगी, तो हमारे मेहमानों के मुख गम्भीर हो जाते हैं, किन्तु वे अपने मन का भाव छिपा नहीं सकते। अब हम विघ्नात्मक कार्य-क्रम का सविस्तार प्रबन्ध करते हैं। सामर की बनाई हुई चित्र-योजना के अनुसार हमारा कार्य दक्षिण-पूर्वी तारों को नष्ट करना है। अर्धरात्रि के समय दो और कामरेड हमारे साथ होंगे। वे हमारे ही जत्थे के हैं। उन्हें आधे घण्टे के भीतर यह पता लगा लेना है कि आया किप्रियानों को उतना लम्बा ताँबे का तार जितने की हमें आवश्यकता होगी, मिल सका है या नहीं। हमारे वार्सिलोना निवासी मित्र हमारे प्रबन्ध को पूर्णतः न जानने के कारण प्रायः मौन हैं। हमारे दल के अन्य सदस्यों की भी यही दशा है। यह क्यों? चूँकि उनके लिये इतना भर जान लेना ही यथेष्ट है कि उन्हें किस क्षण क्या करना होगा। हम बूर्ज़्वा लोगों को 'युद्धावस्था' की घोषणा करने को बाध्य कर देना चाहते हैं। हमारी संस्था की सम्पूर्ण शक्ति को बाहर मैदान में आ जाने का यह संकेत

होगा। सामर मुझसे कई प्रश्न करता है जिनका मैं यह उत्तर देता हूँ—

'यदि तुम आज रात सभा में सम्मिलित हुए होते तो तुम्हें इन सब बातों का ज्ञान हो जाता। यह पूछी जानेवाली बातें नहीं हैं। जो जानता है वह जानता है, जो नहीं जानता उसको बताई नहीं जा सकतीं।' परन्तु उसकी कई बातों से ऐसा प्रतीत होता है कि वह अनुमान से यह बातें जान गया है। कैटेलोनिया निवासियों के एक अप्रत्याशित प्रश्न से भी मुझे ऐसा जान पड़ता है कि उन्हें भी बहुत-सी बातों का ज्ञान है, परन्तु इस खयाल से कि शायद मैं उन्हें न जानता होऊँ वे उन्हें छिपाये हुए हैं। परन्तु इससे क्या? मुख्य बात तो यह है कि हम सब अपना-अपना कार्य करें। सामर विचारमग्न है। वह रुक-रुककर प्रश्नों का उत्तर देता है। उसकी दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता है मानो वह अब जागनेवाला है। हठात् वह प्रश्न करता है—

'उस एजेन्ट को किसने मारा? और कहाँ?'

'उस व्यक्ति और स्थान के नाम से मतलब! तुम्हारे प्रश्नों से यह स्पष्ट जान पड़ता है कि तुम एक पत्रकार हो। तुम सभी बातें जानना चाहते हो। लो यह तुम्हारी चित्र-योजना है हमें इसी के अनुसार काम करना है।'

अब मैं इन लोगों को यह दिखलाता हूँ कि विद्युत् परिवर्तन-यंत्र में कौन-कौन से तार बाहर आते और अन्दर जाते हैं। सामर चिन्तामग्न हैं। चूँकि मुख आत्मा का दर्पण है, मैं कह सकता हूँ कि सामर इस समय यह सोच रहा है कि मेरी भूल के कारण एक पुलिसवाले की हत्या हुई है और यह कि वह भी हमारी ही तरह एक मनुष्य ही था। हम सब के विचार एक-से नहीं हो सकते। मेरे विचार में तो वह मनुष्य था ही नहीं। वह तो अन्याय का एक यंत्रवत् साधन मात्र था। इस संकटावस्था में भावुक बगुला-भगत बनना हमें कैसा शोभा देता है!

हम चित्र-योजना का अध्ययन किये जा रहे हैं। होटल का मालिक इधर-उधर घूम रहा है। सामर लिफ़ाफ़े पर आँख गड़ाये हुए है और जब पता लिखी हुई तरफ़ सामने आती है वह उसे काट कर अपनी जेब में रख लेता है। वह कहता है कि नाम से पुलिस सुराग़ लगा सकती है। परन्तु उसका रंग पीला पड़ जाता है और अपनी उद्विग्नता छिपाने के लिए वह सिगरेट पीने लग जाता है।

उसी क्षण फ़ाऊ आ पहुँचता है। उसके पीछे-पीछे कितने ही भिखमंगे हैं। उनमें एक बेकार मज़दूर भी है। ये लोग ऐसे प्रतीत होते हैं मानो गंदी नाली का फेन उसके पीछे छिटकता हुआ चला आ रहा हो। उनके चिथड़ों और चोरों जैसी कातर दृष्टि में दारिद्र्य और मृत्यु खेल रहे हैं। निकानॉर इनको दृष्टि गड़ा कर देखता है। फ़ाऊ उनकी ओर इशारा करके कहता है—

'मैं इनको लाया हूँ। इनके खाने-पीने के दाम मैं दूँगा।'

वह काउंटर की ओर घूर कर देखता है। फिर सहसा अपने साथियों की ओर घूम कर कहता है—'क़सम ख़ुदाकी, तुम यह क्या कर रहे हो? अरे भाई बैठ क्यों नहीं जाते!'

तदनन्तर वह सुअर के गोश्त की मसालेदार टिकियाँ, रोटियाँ और शराब मँगवाता है। वह बराबर बोलता रहता है। यह फ़ाऊ भी एक अद्भुत व्यक्ति है।

'क्या तुम काम कर रहे हो?'

'मरियम की क़सम, मैं काम करता हूँ। क्या तुम्हीं लोगों ने मुझे काम नहीं दिया है?'

निकानॉर अत्यन्त शिष्टता के साथ उन्हें भोजन कराता है, मानो निकानॉर सचमुच कोई सज्जन हो। यद्यपि निकानॉर उसके साथ बेतकल्लुफ़ी से बातचीत कर रहा है तो भी निकानॉर केवल 'हाँ', 'ना'

ही में उत्तर देता है। अन्य लोग या तो ऊँघ रहे हैं या भोजन आने की प्रतीक्षा में व्यग्र हो रहे हैं।

'या मसीह! क्या तुम मुस्करा भी नहीं सकते? क्या यह कोई जनाज़ा है। और जनाब आली आप उस आदमी की जेब में से अपना हाथ निकाल लीजिये। मैं तुम सबकी हरकतें देख रहा हूँ। हम सब यहाँ ईमानदार हैं।'

'जो इसका है वह मेरा है,' उस आदमी ने उत्तर दिया, 'और जो मेरा है वह इसका है।'

'यह कुछ नहीं—मैं यह बात नहीं मानता। जो कोई मेरा नियम भंग करेगा मैं उसकी थूतड़ी तोड़ दूँगा।'

सब बातें निश्चित हो जाने पर मैंने अपने रिवालवर के लिए ६ नम्बर के दो कारतूस माँगते हुए कहा कि दोनों छूटे हुए कारतूसों का उत्तम प्रयोग किया गया था। पत्रकार को यह बात स्मरण है कि उस पुलिसमैन की मृत्यु दो कारतूसों से हुई थी। वह जेब में हाथ डालकर काग़ज़ को तोड़-मरोड़ देता है।

फ़ाऊ ने खाना खिलाने के पश्चात् थोड़ा-थोड़ा भोजन अपने मेहमानों को साथ ले जाने के लिए भी दिया और कई बार अपने आपको माननीय घोषित करने के बाद वह दस डालर का नोट देकर वहाँ से चला गया। द्वार खोलने के पूर्व वह कुछ सकपकाया और लाल शराब की तीन बोतलें उठाते हुए उसने हाथ उठाकर कहा—'अच्छा मित्रों, विदा।'

लेकिन हम लोगों ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। भिखमंगे भी चले गये। अब वहाँ कुछ बेकार मज़दूर मेज़ पर सिर रक्खे हुए बेखबर पड़े सो रहे हैं। निकानॉर ने फ़ाऊ का नोट उठाकर एक दियासलाई जलाई और काउन्टर पर रखी हुई तश्तरी में उसको जलाकर राख कर दिया। तत्पश्चात् उसने मुझे इशारे से पास बुलाकर धीमे स्वर में कहा—

'फ़ाऊ के साथ ज़रा सावधान रहना।'

'क्यों?'

'वह गुप्तचर है।'

मैं उसकी ओर घूरकर देखता हूँ। किसी के सम्बन्ध में ऐसी बात कहना ठीक नहीं है। तश्तरी में रखी हुई नोट की राख को कुरेदते हुए निकानॉर ने कहा—

'यह पुलिस का रुपया है। उसके पीछे किसी को भेजो तो तुम्हें इस बात की सत्यता ज्ञात हो जायगी।'

फिर वह शान्त भाव से राख फेंक देता है और कुर्सी पर बैठकर 'प्रहरी' पढ़ने लग जाता है। मैं बाहर जाकर लौट आता हूँ। आज रात को फ़ाऊ की चौकसी करने के लिए दोनों बारसिलोना निवासियों और रिकार्ट को नियुक्त किया जाता है। बाक़ी हम सब लोग सशीघ्र वहाँ से बाहर आते हैं। मैं फेर के रास्ते से किप्रियानों के घर जाता हूँ। अन्य सब माँक्लोआ की ओर चले जाते हैं। सरिता के समीप, धोबीघाट नं० ६ पर, हम सबको अर्धरात्रि के समय एकत्र होना है।

मैं चाबी निकालकर मकान का गलीवाला द्वार खोलता हूँ। इमारत प्रायः देहाती नमूने की है—एक सहन बीच में है और उसके चारों ओर कमरे बने हुए हैं। चन्द्रमा चमक रहा है। फिर भी भीतर के रास्ते इतने अन्धकार-पूर्ण हैं कि मुझे उँगलियाँ दिखाई नहीं देतीं। किसी के ख़ुर्राटों और कहीं पास ही पिंजड़े में बन्द चिड़िया के स्वर के अतिरिक्त मुझे कोई आवाज़ नहीं सुन पड़ती। चिड़िया ने भी बोलने का क्या अच्छा समय निकाला है! वह अवश्य पगली है।

कभी-कभी पशु भी पागल हो जाते हैं। प्लाज़ा दि नेप्ट्यूनो में उस घोड़े का नाचना मुझे याद है। परन्तु पिंजड़े में पड़े हुए इस प्रकार रात को गाना एक ऐसी बात है जिसको मैं स्वयं कर चुका हूँ। क्योंकि रात को आवाज़ ज़्यादा दूर जाती है मानो गायक स्वतन्त्र हो।

मकान का नम्बर ३७ है। द्वार की ज़ञ्जीर ऐसे सुविधाजनक ढंग से लगाई गई है कि मुझे उसको केवल खेंचना भर होता है। जब मैं अन्दर पहुँचता हूँ तो मुझे किप्रियानो सिर्फ़ कमीज़ पहने हुए रिवालवर में तेल लगाता हुआ दृष्टिगोचर होता है। वह मुझसे धीमे स्वर में बोलने को कहता है क्योंकि उसके बीबी-बच्चे सोये हुए हैं।

'क्या तुम्हें तार मिल गया?'

वह कमीज़ उठा देता है। तार सलूके और कमीज़ के बीच में उसके शरीर के चारों ओर लिपटा हुआ है।

'तार की मोटाई ३/४ इञ्च के लगभग है। संभवतः इसके द्वारा हम डायनमो भी तोड़ सकेंगे।'

सामर ने एक बार मुझसे कहा था कि अराजकवाद भी एक धर्म है। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ मानो किप्रियानो उसका एक पादरी हो। यह तो कहने का एक ढंग मात्र है। वस्तुतः धर्म और पादरी दोनों कूड़ा-करकट तुल्य हैं।

हम अभी द्वार खोल ही रहे थे कि किप्रियानो का सबसे बड़ा लड़का साफ़-सुथरे कपड़े पहने आ मौजूद हुआ। पिता ने पुत्र से पूछा—

'तुम कहाँ से आ रहे हो?'

लड़के की उम्र ११ वर्ष की है और उसकी नाक चमकदार है।

'मुझे भी अपने साथ ले चलिये। मुझे मालूम हो गया है कि आप लोग 'कार्य' करने जा रहे हैं।' किप्रियानो अपना रिवालवर पकड़े रहा और पुत्र उस पर से अपने नेत्र नहीं हटा सका। पिता मुझे अपना सन्तोष-भाव दिखाए बिना न रह सका, परन्तु उसने पुत्र के प्रति 'ना' सूचक सिर हिला दिया। लड़का ज़िद करके कहने लगा :

'पिताजी, आइये—मैं आपकी भी कुछ सहायता कर सकूँगा। मैं सब गुप्तचरों को देखते ही पहचान सकता हूँ।' किप्रियानो कुछ आगा-पीछा करने लगा। लड़के के नेत्र उत्कंठा से चमक रहे थे।

अन्त में किप्रियानो ने गरदन पकड़कर उसको आगे ढकेलते हुए कहा—

'अच्छा, छोकरे तू भी चल। तेरा बाप तुझे यह बतलाएगा कि इन सुअर बूर्ज़्वा लोगों का सफ़ाया किस प्रकार किया जाता है।'

जिस प्रकार शिकारियों के साथ छोटा-सा कुत्ता हर्ष से उछलता-कूदता चलता है उसी प्रकार वह लड़का हमारे आगे-आगे चलने लगा। वह कभी ज्योत्स्ना में चलता और कभी अन्धकार में। विघ्नात्मक कार्य अब बच्चों का खेल हो गया। गली में पहुँचते ही हम 'कार्य' के स्थान की ओर अग्रसर हो गये। लड़का हमारे आगे-आगे सड़क को देखता-भालता जा रहा था। हमारे मोड़ पर पहुँचने से पहले वह यह देख लेता था कि रास्ता साफ़ है या नहीं। यद्यपि उसने मुँह से कुछ नहीं कहा, फिर भी किप्रियानो अपने पुत्र के कार्य से बहुत प्रसन्न था। जब इतनी कम उम्र में उसमें इतना उत्साह है तो बड़ा होकर वह क्या-क्या करेगा, यह कहा नहीं जा सकता।

धोबीघाट के रास्ते में, माँक्लोआ से आगे चलकर, कुछ शंका-सी प्रतीत हुई; किन्तु कुछ हुआ नहीं। फिर भी लड़के के कहने से, संदिग्ध मनुष्यों की टुकड़ियों से बचकर जाने के विचार से, हमने दो बार अपना मार्ग बदला। चाँदनी छिटकी हुई थी, जिससे जंगली रास्ते में हमें बड़ी सहायता मिली। दूर-दूर तक चाँदनी फैली हुई थी जिससे हमको चारों ओर की सब चीजें साफ़ देख पड़ती थीं। हम छाया में चल रहे थे, इसलिए हमें कोई देख न सकता था। यदि चाँदनी न होती तो हमें इतनी सुविधा कहाँ मिल सकती थी। जब हम नियत स्थान पर पहुँचे तो वहाँ सब आदमी मौजूद थे। कुल मिलाकर हम सात आदमी थे। किप्रियानो और सामर ने कार्य के कठिनतम भाग का भार अपने ऊपर लिया—हम पाँचों का काम उनके पीछे रहकर चौकसी करना था। मेरे साथ ये चार आदमी थे—ग्रेको जो यद्यपि

शराब कभी छूता तक नहीं है तो भी आज उन्मत्त-सा देख पड़ता था ; जुआॅन सेगोविया, १६ वर्ष का मज़बूत, सुर्ख जवान जिसकी २५ वर्ष की आयु मालूम होती थी ; सेनट्यागो जो एक बड़ा कुशल संगठन-कर्त्ता है ; और बुएनावेन्टुरा, नाटे क़द का एक विवर्ण व्यक्ति, जो गिरजाघरों के सामने धर्म विरुद्ध पुस्तकें बेचा करता है और जिसके कभी दो तीन दिन ऐसे नहीं जाते कि जब वह किसी न किसी धनी युवक से उलझ न पड़ता हो ! किप्रियानो और सामर सामान की फिर परीक्षा करते हैं । लड़का एक पहाड़ी पर खड़ा हुआ चारों ओर सावधानी से देख रहा है । यह हमारा सौभाग्य था जो हमने मिलने के लिए यह स्थान चुना, क्योंकि धोबी-घाटों पर रेशम के थान सूख रहे हैं । दूर से देखनेवाले के लिए हमें उनसे पृथक करना बहुत कठिन होगा । किप्रियानो तार की दो और गुच्छियाँ और रबड़ के सूट माँगता है । किन्तु हमारे पास रबड़ का सूट एक ही है ; हाँ रबड़ के दस्तानों के दो जोड़ हैं । सामर कहता कि एक लाख बीस हज़ार वोल्टों की विद्युत् शक्ति वाहन करनेवाले तारों को बिना दो जोड़ रबड़ के दस्ताने पहने छूना दुस्साहस मात्र है । हम अन्य सब को इस बात पर पछतावा आ रहा है कि हम ज़्यादा सामान क्यों न लेते आये । आख़िरकार यह निश्चित होता है कि किप्रियानो रबड़ का सूट और दोनो जोड़ी दस्ताने पहने, अकेला ही तारों को इधर-उधर करे और सामर केवल उसके सहायक के रूप में उसके पास रहे । किप्रियानों ने सूट और दस्ताने पहन कर तार की तीनों गुच्छियाँ अपने चारों ओर लपेट ली हैं । उसने तारों के सिरों पर दुहरा फंदा बनाया है । वह अपना रिवालवर सामर को दे देता है । परिवर्तन यंत्र, धातु के खंभों के स्थानों तथा अपने चारो ओर का पुनः निरीक्षण करने के बाद वे हम से दूर चले जाते हैं । जब वे लगभग दो सौ गज़ आगे पहुँच जाते हैं तो हम हाथों में रिवालवर लिये हुए उनके पीछे जाते हैं । संस्कार-प्रेमी किप्रियानो ने हमसे चलते समय कहा—

'यह मत भूलना कि यहाँ दो आदमी ऐसे हैं जिनके प्राणों की रक्षा तुम्हें जान पर खेलकर करनी है।'

तत्पश्चात् उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना ही, वे दोनों चले गये। वे परिवर्तन-यंत्र के नीचे पहुँचे। किसी प्रकार का आगा-पीछा किये बिना, किप्रियानो फ़ौरन धातु की सीढ़ी पर चढ़ने लगा। चारों ओर प्रश्नात्मक दृष्टि दौड़ाता हुआ, दोनों हाथों में रिवालवर लिये हुए, सामर खंभ के नीचे पहरा दे रहा था। हम लगभग १०० गज़ के अंतर पर हैं। घड़ी के पुर्जों के समान हर एक अपना कर्तव्य सुचारु रूप से पालन कर रहा है। परंतु कुछ ही क्षण पश्चात् सामर किप्रियानों से कुछ कहता है और किप्रियानो कुछ देर सोच-समझकर ऊपर चढ़ने लगता है। परिवर्तन यंत्र में तीन तार एक ओर से आकर दूसरी ओर बाहर निकल जाते हैं। जब कहीं एक लाख वोल्ट परिवर्तित होती हैं तो नगर के प्रकाश, घरेलू कामों तथा व्यापारिक आवश्यकताओं का भरना भरता है। खंभे की चोटी पर पहुँचकर किप्रियानो ने अपने टोप तथा सूट की पुनः परीक्षा की। यदि कहीं बाल बराबर भी खरोंच हुई तो वह जलकर राख हो जायगा। किन्तु वह सभी काम बुद्धिमानी से करता है। वह सशीघ्र एक मन्द तनाव के तार से अपने पास के तार का एक सिरा मिलाता है और उसका दूसरा सिरा खाली छोड़ देता है। हम सरिता के उसपार ला बाम्बिला तथा रोज़ालीज़ की रोशनी देख रहे हैं। उत्तरीय विद्युत् केन्द्र की शहद के छत्ते जैसी खिड़कियों की पक्तियाँ प्रकाश से चमचमा रही हैं। सेन्टियागो को इस कारण क्रोध चढ़ रहा है कि अभी तक कोई शत्रु ही नज़र नहीं आया है जिसपर कि वह गोली चलाता। ग्रेको हर्षावेश में कहता है—

'मैड्रिड के सभी बूर्ज्वा लोगों को, जो इस समय होटलों में रंग-रेलियाँ मना रहे हैं और यह आशा कर रहे हैं कि हम पीस डाले जाँयगे, यदि विद्युत् द्वारा मार डाला जाय तो कैसा हो! विश्वासघातियों की मोटरें

चकनाचूर कर दी जाँय। फ़्यूज़ जला दिये जाँय, विजली की अँगीठियों द्वारा उनके रेशमी चादरोंवाले बिछौनों में अदृश्य धक्के पहुँचाए जाएँ, सुगंध में बसी हुई इन कुतियों के बाल संवारने वाले चिमटों को, और जब वे संध्या का भोजन पका रही हों तब उनके स्टोवों को खूब विद्युत् निघोत किया जाय तो कैसा मज़ा आये!'

मैं आहिस्ता से उसकी कोहनी छूकर कहता हूँ।

'ग्रेको! बस, चुप हो जाओ!'

परंतु वह कहे जाता है—

'अरे यार, यह तो क्रांति है।'

क्रिप्रियानो ने एक ऊँचे तनाव के तार को एक नीचे तनाव के तार से जोड़ दिया। आधा रोज़ालीज़ और बाँम्बिला अंधकारमय हो गये। सरिता के उस पार से मुझे सौली मछलियाँ अथवा भेजा तले जाने के समान किसी चीज़ के भुनभुनाने की आवाज़-सी आती हुई प्रतीत हुई। मुझे तो धुआँ-सा निकलता हुआ भी प्रतीत हुआ। किन्तु मुझे यह निश्चित रूप से देख पड़ा कि आधा मैड्रिड अंधकार से ढका हुआ है। ग्रेको सिहर उठा और कहने लगा—

'अरबैनो, आज की रात ऐतिहासिक है। पाँच वर्ष के भीतर हम आज की तारीख को त्यौहार मनाया करेंगे। परंतु मैड्रिड को प्रकाश-शून्य करने के स्थान पर हम उस दिन ऐसी प्रकाशवृष्टि करेंगे कि वह सुवर्ण के सदृश दमक उठे। अरबैनो, बोलो यार क्या कहते हो!'

'अरे मूर्ख, चुप जा।'

दूसरा और तीसरा तार भी अब इसी प्रकार जोड़ दिया गया है जिसके परिणाम-स्वरूप सारा मैड्रिड, जहाँ तक भी हमारी दृष्टि पहुँचती है, अंधकारमय हो गया है। केवल एक मनुष्य की इच्छा का यह फल है। उत्तरीय रेलवे कम्पनी की खिड़कियाँ, लाइनें, रोज़ालीज़, मौंक्लोआ

—सभी निस्तब्धता में डूबे हुए है! मेरी बग़ल में खड़ा हुआ सेन्टियागो कह रहा है—

'मेरे प्यारे बूज़्वा लोगो, सभ्यता तथा यांत्रिक प्रगति का यह दूसरा पहलू भी तो देखो!'

किप्रियानो बड़ी तेज़ी से नीचे उतरने लगा। जब वह पृथ्वी से दस फीट रह गया तो वह एक दम नीचे कूद पड़ा और सामर के साथ हमारे पास दौड़ता हुआ चला आया। वह हर्ष से फूला नहीं समाता था।

'जो विश्वासघाती लोग मकानों या कारखानों में विजली ठीक करने जाएँगे वे स्पर्शमात्र से मर जाएँगे। सोलर के कारख़ाने के डायनमो अग्नि उगल रहे होंगे। एक लाख २० हज़ार वोल्टें मैड्रिड के इस भाग पर अग्निवर्षा के समय कार्य करेंगी।

वह छोटा लड़का यह देखकर कि सब काम हो चुका है, हमारे पास चला आता है।

हम अब कहाँ जायँ? सबसे अच्छा यही होगा कि हम अलग-अलग हो जाँय और पौ फटते ही फिर इकट्ठे हो जाँए। ग्रेको चारों ओर दृष्टिपात करता है—कारांवशेल तथा क्वाट्रो कैमिनॉस के समस्त व्यापारी क्षेत्र अन्धकार के समुद्र में डूबे हुए हैं। ग्रेको कहता है कि मेरा जी गाने को कर रहा है और इस पर मैं विनोद भाव से उस पर रिवालवर तान लेता हूँ। हठात् ग्रेको आकाश की ओर दृष्टि उठाकर चुन-चुनकर अपमानसूचक शब्दों की झड़ी लगा देता है, बूज़्वा लोगों की तरह गर्हित बातें कहता है और कटु तथा गन्दे शब्द बकता है।

'अरे तुम्हें यह क्या हो गया?'

'वह बड़ी कुतिया,' उसने चन्द्रमा को इंगित करते हुए कहा, 'यदि यह प्रकाश किये जायगी तो हमारे विघ्नकार्य से लाभ ही क्या हुआ?'

किप्रियानों हमें बताता है कि आरग्वैलीज़ को यह लाइन प्रकाश

नहीं देती है ; किन्तु फिर भी वहाँ अन्धेरा है। इससे हमें यह ज्ञात हो जाता है कि हमारे दूसरे जत्थे ने भी अपना काम पूरा कर लिया है। सामर हठ करता है कि अब हम लोगों को पृथक हो जाना चाहिये और कदापि अपने-अपने घर सोने के लिए नहीं जाना चाहिये। वह किप्रियानो को उसका रिवालवर फिर लौटा देता है। हम सब अपने-अपने रिवालवर हाथों में लिये हुए हैं। ग्रेको पीछे रह गया है। वह चन्द्रमा की ओर उँगली उठाकर बराबर गालियाँ दिये जा रहा है। वह सहसा भुजा उठाकर निशाना ताकता और गोली चलाता है। पफ़-पफ़! उसने कई गोलियाँ छोड़ीं। हम बेतहाशा भागते हैं। ग्रेको फिर भी फ़ायर किये जा रहा है। रिवालवर में भरे हुए कारतूस समाप्त हो जाने पर वह फिर कारतूस मारता है।

आकाश की रानी अपना प्रकाश मन्द करती हुई कहती है—'मेरी बड़ी आफ़त है।' ग्रेको पीछे रुक गया है। क्या वह पागल तो नहीं हो गया? वह टीले पर कूद-कूद कर गोलियाँ छोड़ रहा है।

चन्द्रमा ने कहा—'छापा मारनेवाली पुलिस क्या हुई? क्या कोई भी स्वदेश रक्षक नहीं रहा? हाय! इससे तो शाही ज़माना कहीं अच्छा था!'

जब तक कि चन्द्रमा छिप नहीं जाता ग्रेको बराबर गोलियाँ छोड़ता और उसका अपमान करता रहता है। अतः हम घोर अन्धकार में पृथक होते हैं। आध घण्टे बाद टोलिडो पुल पर मेरी सामर और ग्रेको से फिर भेंट होती है। और कहाँ गये। जहाँ जिसके सींग समाये होंगे वहीं वह छिप रहा होगा। हमारे काम का बड़ा शानदार असर हुआ है। लोग बुरी तरह भयभीत हो गये हैं। हमें इस प्रकार फूँक-फूँककर एक-एक पग रखना पड़ रहा है मानो हमारा मार्ग खाइयों तथा काँटेदार तारों से भरा हुआ युद्ध का मैदान हो। गलियाँ अवश्य सैनिकों से भरी हुई होंगी! जैसे ही हम पुल से चलने लगे किसी ने स्नेहपूर्ण स्वर में पुकारा—'सामर! सामर!'

यह आवाज़ एक युवती की थी जो विभिन्न कार्यकारिणी सिंडीकेट की सदस्या है। आज वह उस दल के साथ थी जिस पर सरकारी केन्द्रों का सम्बन्ध विच्छेद करने का भार था। उसकी उम्र बीस साल है। उसी के ऊपर सारा कुटुम्ब पालने का भार है जिसमें उसका काहिल बाप है जो कैथोलिक सम्प्रदाय का अनुयायी है और दो उसकी बहनें हैं जो उसके विचारों के लिए सदा उसको कोसती-धिक्कारती रहती हैं। हमारे साथ भेंट हो जाने से एमिलिया को बड़ी खुशी हुई है। वह हमारी ओर देखकर बड़ी सावधानी से पूछती है—

'बातचीत करने में कोई डर की बात तो नहीं है ?'

ग्रेको झल्लाकर कहता है—

'भाड़ में जाने दो डर ! क्या तुम हमसे परिचित नहीं हो ?'

वह बड़ी बहादुर और विचारों की पक्की लड़की है। वह एक नीला चोग़ा पहने है। उसने कहा :

'यद्यपि गृह-दफ़्तर और युद्ध-दफ़्तर के टेलिफ़ोन-एक्सचेञ्जों पर सख्त पहरा था फिर भी मैंने जैसे ही क्षण भर के लिए लोगों का ध्यान उधर से हटा देखा वैसे ही वहाँ चुपके से एक बम रख दिया।'

'तुमने ?'

'और किसने ? निस्सन्देह मैंने ही। और लोग तो चौकसी कर रहे थे। हमारे चले आने के पाँच मिनट बाद ही उसके फटने का धमाका सुन पड़ा।'

एमिलिया ने और भी कहा—

'टेलिफोन लाइनों के आठ हज़ार सेट बेकार हो गये हैं !'

अब वहाँ अधिक समय तक खड़ा रहना निरापद नहीं था।

ग्रेको ने एमिलिया की प्रशंसा के पुल बाँध दिये और उसका चुम्बन करते हुए प्रश्न किया कि वह कितने समय से संस्था की सदस्या थी। एमिलिया ने उत्तर दिया कि तीन मास से।

'अब तुम कहाँ जाओगी ?' मैंने पूछा ।

'सीधा घर को। उसी छोटे-से भयानक मकान में और उन्हीं उग्र घरवालों के पास ! मैं जाकर फौरन सो जाऊँगी, क्योंकि मुझे कल सवेरे जागना है ।

'कल क्या कोई सभा है ?'

'नहीं तो, किन्तु मैं पाप निवेदन करने और धर्मोपदेश सुनने गिरजाघर जाऊँगी ।'

हम लोग आश्चर्य से अवाक् रह गये ।

'पाप निवेदन करने ?'

'हाँ । उस बम के सम्बन्ध में ! फिर भी में पादरी को 'कब' और 'कहाँ' नहीं बताऊँगी। मैं उनसे यह भी कह दूँगी कि मैं प्रायश्चित्त नहीं कर रही हूँ । यदि वह मुझे यूँ ही क्षमा कर देंगे तो अच्छा ही है, अन्यथा यह उन्हीं के लिए बुरा होगा—क्योंकि मेरा अन्तः करण पूर्णतः निर्मल है ।'

ग्रेको जिस प्रकार पहले फूल उठा था, उसी तरह अब झल्ला उठा—

'अरे, तब तो तुम कट्टर बूर्ज़्वा हो। और यदि तुम्हींने वह अपूर्व कार्य किया है तो समझो एक क्षणिक उन्माद के वशीभूत होकर ।'

इस ग्रेको का स्वभाव ही कुछ ऐसा है। वह कभी किसी चीज़ को सीधी तरह देखता ही नहीं। मैं एमिलिया का पक्ष लेता हूँ। परन्तु यह बात स्पष्ट है कि वह ग्रेको से नाराज़ नहीं है ।

'और आप लोग अब कहाँ जायँगे ?' उसने पूछा ।

'हम भी सोएँगे ही, किन्तु हमें अभी यह नहीं मालूम कि कहाँ जाकर सोना मिलेगा ।'

इस भय से कि कहीं पाप निवेदन के सम्बन्ध में वह हमारी भी सब बातें पादरी से कह दे हमने एमिलिया को अपने विघ्नकार्य का हाल नहीं सुनाया। वह आज के कार्य से बहुत प्रसन्न है। वह कहती

है कि किसी भी क्षण युद्धावस्था की घोषणा की जा सकती है और दक्षिण-पूर्व में विघ्नात्मक कार्य बड़ी शानदार रीति से हुआ है। बूर्ज्वा लोगों का तो अन्तकाल ही समझो। हमारे कुछ साथी मारे ज़रूर गये हैं, जिसका उसे बड़ा शोक है, किन्तु जनाज़ों के जलूसवाले दिन हमने भी तो बूर्ज्वा लोगों को थोड़ा-सा मज़ा चखाया था। उसने हमसे फिर पूछा कि हम लोग कहाँ सोने जायँगे। जब हम कोई स्थान न बता सके तो उसने जनरल सान मार्टिन स्ट्रीट में ६ नम्बर मकान बताया जहाँ केवल मेम्बरी का कार्ड दिखाने-मात्र से वे लोग भी जिनके पास कोई भी और चीज़ नहीं अन्दर जा सकते हैं। वह एक खाते-पीते अराजकतावादी का मकान था, जिसका अपना एक छोटा-सा मकान और कई गोदाम थे। पुलिस को उस पर कभी सन्देह नहीं हुआ और वह ज़रूरतमंद कामरेडों को आश्रय देता है और धन से भी सहायता किया करता है। यद्यपि मैं भी इस कामरेड से सुपरिचित था, किन्तु मैंने उसकी बात में बाधा नहीं दी। एमिलिया ने जो कुछ भी उसकी प्रशंसा में कहा वह सचमुच उसका पात्र था।

'क्या तुमने यही पता अन्य लोगों को भी बतलाया है?' मैंने पूछा।

'नहीं।'

'अच्छा, तब हम वहीं जाते हैं।'

हम द्रुतगति से चल पड़ते हैं। ग्रेको इस युवती से बहुत नाराज़ है जो रात्रि को शत्रुदल में बम रखकर प्रातःकाल पादरी से सारा कच्चा चिट्ठा सुनाने और प्रार्थना में सम्मिलित होने के लिए व्यग्र-सी देख पड़ती है। वह उसका चुम्बन लेने पर पछता रहा है। ऐसी स्त्री के लिए, 'वह कहता है,' हमारी सिंडीकेटों में भी कल बम रख देना कोई बड़ी बात नहीं है।' सामर ठहाका मारकर कहता है—

'परन्तु इस पर पादरी साहब कैसा कुछ मुँह बनायेंगे!'

मुझे भी धर्मपरायणा एमिलिया से मिलकर बड़ा हर्ष हो रहा है। मुझे यह बात जानने से प्रसन्नता हो रही है कि वे लोग जो बूर्ज्वा अंधविश्वासों के गुलाम हैं—वे भी हमारे साथ सम्मिलित होने को विवश हो रहे हैं। सामर के हँसने का कारण इससे एकदम विभिन्न है। वह इस विचित्र भाव की परिहासशीलता ही पर लट्टू हो रहा है। जनरल सान मार्टिन स्ट्रीट निकट नहीं थी और न ऐसी बहुत ज़्यादा दूर ही थी। एमिलिया ने हमें पहले ही सचेत कर दिया था कि मार्ग में दो टेलीफ़ोन स्टेशन हैं जहाँ अवश्य कड़ा पहरा होगा। अतः हम पूर्णतः सावधान थे। ग्रेको का मिज़ाज भी अब ठीक हो गया है। हम जितना आगे बढ़ते हैं अन्धकार उतना ही गहन होता जा रहा है। चंद्रमा बिलकुल छिप गया है। ग्रेको की विनोदोक्तियाँ यद्यपि अश्लील तथा अधिक रुचिकर नहीं हैं, तो भी वह अपना स्वर ऐसा हास्यजनक बना लेता है कि हम लोग हँसी के मारे गिरते-गिरते बच जाते हैं। पुलिया के निकट पहुँचने पर हमें गोलियाँ छूटने की आवाज़ सुनाई देती है। सामर बड़े ध्यान से कान लगाकर वह आवाज़ सुनता है।

'यह राइफ़िलों की आवाज़ है। ऊपर, वे लोग निस्संदेह काफ़ी संख्या में मौजूद हैं।'

ग्रेको मसखरेपन में मस्त होकर कहता है—

'ये बूर्ज्वा लोग सदा ऐसे भयभीत क्यों रहा करते हैं? उन्हें किसका डर है? इसका तो कोई वास्तविक कारण मालूम नहीं होता!'

वह अत्यन्त भीरु स्वर में यह शब्द कहता है, जिस पर हम बेतहाशा हँस पड़ते हैं। मैं सबको चुप कर देता हूँ। अब हम जनरल सान मार्टिन स्ट्रीट के मुहाने पर हैं। ग्रेको शपथ खाकर कहता है कि उसे यह मालूम ही न था कि सान मार्टिन जनरल था। हमारे पीछे घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई देता है। हम एक बग़ल खड़े हो जाते हैं। सब मामला स्पष्ट हो जाता है। सारी फ़ौज को फ़ौजी अहकाम देकर

गलियों में तैनात कर दिया गया है। हम दो ही साँसों में गली के अंदर पहुँचकर ठहर जाते हैं। मकानों के नम्बर दिखाई नहीं देते। अब इसके सिवाय कोई चारा ही नहीं कि सामर पीछे लौटे और दीवार से चिपट कर मकानों की गणना करे। परन्तु इसमें यह दिक्कत होती है कि दो द्वार सटे हुए हैं! हमें यह किस प्रकार पता चले कि यह दोनों ही एक मकान के दरवाज़े हैं या दो मकानों के। मेरे विचार में इनमें से एक ६ नम्बर का मकान है और सामर कहता है कि वह अगला मकान है। अब ग्रेको एक युक्ति बताता है। मैं दरवाज़े से लगकर खड़ा हो जाऊँ और वह मेरे कन्धों पर खड़ा होकर दियासलाई जलाकर नम्बर देखे। यदि उसे ऊपर से अंक न दिखेगा तो कम से कम नीचे खड़े हुए सामर को अवश्य दीख जायगा। इसके अतिरिक्त कुछ और हो ही नहीं सकता। इसको मान लेने के बाद, शिष्ट विनोदोक्तियों तथा दबी हुई हँसी के मध्य, मैं ग्रेको को अपने ऊपर चढ़ाता हूँ। उसकी पिंडलियों की मांसरहित हड्डियाँ मेरी पीठ में चुभती हैं। किंतु किसी तरह वह मेरे कंधों पर जा खड़ा होता है। दीवार से चिमटकर वह दियासलाई का बक्स निकालता है। उसमें से एक सलाई निकाल कर जलाता है। सलाई अभी अच्छी तरह जल भी नहीं पाती है कि मासर राइफिलों की एक बाड़ प्रकाश का स्वागत करती है। कुछ चूना और दीवार का मलवा हमारे ऊपर गिरता है। दियासलाई बुझ जाती है और ग्रेको को बड़ा भारी धक्का लगता है। हमारा विचार है कि वह आहत हो गया है। परंतु बात बिलकुल उलटी है। वह बड़ी कठिनता से अपनी हँसी रोक रहा है। सामर मंदस्वर में पुकार कर कहता है—

'यही नौ नम्बर का मकान है।'

'तुम्हें इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है?'

'नहीं। यदि अब भी विश्वास न होता हो तो फिर चढ़कर संदेह निवारण क्यों नहीं कर लेते?'

ग्रेको उत्तर देता है कि उसको ऐसी आवश्यकता नहीं है और हम सब अभी हँस ही रहे हैं कि द्वार खुलता है और कोई पूछता है—'क्या मामला है ?' कार्ड दिखाते ही हम अंदर चले जाते हैं। हम सब बातें बताना चाहते हैं किंतु वहाँ इसकी कोई आवश्यकता ही नहीं समझी जाती। हमको सीधे एक कमरे में ले जाया जाता है जहाँ तीन चटाइयाँ बिछी हुई हैं। यहाँ एक मोमबत्ती जलाकर रख दी जाती है। जब हम फिर अकेले रह जाते हैं तो सामर विनोदपूर्ण भाव से विघ्नकार्य की आलोचना करता हुआ कहता है—'हम लोग भी निपट मूर्ख हैं जो अपने नेकरों के लिए कहीं से वस्त्राधान भी नहीं ले आये !' हम सब खिलखिला उठते हैं। यह हमारे लिए स्वाभाविक ही है, क्योंकि हम सब कुछ उत्तेजित-से हैं। फिर हम मोमबत्ती बुझाकर इस विषय पर कि कल प्रातःकाल उठकर हमें क्या करना है, गंभीरता के साथ थोड़ी-सी बातचीत करते हैं। हम सब धीमे स्वर में यही एक सरल प्रश्न कर रहे हैं :

'हमारे संघर्ष का क्या उद्देश्य है ? हमारा अंतिम लक्ष्य क्या है ?'

ग्रेको कहता है—'हमारा ध्येय है पूँजीवादी आधिपत्य का सर्वनाश !'

'बूर्ज्वा भाव तथा पूँजीवादी सिद्धांत का मूलोच्छेद !' सामर उत्तर देता है। और मैं कहता हूँ—'पूर्ण स्वातंत्र्यवाद !'

स्पष्टतः मेरा विचार सबसे अधिक ठोस है। ग्रेको केवल पूँजीवाद का नाश चाहता है, उसे भविष्य के शासन-विधान की कोई चिंता नहीं है। शासन-प्रणालियों की अपेक्षा सामर नीति तथा तर्क शास्त्रों में कहीं ज़्यादा दिलचस्पी रखता है। किंतु हम सभी क्रान्ति के हामी हैं।

———

तीसरा रविवार

प्रतिघात

एक मुख़बिर मुसीबत में

फ़ाऊ ने वह रात क्वाट्रो कैमिनॉस में गुज़ारी और सुबह को वह वहाँ से इस तरह लुकता-छिपता, राह कतराता हुआ नगर के उत्तरीय भाग में पहुँचा, मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो। उसकी चाल-ढाल से कभी तो ऐसा प्रतीत होता था मानो वह आहत है और कभी जैसे उसके पंख लगे हों। सैलेंट, रिकार्ट और एसक्यूडर ने बड़ी सफलता के साथ रातभर उसका पीछा किया था। पहली बात तो यह थी कि फ़ाऊ इतनी पिये हुए नहीं था जितना कि वह बन रहा था। ग्रैनवाया में ७२ नम्बर मकान के सामने पहुँचकर उसने चारों ओर इस प्रकार दृष्टिपात किया मानो कोई उसका पीछा कर रहा हो, अन्दर गया और थोड़ी देर में बाहर निकल आया। अब अपने आपको अकेला समझकर उसने कुछ नोट निकालकर गिने और उन्हें पतलून की जेब

में रख लिया। नोटों का बड़ा बंडल उसने फिर जाकेट की जेब में रख लिया। रिकार्ट ने उस मकान का नम्बर नोट कर लिया। वह बराबर फ़ाऊ का पीछा करते रहे। ग्रैनवाया होकर वह इंफाटीज़ में मुड़ गया। वहाँ पहुँचकर वह एक मिनट तक निश्चल खड़ा रहा। सदर कोतवाली के चारों ओर उसने बड़ी सावधानी से देखा। उसने कई दफ़ा मुड़कर चारों तरफ़ नज़र दौड़ाई। यह सचमुच बड़ी विचित्र बात हुई कि वह अपने पीछा करनेवालों को न देख सका। अब वह निर्भय भाव से अकड़ता हुआ कोतवाली के अन्दर पहुँचा।

वही सीधा सूचना-विभाग में गया, जहाँ एक वयोवृद्ध व्यक्ति ने, जिसकी मुखाकृति विकट थी और कनपटियाँ धसी हुई थीं, उदासीन भाव से उसकी ओर दृष्टि उठाकर पूछा—'कोई नई बात ?'

फ़ाऊ दृढ़ एवं विश्वस्त भाव से बैठ गया। इसलिए नहीं कि लाल फ़ीते से बँधी हुई फ़ाइलों के मध्य में उसे घर जैसा सुख तथा संतोष प्राप्त होता था और न इस वजह से कि उसको पुलिस के साथ कोई सहानुभूति थी। वह तो स्वभावतः पुलिस को नीचा समझता और सदैव उससे भयभीत रहा करता था। परन्तु उसके इस भाव का यथार्थ कारण था उसका निकम्मापन। अपने जीवन भर में उसने शायद ही कभी बँधकर काम किया हो। वह कभी एक दिन यहाँ काम कर लेता था तो दो दिन वहाँ। ऐसा करने से उसे कभी अगले सप्ताह की रोटियों तक की ओर से निश्चिन्तता नहीं मिलती थी। उसके लिए जीवन निरानंद जुए के समान था। लड़कपन से अब तक उसे एक भी ऐसा अवसर याद नहीं पड़ता, जब उसको अपनी जेब में एक भी रुपया होने का पूर्ण विश्वास रहा हो। उसने शनिवार को कभी खज़ांची को विश्वस्त स्वर में यह कहते नहीं सुना था कि उसके पास मज़दूरी चुकाने के लिए पर्याप्त रुपया मौजूद है। ऐसी ही बातों से उसका नैतिक पतन हुआ था। उसकी एक वजह यह भी थी कि वह स्वतः कोई काम नहीं

कर सकता था। किसी न किसी को उसे यह बतलाना आवश्यक होता था कि इन पत्थरों को राजों के पास पहुँचा दो या इन तख्तों को बाड़ पर पहुँचा आओ। वह अंधा होकर काम पर निर्भर रहता था। उसे अपने ऊपर ज़रा भी भरोसा नहीं था। उसने देखा कि थाने में रुपये की रेलपेल है और वहाँ से रुपया सदैव सुगमता-पूर्वक मिल भी सकता है। यहाँ पर धनागम का आधार चञ्चल-प्रकृति व्यक्ति नहीं थे, यहाँ तो अव्यक्तिगत, ठोस, सरकारी मालगुज़ारी के रुपये से सारा कार्य सुचारु-रूप से चलता था। इस सम्बन्ध में फ़ाऊ को पुलिस विभाग पर पूर्ण विश्वास था। वह पुलिस गारद और सी० आई० डी० वालों से भय खाता था, परन्तु इस कमरे में बैठे हुए अफ़सर और उसके दो टाइपिस्टों के सम्मुख उसे कोई असुविधा नहीं प्रतीत होती थी। यह लोग सामान्य पुलिसवालों से एकदम विभिन्न मालूम होते थे। पुलिस के बाह्य कर्मचारियों का दफ़्तर इसी इमारत के दूसरे भाग में था। वह हिस्सा मारक्विस दि वैलडिगलेसियस स्ट्रीट के सामने था, जहाँ अस्त्रों का एक गोदाम और कई अन्धकार-पूर्ण हवालात-घर भी बने हुए थे। इस वयोवृद्ध मनुष्य के प्रश्न का उत्तर देने से पहले फ़ाऊ ने अपने कान का पृष्ठ भाग खुजलाया।

'कुछ भी नहीं। केवल एक ग़ैरक़ानूनी सभा हुई है।'

अफ़सर ने एक रूलदार काग़ज़ के एक तख्ते का अध्ययन करते हुए बिना सिर उठाए हुए ही पूछा :

'वहाँ कितने आदमी थे ?'

'सात या आठ होंगे।'

'तब तो वह ग़ैरक़ानूनी नहीं थी। मैं तुम्हें कितनी बार यह बतलाऊँ कि ग़ैरक़ानूनी सभा के लिए कम-से-कम १९ मनुष्यों का होना आवश्यक है। वे लोग कौन थे ?'

'सिंडीकेट वाले।'

'विघ्न-कार्य के सम्बन्ध में कोई बात सुनी ?'

'पहले यही खयाल मेरा भी था,' फ़ाऊ ने विश्वस्त स्वर में कहा, 'परन्तु मुझे इस बात का पूर्ण विश्वास हो गया है कि वे आज रात्रि को उस ओर कुछ करनेवाले नहीं हैं।' उसने काट्रोकैमिनॉस को इंगित करके कहा। वृद्ध ने घंटी बजाई। सशीघ्र एक अरदली आया।

'इन महाशय को असिस्टेएट डायरेक्टर के पास ले जाओ।' फिर उसने फ़ाऊ से कहा—'जाइये और जो कुछ आप जानते हैं उनको बतला दीजिये।' फ़ाऊ को चौड़े और सुप्रकाशित भीतरी मार्गों से लेजाकर एक दफ्तर में पहुँचा दिया गया जहाँ कोई भी मौजूद न था। जब असिस्टेंट डायरेक्टर आया तो फ़ाऊ उसे देखकर कुछ घबड़ा-सा गया। उसकी चाल-ढाल पुलिसवालों जैसी ही थी। उसने अपनी कुर्सी के हत्थे पर बैठकर फ़ाऊ को सन्दिग्ध दृष्टि से देखा! फ़ाऊ ने वही बातें दुहरादीं और ऊपर से नमक-मिर्च लगाकर ऐसी टीका-टिप्पणी की कि वह पदाधिकारी आश्चर्य-चकित हो गया।

'यह तुमने किस प्रकार मालूम किया ?'

अब फ़ाऊ ने ऐसी मन-गढ़न्त सुनाई कि असिस्टेंट डायरेक्टर को उसका पूरा विश्वास हो गया। फ़ाऊ ने यह भी कहा :

'आप मेरा विश्वास कीजिये। आप देखेंगे कि कुछ भी नहीं होगा।' उसी क्षण सब बल्ब बुझ गये। मक्खियों के छत्ते जैसी भिन-भिनाहट का स्वर तीव्र हो उठा। अरदली लोग जेबी टॉर्चें और मोम-बत्तियाँ लेकर आये। किसी ने इसकी ओर अधिक ध्यान नहीं दिया। एक आदमी फ़्यूज़बक्स की मरम्मत करने पहुँचा और असिस्टेंट डायरेक्टर ने अपना रिवालवर जेब से निकालकर मेज़ पर रख लिया।

'और उन लोगों के सम्बन्ध में जिन्होंने हमारे जासूस की कल हत्या की थी तुम क्या जानते हो ?'

'मैं एक बात बता सकता हूँ। उसे लिख लीजिये।'

पुलिस अफ़सर ने पेंसिल उठाई और फ़ाऊ ने पाँच नाम लिखाये। इनमें से कई को पुलिस अफ़सर पहले से जानता था। फिर कुछ देर तक इन दोनों में उन पाँच आदमियों के सम्बन्ध में बातचीत होती रही।

'वस्तुस्थिति तो यह है कि वहाँ केवल दो व्यक्ति थे जिनमें से एक ने वह गोली चलाई थी।'

फ़ाऊ ने बीच में बाधा देकर कहा—

'मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि इन पाँचो का यह काम है, किन्तु मैं इस बात पर अपने क़मीज़ की शर्त लगा सकता हूँ कि वह दोनों इन्हीं पाँच में से थे।

यह पाँच नाम थे लिबर्टो अेशिया रुइज़, इलेनियो मार्ग्राफ़, जोसी क्राउज़ेल, हेलियाँस पीरेज़ और मिगुएल पैतेशियाँस। इनमें से प्रथम दो और अन्तिम नामधारी विख्यात संगठनकर्त्ता तथा प्रचारक थे। फ़ाऊ यह बात जानता था कि असिस्टेंट डायरेक्टर व्यक्तिगत रूप से इनके साथ द्वेष रखता है। वह स्वयं भी उनके विरुद्ध था, क्योंकि संगठन सम्बन्धी समस्याओं को हल करने में उनकी कुशलता, उनके निर्णय के संतुलन तथा उनकी वाक्य-सुस्पष्टता ने उसको जब वह 'कर्मशील' होने का ढोंग रचे हुए था कई बार नीचा दिखाया था! यदि किसी बूर्ज्वा में, उससे ऊँची सामाजिक श्रेणी के किसी व्यक्ति में ऐसे असाधारण गुण होते तो वह सवरण कर सकता था; किंतु एक कामरेड में जो मित्रभाव से उसके कंधे पर हाथ रख सकता था वह ऐसे गुणों का होना सहन नहीं कर सका। अतः यह नाम एक काग़ज़ पर लिख लिये गये। असिस्टेंट डायरेक्टर ने घंटी बजाकर एक अरदली को काग़ज़ का यह पर्चा देकर कहा—'यदि इनका कोई रेकार्ड हो तो ले आओ।'

फ़ाऊ ने टाँग अड़ाते हुए कहा—

'आपके यहाँ तो वे अवश्य होंगे।'

उसी क्षण पुलिस विभाग का अध्यक्ष, डायरेक्टर जनरल और दो इंस्पेक्टर अंदर आये। उनके स्वर उत्तेजनापूर्ण थे। डायरेक्टर ने प्रमुख पदाधिकारियों, निरीक्षकों तथा अन्य सभी से जवाब तलब किये। फ़ाऊ उठकर अलग खड़ा हो गया। वास्तव में जो घटना घटित हुई थी फ़ाऊ उसको सोच भी न सकता था। यद्यपि डायरेक्टर ने राजद्रोह, अन्धकार और कितनी ही अन्य विस्तारात्मक बातें—अल्पपरिधि, अग्नि-काण्ड, यहाँ तक कि बिजली द्वारा प्राणांत का भी नाम लिया—तो भी फ़ाऊ रत्ती भर न समझा। हाथ-पैर फ़ेंकता, चिल्लाता और अपने अधीन कर्मचारियों को धमकियाँ देता हुआ डायरेक्टर जनरल मंत्री से भेंट करने चल खड़ा हुआ। उसके जाने के बाद असिस्टेंट डायरेक्टर झट-पट इस्पेक्टरों के साथ फ़ाऊ के सम्मुख आ डटा। अब फ़ाऊ समझा कि विघ्नात्मक घटना घटित हो चुकी है। वे अपना सब काम कर चुके और उसको इसका ज़रा भी पता न लगा। असिस्टेंट डायरेक्टर और इंसपेक्टर एक दूसरे की ओर चुप-चाप देखते रहे। फिर उनमें से एक ने फ़ाऊ से कहा—

'हाँ, तो फिर वहाँ विघ्नात्मक कार्य की चर्चा तक नहीं हुई?'

वह बिज्जू सदृश दाँत चमकाकर मुस्करा दिया। फ़ाऊ के विचार में इस व्यक्ति में असिस्टेंट डायरेक्टर की अपेक्षा अधिक पुलिसवाली भयानकता थी। फ़ाऊ ने स्वयं भी हँसने का प्रयत्न किया और कन्धे उचकाये, किंतु इंस्पेक्टर ने उसको आगे-आगे चलने का हुक्म दिया। जब पुलिसवाले किसी को इस प्रकार चलने का हुक्म देते हैं तो वे उसको अपराधी समझते हैं। इससे पहले, फ़ाऊ को पीछे-पीछे आने को कहा जाया करता था। बरामदे में, बिना रुके ही, इंस्पेक्टरने प्रश्न किया—

'तो सिंडीकेट तुम्हारा विश्वास नहीं करतीं?'

'ज़्यादा नहीं। परन्तु जो कुछ बन पड़ता है मैं करता हूँ।'

बरामदे के खरंजे पर उनके पैरों की चाप प्रतिध्वनित हो रही थी। सहसा उसको एक द्वार के सामने खड़े रहने का हुक्म देकर इंस्पेक्टर स्वयं उसके अन्दर चला गया। थोड़ी देर में चौड़ी बाड़ का टोप पहने हुए एक मोटा आदमी अन्दर से आया। उसके मुँह में बेजला सिगार था। वह इसी तरह कोट के कालर पर उंगली रक्खे हुए, खड़ा-खड़ा फ़्राऊ को घूर कर देखता रहा।

'इस ओर।'

उसने एक मार्ग की ओर उँगली उठाकर कहा। रास्ते में उनको एक पुलिसवाला मिला जिसको कुछ लोग स्ट्रेचर पर ले जा रहे थे। फ़्यूज़ों को बदलने के प्रयत्न में उसे बिजली का धक्का लगा था और कहीं-कहीं से उसकी बाँह जल गई थी। अपनी पीठपर स्थूल व्यक्ति की कड़ी दृष्टि का खयाल करते हुए फ़्राऊ ने मन-ही-मन कहा--

'यह आदमी सबसे अधिक भयानक पुलिसवाला है!'

अब वह एक प्रकार के उपगृह में पहुँचे जहाँ पंद्रह-बीस गिरफ़्तार किये हुए आदमी खड़े थे। दृष्टि पड़ते ही फ़्राऊ ने उनमें से तीन चार को फ़ौरन पहचान लिया। वह स्वभावतः रुक गया और पीछे लौट जाने की चेष्टा करने लगा। यह सिंडीकेटवाले थे। उनमें एक बड़ा साम्यवादी भी था। वहाँ मिगुएल पैलेशियाँस भी था जिसका नाम उसने असिस्टेंट डायरेक्टर को गुप्तचर की हत्या के संबंध में लिखाया था। उसने उसकी क्षीण मुखाकृति और मुशकें बँधी हुई देखीं। वह पीछे हटा और पुलिसवाले से टकरा गया। प्रकाश मंद और पीला था मानो छओं मोमबत्तियों के पीछे नीबू लटक रहे हों। पिंजड़ों में बंद प्राणियों के समान ये क़ैदी क्लांत तथा उद्विग्न देख पड़ते थे। पुलिसवाले ने सिर उठाया और फ़्राऊ की ओर घूर कर देखा। तत्पश्चात् उसने फ़्राऊ को हल्का-सा धक्का दिया और वे दोनों उपगृह के पार चले गये। दूसरे

सिरे पर पहुँचकर फ़ाऊ ने विरोधात्मक स्वर में कहा—

'आप मुझे यहाँ क्यों लाये ? ये लोग मुझे जानते हैं और अब मैं कुछ भी नहीं कर सकूँगा। वे मेरा विश्वास नहीं करेंगे।'

'यह क्यों ?'

'उन्होंने मुझे आपके साथ देखा है।'

पुलिसवाला सिगार चबाते हुए हँस दिया।

'मूर्ख ! उन्हें यह क्या मालूम कि तुम मुखबिर हो या क़ैदी ?' वह हँसता और सिगार चबाता रहा। फिर उसने दो पुलिसवालों को बुलाया। फ़ाऊ के उभरे हुए सीने, गंभीर मुखाकृति तथा खिन्नभाव का विचार करते हुए उसने स्पष्टीकरण की आवश्यकता समझकर फ़ाऊ से कहा—

'तुम्हीं ने तो कहा था न कि सिंडीकेटवाले अब तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे ? हम अब ऐसा काम करेंगे कि वे तुम्हारा फिर विश्वास करने लग जाँए।'

गार्ड लोग बेंत ले आये। एजेंट ने फ़ाऊ की जामातलाशी ली, उसका रिवालवर लेकर, हाथों में हथकड़ियाँ पहना दीं। पहला बेत मारकर उसने कहा—

'तुम बहुत नहीं चीख सकते। इसमें तुम्हारा ही भला है। हम तुम्हें बहुत बड़ा मौक़ा दे रहे हैं। कल रात की तुम्हारी लापरवाही और असिस्टेंट डायरेक्टर के साथ गुस्ताखी के साथ पेश आने की यह सज़ा है। इसके साथ-साथ सिंडीकेटवाले भी तुम्हारा फिर एतबार करने लगेंगें, क्योंकि उनमें से जो कोई भी। तुम्हारी चीख सुनेगा यही समझेगा कि तुम भी उसी नेक काम का खमियाज़ा उठा रहे हो।'

पुलिसवालों ने दो तीन बेत मारकर साहब के मज़ाक की दाद दी। बिना चीखे हुए फ़ाऊ ने उनको सहन कर लिया। यह देखकर एक भारी जबड़ेवाले व्यक्ति ने उसकी नाक पर पेटी का बकलस रसीद

किया। अब फ़ाऊ तड़फड़ाकर चीख़ उठा। सारजन्ट ने साँत्वना देते हुए कहा—

'फाऊ हम तुम्हें आदमी बना रहे हैं। इतने ज़्यादा मत घबड़ाओ।'

छड़ों और कोड़ों के सर्राटों की हवा से मोमबत्तियाँ टिमटिमाने लगीं। नक़शों तथा विभिन्न सूचनात्मक अंकों से भरे हुए काग़ज़ों से ढकी हुई दीवारों पर साये नाचने लगे। सारजंट ने विषमहास्य से पूछा—

'फाऊ, वहाँ विघ्नकार्य का ज़िक्र था या नहीं। बता तो, सुअर के बच्चे, तू अब क्या कहता है?'

फाऊ तड़फड़ाया और काँप उठा। पुलिसवाले दिल खोलकर मार लगाते रहे। परन्तु एक मारनेवाले को, जो पसीने से तर और क्रोध से लाल हो रहा था और सारा ज़ोर लगाकर बेत मार रहा था, इस भय से कि कहीं अपराधी मर न जाय—जैसा कि ज़्यादा देर तक मारते रहने से बहुधा हो जाया करता है—वहाँ से हटा दिया गया। परन्तु अन्य लोग, अपेक्षाकृत शान्तभाव से, फ़ाऊ को मारते रहे। फ़ाऊ चीख़-चीख़कर दया-याचना कर रहा था। किन्तु उसने उन लोगों के प्रति कोई अपशब्द नहीं कहा। ये लोग तो अपना कर्तव्य-पालन कर रहे थे। मनुष्यों को मार लगाना इनका आये दिन का काम था। वह चीख़ता और नाक से सूँ-सूँकर रहा था। उसकी गरदन और कन्धों पर सड़ा-सड़ चोटें पड़ रही थीं। उसके शरीर पर छड़ों की आवाज़ ऐसी हो रही थी मानो तमंचे छूट रहे हों और हवा में ऐसा शब्द हो रहा था मानो सीटी बज रही हो। १५ मिनट तक मार जारी रही। जब आँखों पर छड़ पड़ने से फ़ाऊ लड़खड़ाकर ज़मीन पर गिर पड़ा तो मार बन्द हो गई। उसने अपनी आँखों पर हाथ फेरा तो बेहद सुजा हुआ और लाल था। पुलिस ने उसकी हथकड़ियाँ खोल दीं और उसे एक कोठरी में ले गये जहाँ उसके सिर पर दो बाल्टी पानी

डाला गया। तत्पश्चात् सारजण्ट ने उसको बाहर निकालते हुए कहा—

'देखो, अब अच्छी तरह काम करना।'

'बहुत अच्छा, हुज़ूर।'

वह जाने लगा तो पुलिसवाले ने फिर बुलाकर कहा—

'मेरा ख़याल है कि तुम फिर हमसे यह झूठी शिकायत नहीं करोगे कि वे लोग तुम्हारा एतबार नहीं करते।'

'नहीं, हुज़ूर।'

ज्योंही फ़ाऊ मोड़ के उस ओर पहुँचा, वह अपनी चोटें देखने लगा। उसकी कमर पर चार या पाँच नीले दाग़ पड़ गये थे। उनमें एक से लहू बह रहा था। उसके ललाट पर एक ओर बहुत बड़ा गूमड़ा उठ आया था मानों उसके सींग निकल रहा हो। उसने ठहरकर दाँई पिंडली के ऊपर पाजामा चढ़ा लिया। उसने अपनी जेबें टटोलीं। उसको रिवालवर वापस दे दिया गया था। उसका रुपया पैसा जैसा का तैसा सब मौजूद था। सूजे हुए मुख से वह भरसक मुस्कराया और अत्यन्त संतोष के साथ हुँकार मारकर वह यह कहता हुआ फिर चल पड़ा—

'ख़ैर, इतने बुरे नहीं रहे।'

साईबेलीज़ पहुँचकर वह फ़व्वारे के पास गया। अब अच्छी तरह दिन निकल आया था। उसने जल में अपना प्रतिबिंब देखा। इधर-उधर ख़ूब सिर हिला-डुलाकर अपने बिगड़े हुए चेहरे का निरीक्षण किया। खड़ा होकर फिर वह इतने ज़ोर से हँसा कि आस-पास बैठे हुए कबूतर चौंककर उड़ गये। उसके हाथ सूजन से फटे-से पड़ते थे। अतः वह पतलून को कलाइयों से कमर पर रोककर प्रेडो की ओर चल खड़ा हुआ। आकाश स्वच्छ था। प्रातःकाल की संजीवनी समीर बह रही थी। उसकी जेबों में रुपया था और वह आजाद था। अतः उसने हँसकर कहा—'अरे, यह कुछ भी नहीं है। सीख के कबाब खाते ही मैं बिलकुल चंगा हो जाऊँगा!'

वह अटोचा की ओर कबाब खाने के संकल्प से चल पड़ा। परन्तु जैसे ही वह गली में बढ़ा जा रहा था वर्म ज़्यादा बढ़ गया और मुँह पर दाने फूट पड़े। उसने दाँत चलाए, चबाकर देखा। यह जानकर कि दाँत बिलकुल ठीक हैं, वह ख़ुशी से उछल पड़ा।

सहर्ष गुनगुनाता हुआ वह अटोचा बाग़ जा पहुँचा। किन्तु प्रभात का निर्मल, धातु सदृश नीला प्रकाश, धीरे-धीरे आता था और फ़ाऊ से अलग रहता था, मानो वह उसके स्पर्श से बचना चाहता हो। प्रभात की सुन्दर वाटिका में फ़ाऊ एक घृणित घुमक्कड़ के सदृश था। बसंतकाल के फूलों से लदे हुए उद्यान में वह मानो माघ मास के खेल की विभीषिका के रूप में आया था। उसका सारा मुख लाल और नीला हो रहा था, वह लड़खड़ाकर चल रहा था, चिथड़ों में वह नंगा दीख रहा था। दाढ़ी मूँछवाले शरीर में मानो एक स्त्री की आत्मा हो। प्रभात सङ्गीतमय तथा चाँदी के समान उज्ज्वल था। रिटायरो और वनस्पति विभाग के बाग़ों में सुन्दर फूल खिले हुए थे। सुनील नभ को देखकर फ़ाऊ को सहसा स्कूल की दीवारों पर टंगे हुए नीले नक़्शों का ध्यान हो आया। वह कुछ लँगड़ाकर चल रहा था; किंतु उसे कबाबों के हितकर गुणों पर पूरी श्रद्धा थी।

किन्तु जब उसे वह होटल बंद मिला तो बड़ी निराशा हुई। उसके खुलने के इन्तज़ार में वह बाग़ के चारों ओर टहलता रहा। मई के शुभ आलोक में वह और भी अधिक करुण तथा असंगत प्रतीत हो रहा था। पुलिस ने उसके साथ वह धर्म-क्रिया की थी जो अच्छी तरह काम न करनेवालों के साथ की जाया करती है। उसकी परिभाषा है 'कुशलता के साथ प्रश्न करना।' फ़ाऊ के पास कहने को कुछ न होने पर भी उससे बड़ी कुशलता के साथ प्रश्न किये गये थे।

वह हड़तालियों, क्रांतिकारियों तथा मज़दूरों से बहुत भिन्न था।

असली आवारागर्दों से भी वह भिन्न था। इनमें से एक का वह शत्रु था और दूसरों से वह अलहदा हो गया था। उससे छाया तक भागती थी। उसे विघ्न-कार्य के सम्बन्ध में कुछ भी न मालूम हो सका था। प्रकाश उससे दूर रहता था मानो उसके स्पर्श से वह अपने को कलुषित करना न चाहता हो। यद्यपि वह ज़ोर-ज़ोर से बोलता तथा गर्हित शब्द कहता था फिर भी वह मनुष्य नहीं था। मनुष्य अपने आप को बेचते नहीं और न वे विश्वासघात ही करते हैं। यद्यपि वह अपने आप को मिथ्या आश्वासन देने के लिए झूठ बोलता था तो भी वह स्त्रीत्व से बहुत दूर था। पुलिसवालों ने उसपर क्रांतिकारी के रूप में मार नहीं लगाई थी। मित्र के रूप में। न तो वे उसका विश्वास करते थे और न सम्मान। उन्होंने उसको एक मुखबिर की सूरत में मारा-पीटा था। वे उसपर क्रांतिकारी के रूप में भी मार लगाते—जैसा कि उसके साथ इससे पहले कर चुके थे। वह न तो पुरुष ही था और न स्त्री ही। वह तो सचमुच तमाशे का जघन्य 'मूर्खराज' था जो सुरीली आवाज़ में बोला करता है, जिसकी सफ़ेद जाकेट के नीचे बनावटी स्तन होते हैं, जिसके सिर पर पतेल के टोप पर एक रूमाल बँधा होता है और हाथ में झाड़ू होती है। वह बराबर बाग़ के चारों ओर चक्कर लगाता रहा। जब उसने होटल खुलते देखा तो झटपट उसके द्वार पर आ पहुँचा। वह होटल के मालिक से यह पूछने की आशा कर रहा था—'क्या आप मुझसे परिचित हैं ?' और तब वह (मूर्खराज के रूप में) अपना घाँघरा उठा कर उसको झेंपा देता। परन्तु उसने मेज़ पर कलाई धमक कर कबाब की आवाज़ लगाई। वेटर ने उत्तर दिया, चूँकि हड़ताल के कारण पिछले दिन जानवर नहीं काटे गये थे इसलिए कबाब बने ही नहीं। और आज भी कबाब बनने की कोई सम्भावना नहीं है।

तब वह निराश होकर वैलेकास की ओर चल पड़ा। रास्ते में वह

रिवालवर पर उंगली फेरता और हड़तालियों को गालियाँ देता जा रहा था। यह भी क्या तमाशा था कि सिंडीकेटों में संगठित मुट्ठी भर मज़दूर बूर्ज्वा बंक-नोटों से अधिक शक्ति-सम्पन्न प्रतीत हो रहे थे। जिसकी जेबें नोटों से भरी हुई हैं क्या सारी दुनिया उसकी गुलामी नहीं करती ? मार्ग में उसने दक्षिण रेलवे स्टेशन पर देखा कि आज वहाँ और दिनों से अधिक कार्य हो रहा था। गाड़ियाँ धीरे-धीरे आती थीं और बहुत-से इंजन लाइनों पर इधर-उधर आ-जा रहे थे। मज़दूरों की टुकड़ियों में जहाँ-तहाँ घोषणापत्र पढ़े जा रहे थे और वाद-विवाद चल रहा था। फ़ाऊ ने एक आँख से जो खुल सकती थी, भेंड़ा-कर देखा और सिर हिला दिया। यह सब हड़ताल के लक्षण थे। भौतिक पदार्थों की भी अपनी भाषा होती है। उस क्षण गहरी सलेट की ऊँची छतें, इंजनों के फ़नल, गंदे टेंडर तथा धूसर गाड़ी जोड़ने वाली शलाखें—सभी विराम की भविष्यवाणी कर रही थीं। परंतु इन सब के संयुक्त प्रभाव से भी अधिक जो बात फ़ाऊ को हड़ताल का पता देती थी वह था एक कोयला झोंकनेवाले का हाथ में बिल्ला लिये हुए इंजनों के मध्य में हिचकिचाते हुए इधर-उधर जाना।

वह पैसिफ़िको में आगे बढ़ता रहा। उसको ऐसा प्रतीत हुआ मानो उसके समीपवर्ती चीज़ों—मकानों, पेड़ों तथा गिरजाघर की मीनार--की शक्ति और बल के सामने उसकी अपनी नैसर्गिक शक्ति और बल क्षीण पड़ता जा रहा था। जो कुछ हुआ था उसको न जानते हुए, वह इस नगर-पुंज में अपने आप को एक अणु सदृश पाता था, जो यह विचार करते हुए कि फ़ाऊ का वज़न सिर्फ़ ग्यारह स्टोन था और उसका क़द छः फ़ीट से कम था, एक तर्क सिद्ध परिणाम था। मार-पीटने उसमें कोई व्यक्तित्व ही नहीं छोड़ा था जिसकी सहायता से उसमें और ट्राम के खंभों या वृक्षों में कोई भेद मालूम हो सकता। वह रुक गया। उसने गहरी साँसें लीं। ज्योंही वह फिर चलने को हुआ उसके

पीछे से ढोल पिटने की आवाज़ सुन पड़ी। वह खड़ा हो गया। उसने मुड़कर पूछा तो मालूम हुआ कि 'युद्धावस्था' का ढिंढोरा पीटा जा रहा था। अब तो वह साक्षात् 'मूर्खराज' प्रतीत होता था। मानो वह झाड़ू उठाये, बनावटी स्तन लगाये, कमर से घुँघुरू बाँधे हुए, कबाबों की धुन में वैलेकास की ओर भागा जा रहा था। उसकी चाल-ढाल से दृढ़ संकल्प और सुरक्षितता का भाव टपक रहा था। वह हर एक डग में खरंजे का एक पत्थर पार कर रहा था। उसको अपने समीप की चीज़ों पर विश्वास हो गया था। 'मेरे कबाबों की रक्षा के निमित्त सेना है, और पुलिस, और सिविल गार्ड, और आघात पुलिस, और सवार पलटन, लैन के सिपाही, और फिर जल-सेना। जल सेना एक विचारणीय वस्तु है।' अब उसके हृदय का स्वर वास्तविक संसार के स्वर से केवल मिला हुआ ही नहीं था—वह उससे भी आगे बढ़ा हुआ था। वह खुशी से इतना फूला हुआ था कि अपने सारे कष्ट को भूल-सा गया था—मानो उसके मार लगी ही न थी—मानो पिटनेवाले केवल वृक्ष और तार के खंभे हों। बिगुल का कर्कश स्वर और ढोल बजने की आवाज़ उसे दूर से आती हुई सुन पड़ी।

वह पुल पर जा पहुँचा। यहाँ से मज़दूरों का एक बड़ा उपनगर आरम्भ होता था। उसने यहाँ एक सराय में जाकर कबाबों की फ़रमाइश की। सराय का मालिक उसको देखकर चकित रह गया।

'उन्होंने मुझे खीष्ट बना डाला है, हैं न? यह पुलिस की करतूत है।' शराब का एक गिलास पीकर उसे वहाँ से भी चल देना पड़ा। परन्तु होटल के मालिक के दयाभाव से उसे बड़ी सांत्वना मिली। उसने शराब की क़ीमत लेने से इनकार कर दिया। ज़ख्मों की टीस और इस दयाभाव ने एक क्षण के लिए फ्राऊ में एक उग्र क्रान्तिकारी—एक शहीद—जैसी अनुभूति उत्पन्न कर दी। उपनगर शान्त था। मज़दूर अपने बिस्तरों पर पड़े हुए थे। वह बूर्ज़्वा लोगों को शक्तिशाली बनाने

वाला कोई काम ही नहीं करना चाहते थे। वे इसी मिथ्या विश्वास में पड़े सोते रहना चाहते थे कि जब वे उठेंगे तो दुनिया में न तो बूर्ज़्वा लोग होंगे और न दासता ही। फ़ाऊ ने देखा कि घरों के द्वार अभी तक बन्द थे और स्त्रियाँ अपने प्रातःकालीन काम-धन्धों में लगी हुई थीं।

उसने एक और भोजनालय में जाकर कबाब माँगे, किन्तु वहाँ भी निराश होना पड़ा। उसको इस बात का विश्वास ही न होता था कि क़साईख़ानों और इधर-उधर माल पहुँचानेवाले मज़दूरों की इच्छा शक्ति का यह परिणाम हो सकता था कि किसी को दवा के तौर पर भी कबाब न मिल सकें। एक और सराय में जाकर कबाब माँगने पर लोगों ने उसका ख़ूब मज़ाक उड़ाया।

'कबाब ? किसी साहूकार के माँस के कबाब खाओगे ?'

फ़ाऊ ने धृष्टतापूर्वक उत्तर दिया—

'बस, मुँह बन्द करो। मैं तो स्वयं प्रभु का सांध्य भोजन भी खा जाऊँ। तुमको देखकर मेरे मुँह में पानी भर आता है।' यह कहकर जीभ चटखाता हुआ वह वहाँ से चल पड़ा। अब सुबह के छः बज गये थे, किन्तु अभी तक कहीं कबाब नहीं बने थे ! अन्तिम तंग गली को पार करके अब वह देहात में निकल आया। सड़क के किनारे एक पेट्रोल की टंकी थी। इससे कुछ दूर पर ७५ नम्बर का तोपखाना था जहाँ अब सुबह का बैंड बज रहा था। क्या यह 'युद्धावस्था' की घोषणा थी ? सारी सेना उसकी पीठ पर थी। पैट्रोल पम्पों के सहारे खड़ा होकर ज़रा देर आराम करने को फ़ाऊ ठहर गया। प्रातःकालीन बैंड का मधुर सङ्गीत सुनते हुए, उसने प्रायः अज्ञानतापूर्वक कहा—'सेना—वह तो मेरी सेवक है। मैं पेशाब करता हूँ तो वह मुझे सलामी देती है।' किन्तु कबाबों का सर्वथा अभाव था। उसने आँखें मलीं। वह दाहिनी आँख न खोल सका। वहाँ से कुछ ही दूर एक नाला था।

उसके किनारे पहुँचकर वह जैसे ही झुकने लगा उसकी पिंडलियों में बड़ी तीव्र टीस उठी। उसने सँभालकर एक गन्दा रुमाल निकाला। सूर्य्य की प्रथम किरणों में चक्कर लगाती हुई एक बर्र उसके पास आकर भिनभिनाने लगी। हाथ-मुँह पोंछकर उसने रुमाल जेब में रख लिया और वह वहीं बैठ गया। सामने एक गाय चर रही थी। धूप पड़ने से उसके नितम्बों से भाप उठ रही थी। उसके मुँह से एक लम्बी रस्सी बँधी हुई थी। फ़ाऊ ने चारों ओर घूर कर देखा। दूर-दूर तक कोई भी मनुष्य नज़र न आया। 'फिर भी,' उसने सोचा, 'सेना और सिविल गार्ड पीछे से मेरी रक्षा करेंगे ही।' उसने नाले के पार जाकर गाय की रस्सी पकड़ ली। गाय सरल स्वभाव से उसके पीछे चली आई। एक कटे हुए वृक्ष की डाली से उसने गाय को कसकर बाँध दिया। वह पहले खेत पर रोज़ाना मज़दूरी पर काम कर चुका था और तत्पश्चात् वह एक क़साई के यहाँ भी काम कर चुका था। उसने इस अनुभव से भी लाभ उठाया। उसने चाकू निकालकर खोला, उसकी धार पर उत्साह के साथ उँगलियाँ फेरीं। गाय का रंग बादामी था, जिस पर सफ़ेद धब्बे थे। उसने गाय का सिर सहलाया और फिर सहसा उसके कन्धे पर अर्धवृत्ताकार घाव लगाया। उसने नीचे से भी उस मांस के टुकड़े को काट दिया। फिर उसने इस कटे हुए टुकड़े को ज़ोर से पकड़कर खेंचा। गाय इतने ज़ोर से गला फाड़कर रम्भाई कि मानो वह हृदय-विदारक शब्द भूगर्भ से निकला हो। बेचारी गाय ने टाँगें दोहरी करके, सिर उठाकर आँखें फाड़ दीं, मानो यह सारी घटना ही उसकी समझ में न आ रही हो। फ़ाऊ वह लहू से लथ-पथ मांस का टुकड़ा हाथ में लिए हुए भाग खड़ा हुआ। मिट्टी में फेरकर उसने चाकू साफ़ किया और बन्द करके फिर जेब में रख लिया। उसने एक जगह खड़े होकर फिर चाकू खोला, खाल उतारी, और उस टुकड़े को लेकर वह एक निकटस्थ भोजनालय में पहुँचा। चूँकि यहीं दो मंजिले

पर उसने एक कमरा ले रखा था इसलिए यहाँ के कर्मचारियों से उसका काफ़ी मेल-जोल था।

'कबाब हैं ?' उसने यंत्रवत् प्रश्न किया।

उत्तर मिला—'हाँ, परसों के बचे हुए तीन रखे हैं।'

'परन्तु वह तो तिबासे हो गये। यह लो, इसको मेरे लिए फ़ौरन भून लाओ।' उसने काउन्टर पर टुकड़ा फेंकते हुए कहा।

वृद्धा मांस भूनने लगी। इतनी देर में लोग उससे इस दुर्दशा का कारण पूछने लगे। उसने उत्तर दिया कि वह पुलिया पर गिर पड़ा था और वह वैलेंशिया एक्सप्रेस के नीचे आते-आते बाल-बाल बच गया था। परन्तु गोश्त खाते ही वह बिलकुल ठीक हो जायगा। कुछ ही देर बाद उसके सामने की मेज़ पर एक कपड़ा बिछाया गया। उसके ऊपर शराब और रोटी के साथ भुने हुए गोश्त के टुकड़ों से भरी हुई एक रकाबी रखी गई। उसने पेटू सदृश खूब ठूँस-ठूँसकर भोजन किया। वह केवल रोटी, शराब या ज़ैतून के फल उठाने के लिए ही छुरी-काँटा हाथ से छोड़ता था। वह अपने आपको इस बात का विश्वास दिलाता जाता था कि यह सब सामान चट कर जाना उसके लिए उचित ही था। बीच-बीच में वह कभी-कभी छुरी से अपना सिर खुजला लेता था। कुछ दूर से गाय के रँभाने की आवाज़ आ रही थी। उसे सुन-सुनकर फ़ाऊ विजयोल्लास से फड़क उठता था। खाना-खाकर वह अपने कमरे में सोने गया। ज़ीने में खिड़कियाँ थीं जिनसे वसन्तकाल में लहलहाते हुए खेत दिखाई पड़ रहे थे। फ़ाऊ ने हँसकर पेट पर हाथ फेरा। उसने अपनी दाहिनी आँख खोलने की चेष्टा की। उसके खोलने में उसे बहुत ज़्यादा दिक़्क़त न उठानी पड़ी। दवा ने अपना काम शुरू कर दिया था। प्रातःकालीन वायु मण्डल को गाय के रम्भाने ने दुःखमय बना दिया था। और फ़ाऊ निश्चिन्तता के साथ खूब हँस रहा था।

'खूब पेट भर कर मांस खाना अतिहितकर होता है।' वह सोच रहा था। जब वह अपने कमरे के द्वार पर पहुँचा तो श्लेडियो जो रेलवे में गार्ड था, अपने कमरे से निकलकर ड्यूटी पर जा रहा था। यह सराय बहुत बड़ी तो न थी परन्तु साफ़-सुथरी और सुविहित थी। इसकी मालिकिन एक विधवा थी जो अपने बच्चों के लालन-पालन के निमित्त दिन-रात परिश्रम किया करती थी। फ़ाऊ ने गार्ड से पूछा—'कोई नूतन समाचार?'

'कैसा समाचार?' गार्ड ने आश्चर्य से कहा।

'यहाँ पुलिस तो नहीं आई?'

'नहीं तो।'

गार्ड नीचे चला गया और फ़ाऊ अपने कमरे में। उसकी समझ में यह बात नहीं आ रही थी कि पुलिस ने जोज़ी फ़ाज़ेडल तथा हिलयज़ पीरेज़ को अब तक आज़ाद क्यों छोड़ रक्खा है। यह दोनो नौजवान मज़दूर भी इसी सराय में रहते थे। उस गुप्तचर के सम्भव-घातकों की सूची में उसने इन दोनों के नाम भी लिखाये थे। जिस कमरे में ये दोनों रहते थे वह उसके पास पहुँचकर खड़ा हो गया। इस कमरे का रास्ता भोजनागार में होकर था जहाँ से शीशे के द्वार से किसी के चलने-फिरने के अस्पष्ट प्रतिबिम्ब देख पड़ते थे। 'ये लोग अभी पकड़े नहीं गये हैं।' उसने मन-ही-मन कहा। मेज़ पर बैठा हुआ एक सी०आई० डी० वाला जलपान कर रहा था। वह भी यहीं रहता था। फ़ाऊ इस अन्तिम परिणाम की तैयारी करता हुआ बोला—'सम्भवतः यह जेल के पखेरू हैं। इन्होंने सिंडीकेटों में बड़ा उधम मचा रक्खा है।'

तदनन्तर जब ये दोनों किसी विषय पर कुछ बोलते थे तो उनकी मानसिक विशिष्टता से उत्पन्न होनेवाले अपने खिन्नता के भाव को स्मरण करता हुआ वह अपने कमरे में पहुँचा। इसके अतिरिक्त इनमें से एक सज्जनों जैसे वस्त्र पहनता था और दूसरा उसके सम्मुख दाँत

साफ़ किया करता था। संभवतः उसको लज्जित करने के अभिप्राय से। अतः यह अच्छा ही हुआ जो उसने इनके नाम घातकों की सूची में लिखवा दिये। सी० आई० डी० वाला क़हवा पीता यह सोचता जाता था कि मुझे अपने व्यक्तिगत जीवन में किसी से क्या मतलब, मेरा कर्तव्य केवल आज्ञापालन करना है। इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं। फ़ाऊ खाँसा, हवा के झोंके के साथ गाय के रँभाने की आवाज़ भी आई। वह हँसने लगा। उसको अभी से अपनी तबियत बहुत कुछ सुधरी हुई प्रतीत हो रही थी। अब वह कपड़े उतार कर बिस्तर पर लेट गया।

जोज़ी और हेलियॉज़, जो छपाई का काम करते थे, अपने अन्धकारपूर्ण शयनागार के एक कोने में एक खुले हुए ट्रंक के सामने झुके हुए थे। वे वार्ड के प्रतिनिधि थे और इस समय अन्धेरे में प्रूफ़ की सहायता के बिना ही, एक घोषणापत्र कम्पोज़ कर रहे थे जिसको प्रातःकाल के सात बजे तक छपाकर वितरित करना था। टाइप के सूक्ष्म धातुकण मुँह में जाने से रोकने के लिए जोज़ी मुँह पर रूमाल रक्खे हुए था। वह चुपचाप पंक्तियाँ कम्पोज़ करके हेलियॉस को फ्रेम में कसने के लिए देता जा रहा था। अभी काम बाक़ी था। पाच घंटे बाद वह कमरे से इस प्रकार बाहर निकलेंगे मानो वे अच्छी तरह सोकर उठे हों। सम्भवतः वह पड़ोसी गुप्तचर से भेंट हो जाने पर सलाम भी करें। वह एक समीपवर्ती छापेखाने में फ्रेम ले जाकर, यंत्रालय के अध्यक्ष के जाने बिना ही, लगभग डेढ़ घण्टे में, ८,००० प्रतियाँ छपवा लाएँगे। उसके बाद ? ओहो, तब तो ८,००० लाल कबूतर—युद्ध के कबूतर—बन्दरगाहों, रेलवे लाइनों, शंटिंग स्टेशनों और क्रेनों पर उड़ने लगेंगे। और विध्वंसात्मक निनाद के साथ, रेलगाड़ियाँ जहाँ की तहाँ खड़ी रह जायँगी और दमे के रोगी के सदृश इंजन की उग्र श्वास बन्द हो जायगी। तमाशे का मूर्खराज यह जानता था कि हेलियॉस ने जूतों

का नया और बढ़िया जोड़ा ख़रीदा है। उसका खयाल था कि जिस दिन वह इस नये जोड़े को पहनेगा, उसी दिन वह जेल में ठूँस दिया जाएगा। किन्तु चूँकि यह असंदिग्ध था कि इन दोनों का गुप्तचर के बध से कोई सम्बन्ध ही न था, तो इसका यही परिणाम होना अनिवार्य था कि फ़ाऊ को फिर सदर कोतवाली में बुलाया जाएगा उस पर फिर मार पड़ेगी और उसको गाय की तरह मार्मिक पीड़ा से रँभाना पड़ेगा।

सामर और विलाकम्पा

पुलिस प्रातःकाल फिर आई और उसने हमारे मकान पर क़ब्ज़ा कर लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि यहाँ आनेवाले सिंडीकेटवालों को पकड़ने के लिए उन्होंने हमारे घर को एक जाल के रूप में परिवर्तित कर दिया है। या शायद उन्हें यह सन्देह हो गया है कि यहाँ हथियार छिपे हुए हैं और वे कामरेडों को उन्हें प्राप्त करने से रोकना चाहते हैं। मेरी दादी श्रीमती क्लेटा के सामनेवाले मकान में चली गई है। वह जब-तब जँगले पर से झुककर इधर देखा करती है। उसने अब अपना पुराना तरीक़ा बदल दिया है। वह पुलिसवालों से ज़्यादा बातचीत नहीं करती। वह उनके प्रश्नों के उत्तर में एक गन्दा गीत गाया करती है जिसमें उनके व्यभिचार का कथन है। उस बेचारी के मस्तिष्क में यह बात समा गई है कि इन्होंने उसके पुत्र का शव छिपा

रक्खा है। वह उसकी खोज में सारे मैडरिड को छान डालना चाहती है। चूँकि उन्होंने हमें प्लाज़ा दि नेप्ट्यूनो से धक्के देकर निकाल दिया था हमें यह मालूम नहीं हो सका कि उन्होंने पिताजी के शव का क्या किया। मेरी दादी इस समय जँगले पर झुककर पुलिस को पुकार रही है। वह आस्तीनें चढ़ाए हुए अपनी भुजा पर ज़ोर से हाथ मारकर कह रही है—

'यह सार्वजनिक रक्षा के डायरेक्टर जनरल के लिए।'

दूसरा थप्पड़ मारकर वह चिल्लाती है :

'यह तुम्हारे लिए!'

और फिर तीसरे पर :

'और यह उस ऐनकवाले के लिए!'

उसकी इस हरकत से श्रीमती क्लेटा जो एक सिपाही की विधवा स्त्री है परेशान हो सकती है। मैं मुर्ग़ा लेकर सड़क पर निकल आती हूँ। यह बेचारा बहुत परेशान है। प्रातःकाल बिलौटा आया था। वह बहुत दुबला था। उसके सारे शरीर पर झुर्रियाँ देख पड़ती थीं। एक न एक दिन हम सबका यही हाल होना है। दादी और श्रीमती क्लेटा की अब यही दशा है। मैं इस विचार से यहाँ खड़ी हूँ कि यदि कोई कामरेड आये तो संकेत द्वारा उसे यहाँ से चलता कर दूँ। मुर्ग़ा मेरे साथ पग पर पग रख रहा है, या यूँ कह लो कि जितनी देर में मैं एक पग रखती हूँ वह तीन पग रखता है। मैं हाथ में टोपी लिये हूँ और उसमें मेरा रिवालवर लिपटा हुआ है। ऐनकवाले कांस्टेबिल ने मेरी ओर सप्रेम दृष्टिपात किया है, परन्तु मैंने उसकी ओर इस प्रकार घूरकर देखा मानो मैं कहती होऊँ—'यदि मैं पुरुष होती तो मारते-मारते तुम्हारा मुँह तोड़ डालती।' इस प्रकार घूरकर देखने और दूसरे को अपना अभिप्राय समझा देने की यह रीति मैंने स्वयं आविष्कृत नहीं की है; किन्तु मैंने यह एक जिप्सी की लड़की से

सीखी है जिसके साथ एक धनी पुरुष ने बुरी नियत से मज़ाक किया था।

चलते-चलते मैं बारकों के पास अफ़सरों के बँगलों की चहार दीवार के निकट पहुँच जाती हूँ। दीवारें गुलाबी रंग की ईंटों की हैं जिन पर सूर्य का प्रकाश खूब पड़ रहा है। अम्पारो के कमरे के समीप दीवारों पर हरी-हरी बेलें चढ़ी हुई हैं जिनमें नीले फूल खिले हुए हैं। ये बेलें और फूल ऐसे सुन्दर, स्वच्छ और ताज़े हैं कि मेरे मन में आता है नग्न होकर मैं इन्हें अपने सिर और कमर के चारों ओर लपेट लूँ। परन्तु बड़ी मुश्किल तो यह है कि यदि कोई मनुष्य बूर्ज़्वा लोगों से सम्पर्क रखना चाहता है तो उसे अपना शरीर कपड़ों से अवश्य ढकना ही होगा। इन नीले पुष्पों को देखकर और सामर के प्रेमपत्र का स्मरण करते हुए यही मालूम होता है कि सामर और अम्पारो का प्रेम व्यापार भी दुकानों पर टके में बिकनेवाले रंगीन पोस्टकार्डों पर चित्रित प्रणय-लीला जैसा ही है। प्रेमी-प्रेमिका चुम्बन करनेवाले हैं। दोनों सुन्दर और बढ़िया कपड़े पहने हुए हैं। एक कोने में एक सफ़ेद कबूतर बैठा हुआ है। बस यही उनका प्रेम है। मैं सामर से निराश हो गई हूँ। मैं पहले यह समझती थी कि वह अधिक बुद्धिमान् है, अराजकवादी है, और तैरना जानता है। फिर मैंने उसे उस महत्त्वपूर्ण काग़ज़ को पुलिस के हाथों में जाने देते हुए देखा और यह भी जान लिया कि वह एक साम्यवादी है और वह भी अधूरा! परन्तु वह निस्संदेह एक सहृदय कामरेड है। यद्यपि वह पत्रों में लेख लिखता है और बूर्ज़्वा लोगों के समान विशुद्ध भाषा बोलता है तो भी संस्था में उसकी निन्दा का प्रस्ताव रखना सर्वथा अनुचित ही है।

अब सामने से रिकार्ट और दो अपरिचित पुरुष आ रहे हैं। मैं उनको यहाँ से चले जाने का संकेत करती हूँ। परन्तु वह मुझसे वार्तालाप करना चाहते हैं। अतः मुर्ग़े को बग़ल में दबाकर मैं स्वयं

उनके समीप जाती हूँ। रिकार्ट थकान से चकनाचूर हो रहा है।

'क्या हम आपके मकान में थोड़ी देर सो सकते हैं?'

मैं उन्हें सारा वृत्तांत सुनाती हूँ। उसके दोनों साथी भी क्लांत हैं। रिकार्ट ने इन दोनों कैरेलोनिया से आये हुए कामरेडों से मेरा परिचय कराया। हम लोगों ने हाथ मिलाये। विदा होने से पहले उन्होंने मुझे ग्रूप कमेटी के सदस्यों से यह कहने का भार सौंपा कि निकानॉर का सन्देह ठीक था, हम लोगों ने इस बात की जाँच कर ली है और हम शीघ्र-से-शीघ्र सब बातें लिखकर देंगे। वह यही बात दो तीन बार दुहराने के पश्चात् वहाँ से चले जाते हैं। अब मुझे एक काम सौंपा गया है। मुझे इस बात पर बड़ा हर्ष हो रहा है कि कामरेडों ने विश्वासभाजन समझकर एक कार्य मेरे सुपुर्द किया है। मेरा रिवालवर अब केवल खिलौना मात्र नहीं है। अब उसको पास रखने का एक महत्त्वपूर्ण कारण है। अब मेरे मार्ग में कोई बाधा न दे सकेगा। जब तक मैं ग्रूप कमेटी के सब सदस्यों तक अपना सन्देश न पहुँचा दूँगी अपनी स्वतंत्रता की हर प्रकार रक्षा करूँगी। जो कोई भी बाधा देगा मैं उसके सीने में गोली मार दूँगी। यह सच है कि मेरा रिवालवर भरा हुआ नहीं है, परन्तु यही नित्यप्रति देखने में आता है कि हममें से यदि किसी को विवश होकर गोली चलानी पड़ती है तो उससे वास्तव में कुछ अधिक लाभ नहीं होता। बूर्ज़्वा लोग यही चाहते हैं कि वे हमें घेरकर गोली चलाने को बाध्य कर दें और फिर भाप से चलनेवाले न्याय के हथौड़े के नीचे हमारा कचूमर निकाल दें। मैं तो यही ख़याल करती हूँ।

अब कोई दस बजे होंगे और मैंने अभी तक जलपान भी नहीं किया है। धूप तेज़ है। मैं चची क्लेटा के घर जाती हूँ जहाँ मुझे जलपान के लिए जमा हुआ चॉकलेट, रोटी और एक संतरा मिलता है। मैं बाहर गली में जाकर उसे खाती हूँ। मैं एक शिला पर बैठ

जाती हूँ। मुर्ग़ा मेरे हाथ में से रोटी के छोटे-छोटे टुकड़े उठा लेता है। इस प्रकार हम दोनों मिलकर खाते हैं। सामर जब आया तो ग्यारह का अमल होगा। मैं उठकर उसके पास गई और फिर हम दोनों साथ-साथ चलने लगे। मुझे उसके यहाँ आने की आशा न थी। मैं न जाने क्यों उसके साथ चली जाती हूँ, किन्तु मैं अपने हृदय को ऐसा करने से रोकने में असमर्थ हूँ। सामर रुककर मेरी तरफ़ घूरने लग जाता है।

'इसको लिये हुए तुम कहाँ जा रही हो ?'

उसका अभिप्राय मुर्ग़े से है। मैं कन्धे उचकाकर उत्तर देती हूँ—

'मुझे यह भय था कि पुलिसवाले इस बेचारे को चट कर जायँगे। उन्हें जो कुछ भी घर में मिल जाता है उसका सफ़ाया कर देते हैं। दादी ने थोड़े से कलेजी के टुकड़े चूहों का ज़हर छिड़ककर रख दिये थे, किन्तु मेरे विचार में इतने से ज़हर से पुलिसवालों का कुछ भी हित सिद्ध न होगा।' सामर ने यह बात मानों सुनी ही नहीं। जेब में से कुछ काग़ज़ निकालकर वह पढ़ने लगा। मैंने भी उन पर एक तिरछी दृष्टि डाली किन्तु मेरी समझ में कुछ भी न आया। तेल लगे हुए काग़ज़ पर टाइपराइटर से यह बेमानी शब्द लिखे हुए थे—गेउरियूअर सुहेक्स मिफ़्रॉक, फिमाक्ससॉमिल, डिहेन योपे इत्यादि।' यह सभी बड़े अक्षरों में लिखे हुए थे।

'मुझे यह काग़ज़,' उसने कहा, 'वार्सिलोना जानेवाले वायुयान पर पहुँचा देने हैं।'

उसने मुझे विघ्नात्मक कार्य के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं बताया और न हड़ताल की प्रगति के बारे में कोई बात सुनाई, यद्यपि इतनी बात हर एक मनुष्य अपनी आँखों से देख सकता है कि कम से कम मेरे इलाके में हड़ताल पूरी हो चुकी है। हम लोग कभी अतीतकाल की बात नहीं किया करते, हम तो सदैव भविष्य ही के सम्बन्ध में

बातचीत किया करते हैं। हमारे लिए गुज़रे हुए काल का कोई अस्तित्व है ही नहीं, हमारे लिए तो सब कुछ आनेवाला कल ही है। मैंने उससे पूछा कि क्या वह ग्रूप कमेटी का सदस्य है ? उसके 'हाँ' कहने पर मैंने उसे रिकार्ट का सन्देश सुना दिया। वह खड़ा होकर मेरी ओर देखने लगा। उसने पूछा—

'क्या यही शब्द उसने तुमसे कहे हैं ?'

'हाँ।'

'बदमाश कहीं का ! तब तो उसकी रस्सी काटनी ही पड़ेगी।'

हम फिर चुपचाप आगे बढ़ते हैं। उसकी यह बात मेरी समझ ही में न आई। उसने फिर मुझसे पूछा—

'क्या तुम निश्चय कर चुकी हो ?'

'हाँ, मैं आज्ञा का पालन अवश्य करूँगी।'

'क्या तुम उन लोगों के स्थान जानती हो ?'

'हाँ, उनमें से बहुतों के।'

'जिन कामरेडों से मेरी भेंट होगी मैं भी उनसे कह दूँगा।'

मैं उससे पूछती हूँ कि वर्तमान स्थिति के सम्बन्ध में उसका क्या विचार है। वह थोड़ी देर चुप रहकर, अनिच्छापूर्वक मुझे यह बात बताता है। स्थिति स्पष्टतः बड़ी गम्भीर है। जब कभी भी अवस्था संकुलित हो जाती है, तो कामरेड मेरे साथ उसकी विवेचना करने से इंकार कर देते हैं, या यदि करते भी हैं तो आंशिक रूप से। पूरी बात मुझे कभी नहीं बताते। उनका खयाल है कि औरतों को इन बातों से मतलब ही क्या—और फिर नवयुवतियों को तो इनसे कोई वास्ता ही नहीं हो सकता। परन्तु सहसा कुछ अधिक सचेत होकर सामर मुझसे कहता है—

'क्या तुम जानती हो कि रिकार्ट के इस सन्देश का क्या अर्थ है ?'

'मुझे इसकी कोई परवा नहीं है। मुझे इससे क्या ? मैं तो केवल

यह जानती हूँ कि मैं कोई लाभदायक सेवा कर रही हूँ।'

सामर ने मेरी आँखों में आँखें गड़ाते हुए कहा—

'तुम मृत्यु का सन्देश ले जा रही हो!'

मुझे ऐसा ज्ञात हुआ कि उसकी दृष्टि मेरी पीली जर्सी और खुली हुई भुजाओं पर गड़ी हुई है। उसने फिर कहा—

'क्या तुम देख रही हो कि आकाश कितना नीला है?'

मेरे 'हाँ' कहने पर वह बोला—

'एक बड़ा भारी वातचक्र उठनेवाला है। उसके पीछे अंधकार और दुष्ट पक्षी हैं, मेरी बच्ची! और तुम्हारे अधरों और रिकार्ट के शब्दों के पीछे भी मृत्यु है।' कदाचित् उसका विचार सत्य है। परन्तु यह मृत्यु अन्धकारपूर्ण तथा पापात्मक न होगी। अतः मैं अपने सफ़ेद दाँत निकालकर हँस पड़ती हूँ और उसके मुँह पर ज़ोर से श्वास छोड़ती हूँ, जिससे उसको यह मालूम हो जाय कि आकाश के सम्बन्ध में उसका विचार ठीक है; किन्तु मेरे अधरों के सम्बन्ध में उसने ग़लती खाई है।

'तुम स्त्रियाँ मृत्यु की चतुर सन्देशवाहिनी होती हो।'

यह स्पष्ट था कि वह अपनी प्रियतमा के सम्बन्ध में कुछ कहने जा रहा था; किन्तु वह कुछ सोचकर मौन हो गया। उसके मस्तिष्क की ज़रूर वही दशा है जो वायुयान के इञ्जनों की स्टार्ट करते समय होती है। वह भृकुटी चढ़ाये हुए है, कभी कोई बात कहने लगता है और फिर सहसा रुक जाता है।

'क्या तुम वही बात सोच रही हो?' वह पूछता है।

'कौन-सी बात?' मैं हँसकर पूछती हूँ।

'अपना मृत्यु सन्देश लिये फिरने की।'

'परन्तु मैं किसकी मृत्यु का सन्देश ले जा रही हूँ?'

'किसी पुरुष की मृत्यु का, मार्ग में बजती हुई घण्टी की तरह।'

'यह कैसे?'

'वह पुलिस का मुखबिर है।'

'उसका क्या नाम है ?'

'फ़ाऊ।'

'मैं उसे जानती हूँ। मैं उसकी इस बात को भी पहले से जानती हूँ।'

'तुम्हारे अधरों पर उसी का मृत्यु दंड है।'

मैं बिना उत्तर दिये, अपने होठों को हाथ से पोंछ डालती हूँ। फिर मैं हँसती हूँ और वह भी मुँह टेढ़ा कर देता है। बहुत अच्छी बात है। उसको तो मार देना ही अच्छा है। लो, बस यह बात तो यहीं समाप्त हो गई। हम रोएडा की ओर अग्रसर होते हैं। यहाँ मकानों के मध्य में पैदल सिपाही खड़े हुए हैं और तार के खम्भों पर पहरा लगा हुआ है। हम मौन चले जा रहे हैं। सामर ने अपना रिवालवर मुझे दे दिया है जो मेरे रिवालवर के साथ ही टोपी में लिपटा हुआ है।

कुछ सिविल गार्ड आकर सामर को रोकते हैं। मैं आगे बढ़कर उसकी प्रतीक्षा करती हूँ। गार्ड मेरी ओर ग़ौर से देखते हैं। परन्तु चूँकि मैं नाटी हूँ और देखने में मूर्ख मालूम होती हूँ—देखने में मूर्ख मालूम होना भी बहुधा लाभप्रद होता है, मेरे कामरेड विलाकम्पा !—वह मुझसे कुछ नहीं कहते। सामर दोनों हाथ उठा देता है। उसके पास से कोई भी चीज़ बरामद नहीं होती। इसके बाद वह अपना कार्ड दिखाता है। गार्ड उसे आगे जाने की आज्ञा देते हैं। परन्तु आगे बढ़ने से पहले सामर उनसे इस बात का सार्टिफ़िकेट माँगता है कि उसकी तलाशी ली जा चुकी है। गार्ड उसे इसका स्टाम्प पेपर देते हैं। हम दोनो फिर चुपचाप आगे बढ़ जाते हैं। कुछ फ़ासले पर पहुँचकर सामर कहता है—

'शाबाश, मेरी बच्ची !'

यह सोचती हुई कि यदि मैं न होती तो वह आज पकड़ लिया

जाता, मैं मुर्ग़ों को बग़ल में दबा लेती हूँ। परन्तु चूँकि मैं यह समझती हूँ कि यदि हमसे किसी का उपकार बन पड़े तो हमें उसके कृतज्ञ होने की बात पर ज़्यादा ज़ोर नहीं देना चाहिये, ऐसी हालत में जब कि उपकार का बदला चुकाने का विचार उसके मन में हो, मैं सामर से यह बात नहीं कहती। अराजकवादी होते हुए भी विवेक रहता ही है। मैं गार्डों की इस बात पर अधिक गम्भीरता के साथ विचार नहीं करती, क्योंकि वे सजीले जवान हैं, और ख़ाकी कोटों पर पीले पट्टे बाँधे हुए हैं। मेरे हृदय में इस बात की कैसी प्रबल इच्छा होती है कि काश ये राजकर्मचारी न होकर एफ़० ए० आई० के सेवक होते और काश हम बूर्ज़्वा होते और वे हमें पकड़कर हमारा सिर तोड़ डालते! मैं यह बात भी सामर से नहीं कहती क्योंकि यह मूर्खतापूर्ण है। यद्यपि हमारे विचार स्वतंत्र और कभी-कभी मूर्खता से भरे हुए भी होते हैं, तो भी जो कुछ हमारे मन में आये उसे मुँह से कह डालना आवश्यक नहीं है। मैं तिरछी नज़रों से सामर को देखती हूँ; किन्तु इस ओर उसका ध्यान ही नहीं पहुँचता। वह गहरे विचारों में निमग्न है। वह मुझसे और इस झमेले से कोसों दूर है। मेरा जी गाने को करता है परन्तु यदि मैं गाने भी लगूँ तो भी वह उसकी ओर कुछ ध्यान न देगा। तार के खम्भों की प्रवाहावरोधक प्यालियों पर पड़कर प्रकाश अधिक समुज्ज्वल हो उठता है। पाँवों को तोलकर नीचे-ऊपर उड़ानें लगाने-वाली चिड़ियाँ मध्यवर्ती कूड़ेघर पर पड़े हुए पुराने टीन के डिब्बों को छूते-छूते बाल-बाल बच जाती हैं।

सामर मुझे आज्ञा देता है कि मैं कल प्रातःकाल बारकों में जाकर प्रचार-साहित्य के कुछ बंडल उस सिपाही को दे आऊँ जिसने अभी से हमारा पक्ष ग्रहण कर लिया है। मैं यह आपत्ति करती हूँ कि 'युद्धावस्था' के कारण सभी सिपाहियों को चौबीस घंटे बारकों में रहने की आज्ञा है और करनल से लिखित आज्ञा लिये बिना कोई भी

मनुष्य वहाँ अन्दर नहीं जा सकता। अतः मेरे लिए यह काम करना असंभव-सा है।

'तुम्हारा यह कहना ठीक है। तुम्हें परवाना ला दिया जायगा। घोषणापत्रों के बंडलों को एक बाल्टी में रखकर तुम सीधी पाकशाला की ओर अग्रसर होना। रास्ते में तुम्हें एक सिपाही मिलेगा। तुम उसे वह बाल्टी दे देना। बाल्टी वापस लाने तक तुम प्रतीक्षा करना। फिर तुम इस भाव से बाहर आना मानो बचा-खुचा खाना लेकर आई हो।'

तरकीब तो अच्छी है—परन्तु यदि सब काम ठीक तरह हो जाय—तभी न। यदि यह भी मान लिया जाय कि मैं पकड़ली जाऊँगी तो भी पहले तो मैं नाबालिग़ हूँ और फिर मैं यह भी तो कह सकती हूँ कि मुझे क्या मालूम था कि बाल्टी के अन्दर क्या है। हम आगे बढ़े जा रहे हैं। यहाँ रोयडा बहुत चौड़ी हो जाती है। एक लारी पूरी रफ़्तार से आती है। यह लारी अस्पताल की है। उसके ऊपर क्रॉस बनी हुई है। वह हमारे पास से होकर पूर्वी क़ब्रिस्तान की ओर जाती है। सामर खड़ा होकर उसकी ओर घूरता है। 'इस बात की बहुत कुछ संभावना है कि तुम्हारे पिता का शव इसी में हो।' उसनें कहा।

उसकी इस बात का प्रभाव मेरे ऊपर ऐसा हुआ मानो कोई एक मधुर गीत में मुझे यह बतला रहा हो कि हमारे सिर पर आसमान गिरनेवाला है। मैंने यह देखकर कि वह स्वयं इस संदेह से दुःखित हो उठा है। उसका ध्यान बटाने के अभिप्राय से यह बात कही कि यह भी तो बहुत संभव है कि कल स्वय उसका शव उसी लॉरी में उसी ओर जाए। यह बिलकुल असत्य बात थी परन्तु उससें उसको सांत्वना मिली और मेरे पिता की स्मृति को इतना अधिक महत्त्व देने से वह रुक गया। सामर मुस्कराया और कितनी देर तक मेरी ओर देखता रहा। उसके इस तरह देखते रहने से मैं समझती हूँ कि मैं सुंदर हूँ। वह मुँह से यह कहने का साहस तो न कर सका; किंतु मैं अनुमान से उसका

विचार समझती हूँ। उसने भी यह निश्चयकर लिया कि मैं उसका मनोभाव समझ गई हूँ, और इस प्रकार मानो वह आँखें मूँद कर दरिया में कूद रहा हो, उसने मुझसे कहा—

'अब तो तुम्हारा चुम्बन लिये बिना मैं एक पग भी आगे नहीं रखना चाहता।'

मैं रुक गई। मैंने उचक कर अपने होंठ ऊपर कर दिये। उसने मेरा सिर दोनो हाथों में पकड़ कर अधरपान किया। मैं नहीं जानती कि इसी बीच में किस प्रकार मुर्ग़ा मेरे हाथ से छूटकर भाग निकला। मैं शीघ्र झटका देकर सामर से अलग हो गई और मुर्ग़े के पीछे दौड़ी। हम दोनों ने उसको घेरकर पकड़ लिया। हम फिर आगे बढ़ चले। रोण्डा में हमें कोई नहीं मिला। हमारे एक ओर कोई भी मकान नहीं था। सामर ने मुझसे कहा—

'और यदि उन्होंने आज मेरा बध न किया तब?'

मेरी बुद्धि इतनी तेज़ ज़रूर है कि जो बातें वह मुख से नहीं कहता है मैं उनको अनुमान से समझ लेती हूँ। फिर भी चूँकि मैं अभी नवयुवती हूँ और मुझे जीवन का अनुभव बहुत थोड़ा है मुझे कभी-कभी उसके भावों की झलक मात्र ही मिलती है और मैं उनकी व्याख्या करने में असमर्थ होती हूँ।

'यदि उन्होंने तुम्हें आज नहीं मारा तो यह और भी अच्छा होगा'—मैं कहती हूँ, 'क्योंकि फिर तुम इस सारे कार्य का परिणाम स्वयं देख लोगे।'

परन्तु वह इसका कोई उत्तर नहीं देता। सामर बीमार है, सख्त बीमार? किन्तु यदि वह मुझे अपनी दवा करने दे तो मैं उसको अच्छा कर सकती हूँ। परन्तु वह ऐसा जीव कहाँ जो किसी का कहना मान जाय। वह तो उलटा मुझे न जाने कहाँ-कहाँ अपने साथ घसीटता फिरेगा।

मैं पूछती हूँ—'तुमने मुझे क्यों चुम्बन किया।'

वह कन्धे उचकाकर चलता रहता है।

'क्या तुम नहीं जानते?' मैं हठपूर्वक फिर पूछती हूँ।

वह मौन धारण किये हुए है। सहसा मुर्ग़े की पूँछ का एक पर खेंचकर वह अपने बटनहोल में इस प्रकार खोंस लेता है कि उसका केवल थोड़ा-सा सिरा ऊपर देख पड़ता है। मुर्ग़ा इस प्रकार चिल्ला उठता है मानो उसका बध हो रहा हो। मैं उसे दूसरी गोद में ले लेती हूँ। मैं उससे फिर प्रश्न करती हूँ जिसका वह सरोष उत्तर देता है। अतः मैं चुप हो जाती हूँ। परन्तु मैं उसे रोगमुक्त कर सकती हूँ। उसके चुम्बन ने सारा रहस्य मुझ पर प्रकट कर दिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उसे अच्छा करने की क्षमता मुझमें है। किस तरह? यह मैं नहीं जानती। उसके साथ-साथ रहकर। यदि वह मुझे अपने पीछे घसीट कर ले जाय, तो इसकी मुझे कोई परवा नहीं। यदि वे लोग अन्त में हमें कुचल भी डालें, तो भी मुझे कोई चिन्ता न होगी! केवल इस बात को सोचने से मेरा सिर चकरा जाता है, जिस प्रकार कि थियेटर में रेलगाड़ी के आखिरी पहियों को टूटे हुए पुल से दरिया में गिरते हुए देखकर ऐसा हो जाता है। कौन जाने? वह पत्र जो मैंने पढ़ा एक प्रकार की 'अन्तिम बिदा' थी। किन्तु मैं बिना बात किये हुए चल नहीं सकती।

'क्या तुम अपनी प्रेमिका को बहुत प्यार करते हो?'

'हाँ।'

'तो तुम बूर्ज़्वा हो।'

'कदाचित् तुम ठीक कहती हो।'

उसने यह शब्द ऐसे वेदनापूर्ण स्वर में कहे कि कुछ और कहने को मेरा जी ही न चाहा। परन्तु मैं कभी-कभी उसकी ओर देख लेती हूँ। यह देखने के अभिप्राय से कि क्या मैं उसके विचारों को समझ

सकती हूँ। उसने लड़कपन से अब तक बहुत कुछ पढ़ा है, जीवन का भी खूब अनुभव किया है। उसने सुख के दिन भी देखे हैं। वह प्रेमिकाएँ बहुधा बदल दिया करता था। वह सप्ताह में कुछ मिनटों को छोड़कर उनके सम्बन्ध में कभी सोचा भी न करता था। जब वह उनके साथ होता था तो भी वह उनके बारे में विचार न करता था जैसा कि वह अब मेरे सम्बन्ध में किया करता है। वह सुखी था। उसके विचार में कुछ ऐसी चीज़ें थीं जिनके मिल जाने पर उसका सुख निर्भर था। और वह कहता था—क्योंकि शब्दों के बिना, केवल एक संकेत मात्र द्वारा भी कहा जा सकता है—'अच्छा। इससे अधिक यहाँ और क्या रक्खा है?' यहाँ तो प्रत्येक वस्तु बेहूदी, गन्दी और टूटी हुई है; परन्तु मुझे इनमें से सबसे अच्छी ढूँढ निकालनी चाहिये, उसका औरों से अधिक उपयोग करना चाहिये, और अपने अंतस्तल में थोड़ा-सा हर्ष अपने लिए बनाये रखना चाहिये। यह बात लोगों की दृष्टि में बड़ी उम्दा और नफ़ीस हो सकती है जैसा कि दयाभाव से मुस्करा देना या जो सहानुभूति का भाव एक डाक्टर एक रोगी शिशु के प्रति दिखाता है, उसकी तरह। परन्तु हाँ यह एक निर्विवाद सत्य है कि सामर इन बातों से कुछ अलग-सा था, इन्हें वह पूर्णतः जानता न था और वह इनका इच्छुक भी न था। परन्तु जब सब सामान जुट जाता है तो भाव स्वतः उत्पन्न हो जाता है।

'और तुम?' उसने पूछा—'क्या तुम्हारे अन्दर आत्मा नहीं है?'

'मुझमें? आत्मा तो केवल बूर्ज़्वा लोगों की कल्पना मात्र है!'

अब वह कोई बड़ी पेचीदा बात सोच रहा है। मैं नहीं कह सकती कि वह क्या है। स्वयं उसके मस्तिष्क में सहसा कोई विचार उठता है परन्तु इस पर भी वह उसको व्यक्त करने में असमर्थ रहता है जैसा कि मेरे साथ भी हुआ करता है जब मैं यह सोचने लग जाती हूँ कि सृष्टि के पूर्व संसार की क्या दशा थी। मैं यह विचार करने और जानने का

प्रयत्न करती हूँ कि मैं क्या सोच रही हूँ, किन्तु मैं सफल नहीं होती। तदनन्तर सिर चकराने लगता है। कदाचित् वह कोई ऐसी ही बात सोच रहा है जिसके सोचने से सिर घूमने लगता है। उदाहरणार्थ— प्रेम के प्रादुर्भाव से पूर्व प्रेम के सम्बन्ध में विचार करना।

'तुम्हारी उसके साथ किस तरह जान पहचान हुई।'

उसका भाव ऐसा था मानो वह मन-ही-मन कह रहा हो—मेरे सम्बन्धियों में से एक की पुत्री कॉलेज में पढ़ती थी। उसके लिए कोई काम करने मैं एक दिन कालिज गया। वेटिंग रूम में मेरी भेंट करनल ग्रेशिया डेलरियो और उनकी पत्नी से हुई। इनसे मेरे कुटुम्बियों को पुरानी मित्रता थी। हम लोगों ने एक दूसरे का अभिनन्दन किया। स्नातिकाएँ हमें एक खिड़की के पास ले गई जहाँ से हम बाग़ में लड़कियों को प्रातःकालीन व्यायाम करते हुए देख सकते थे। वह इस प्रकार पंक्तियों में खड़ी की गई थीं कि इन पंक्तियों से एक दीर्घाकार आयत बन जाता था। उसमें दो कर्ण भी थे। वे सब मिलकर एक साथ काम कर रही थीं। विद्युत् द्वारा प्रचालित ग्रामोफ़ोन पर शूबर्ट की एक मार्च बज रही थी। ग्रामोफोन का भोंपू ही उनका निर्देशक था। भावों की असंगति तथा निर्विशेषता के कारण लड़कियाँ कठ-पुतलियाँ जैसी प्रतीत होती थीं। शूबर्ट की मार्च पर नीली झंडियों के साथ बाग़ के सब फूल भी हिलते-डोलते हुए मालूम होते थे। अम्पारो उस बिन्दु पर खड़ी हुई थी जहाँ आयत के दोनों कर्ण एक दूसरे को काटते थे, जो रेखागणित के अनुसार आयत का, उद्यान का, और प्रभात का केन्द्र-बिन्दु था। यदि वह किसी भुज पर होती तो कदाचित् कुछ भी न होता। परन्तु इस परिस्थिति में उसने मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव डाला। उसने भुजाएँ पसारी, एक ओर को सिर झुकाया, प्रातः-कालीन सूर्य के प्रकाश से खिन्न होकर आँखें मींच लीं और मैं इस शिशुता और पवित्रता के सूक्ष्माकाश में मेघ-सदृश घुल गया। किसी

अज्ञात उद्गम स्थान से मेरे हृदय में नूतन प्रेरणाएँ और शक्ति प्रस्फु-टित हो उठीं। हम वेटिंग रूम में लौट आये और स्नातिकाएँ अम्पारो को बुलाने गईं। एक स्नातिका ने हमें बताया कि कालिज कोर्स का जमनास्टिक ही ऐसा भाग है जिससे अम्पारो को अरुचि है। वह अपने माता-पिता के पास दौड़ी हुई आई। वह चौदह वर्ष की मालूम होती थी। उसने दीर्घ निःश्वास छोड़कर कहा—

'पापा, मैं तो बहुत तंग आ गई।'

'किस चीज़ से?'

'इसी जमनास्टिक से।'

इतने में एक और स्नातिका अन्दर आई। इतना स्पष्ट था कि इस अध्यापिका से अम्पारो की अनबन थी—यही क्लास टीचर थी। उसने कहा कि अम्पारो इतिहास में कम ध्यान देती है।

'आप हम से कहती हैं,' उसने शिकायत की, 'जब मैं स्वयं अपने पूर्वजों तक के नाम-ग्राम नहीं जानती तो प्राचीन काल की किसी महारानी के बाप-दादों के नाम याद कराने की चेष्टा करना एकदम व्यर्थ-सा है।'

'जब हम बाहर आये तो शूबर्ट की मार्च मेरे कानों में गूँज रही थी और मेरे हृदय-नभ के नवोदित सूर्य ने मेरे मस्तिष्क में सुनहरी बरों के झुण्ड के झुण्ड छोड़ दिये। विशाल आराम-वीथियों में शिशुगण मेरा गुणगान कर रहे थे और इसी के साथ-साथ मेरे ऊपर मेंहदी की डालें तथा श्वेत कलिकाओं की वृष्टि कर रहे थे।"

सामर मौन हो गया। उसने खड़े होकर आकाश की ओर दृष्टि उठाई, फिर वृक्षोंपर दृष्टिपात किया और फिर एक अट्टालिका की खिड़की की ओर निहारा जो वायु के झोंके से हिल रही थी और मैगनीशियम लैम्प के सदृश सूर्यरश्मियों को रह-रहकर बड़ी चमक के साथ प्रतिबिंबित कर रही थी।

'वह प्रभात भी ऐसा ही था।'

मैंने कुछ भी नहीं कहा। वैंटाज़ के समीप हम रोंडा के सिरे पर जा पहुँचे। एक बग़ल में मुर्ग़ा और दूसरे हाथ में दोनों रिवालवर लेकर अब एक पग भी चलना मेरे लिए असम्भव-सा हो गया। सामर ने भी यह बात देख ली।

'इस ओर चली आओ। समिति के सदस्य प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

मोटर साईकिलों पर चढ़े हुए दो सिविल गार्ड और एक फ़ौजी मोटरकार हमारे पास से निकले। एक बार फिर मैंने उससे यह पूछा कि उसकी राय में काम कैसा हो रहा है। उसने कहा कि मैड्रिड में हड़ताल सार्वजनिक नहीं है। फिर भी युद्धावस्था की घोषणा तथा प्रमुख सार्वजनिक विभागों का कार्य स्तंभित हो जाने का प्रभाव गंभीर था। मैड्रिड के बाहर अच्छी तरह काम हो रहा था। किंतु यहाँ हड़ताल परिमित होने की त्रुटि को विघ्नात्मक कार्य की सफलता ने किसी हद तक पूरा कर दिया था। विघ्नात्मक कार्य यद्यपि संपूर्णतः सम्पादित नहीं हो सका फिर भी उससे काफ़ी हानि हुई थी। तत्पश्चात् मैंने उससे एक ऐसा प्रश्न किया जिसको पूछे बिना मुझसे रहा नहीं गया—

'तो फिर क्या हम सब-कुछ करने और सहने के लिए कटिबद्ध हैं?'

सामर ने इसका सहर्ष उत्तर दिया। बार्सिलोना, कोरुना तथा सैविली से निश्चित समाचार आने की आशा की जा रही है। यदि 'युद्धावस्था' की घोषणा के उत्तर में हड़ताल सार्वजनिक हो गई तो फिर मामला इधर या उधर होकर ही रहेगा। हमारे पास भी कुछ ऐसे साधन तथा सामग्री हैं जिसको अभी तक हाथ नहीं लगाया गया। मैंने सामर को विश्वासपूर्ण पाया। अब हम एक छोटे-से क़हवाख़ाने में पहुँचे, जो एक प्रकार से उपनगर के सिपाहियों का भोजनालय था। वह

इस समय बंद था। उसके द्वार दो गलियों में थे। मैंने उसका एक द्वार आधा खुला हुआ देखा। मैंने कुछ मनुष्य अन्दर बैठे देखे जिनमें से कई मेरे परिचित थे। जब हम अन्दर पहुँच गये तो अध्यक्ष ने द्वार बन्दकर दिया। वह वृद्ध था। उसकी मूछों पर तम्बाकू के धब्बे थे। वह क़हवे की कुछ प्यालियाँ लाया, जिनमें से एक उसने मुझे भी दी। मैंने मुर्ग़े को गोद से उतार दिया और रिवालवरों को एक मेज़ पर रखकर थोड़ा-सा क़हवा पिया। वह वृद्ध मुझसे परिचित नहीं था किन्तु रिवालवरों को देखकर वह मुस्करा दिया और मुर्ग़े को देखकर मुझसे कहने लगा—

'तुम्हें इससे बड़ा प्रेम मालूम होता है। होना भी चाहिये, क्योंकि तुमने इसे नन्हेपन से पाला पोसा होगा।'

पुरुषों के साथ वहाँ बिलाकम्पा भी उपस्थित था। ये लोग फ़ाऊ के सम्बन्ध में आश्चर्य तथा विषाद के साथ बातचीत कर रहे थे। तत्पश्चात् प्रायः सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास हुआ और बिलाकम्पा ने कहा—

'कमेटी के अन्य सदस्यों को सूचना दिये बिना हम कुछ नहीं कर सकते। इसके अलावा हमें लिखित सूचना देनी पड़ेगी।'

सभापति के आसन पर अरबैनो था। उसने उठकर कहा—

'अब कामरेड क्राउज़ेल एम० ज़ेड० ए० रेलवे लाइनों के सम्बन्ध में कुछ कहेंगे।' कामरेड क्राउज़ेल ने उठकर कहा—'मुझे कुछ अधिक कहना नहीं है। केन्द्रीय सब-सेक्शन हड़ताल करने जा रहा है जिससे दो तिहाई काम स्तम्भित हो जायगा, हमने एक घोषणा-पत्र छापकर उसकी ८००० प्रतियाँ वितरित कर दी हैं।' यह कहकर उसने जेब से कुछ पर्चे निकाले जिनको दो कामरेड पढ़ने लगे। क्राउज़ेल कहता गया—'चूँकि नेता जेल में सड़ रहे हैं और केन्द्रीय दफ़्तर बन्द हो गया है, इसलिए ठीक-ठीक समाचार मिलना सहज नहीं है, फिर भी

अधिकांश लोग हड़ताल के पक्ष में हैं और उनके हृदयों में उसके प्रति बड़ा उत्साह भरा हुआ है।'

मैं अरबैनो की ओर देखती हूँ। अदालत के पेशकार के सदृश उसका मुख गुरु गम्भीर है। क्राउज़ेल कहे जा रहा है—

'यह मालूम करना ज़रूरी है कि क्रान्तिकारिणी कमेटी इस घोषणा-पत्र के अन्तिम भाग को पसन्द करती है या नहीं।'

यह ग्रूपों के प्रतिनिधियों की सभा है, सिंडीकेटों की नहीं। किन्तु स्थानीय कमेटी के तीन सदस्य यहाँ उपस्थित हैं। जातीय क्रान्तिकारिणी समिति में सिंडीकेटों और ग्रूपों दोनों ही के प्रतिनिधि हैं। अरबैनो घोषणापत्र के अन्तिम भाग को पढ़कर सुनाता है :—

'समिति के शेष सदस्यों की दृढ़ता के सम्बन्ध में हम आपको आश्वासन दे सकते हैं। हड़ताल में आपके सम्मिलित हो जाने का यह परिणाम होगा कि समस्त स्पेन में रेलगाड़ियों का आना-जाना बिलकुल बन्द हो जायगा। जिस पक्ष को समस्त प्रतिक्रियात्मक शक्तियाँ चारों ओर से घेरे हुए हैं, ऐसा करने से आप उस पक्ष की विजय का प्रथम सोपान निर्मित करेंगे—' इत्यादि।

'अतः क्रान्तिकारिणी समिति ने सब-सेक्शनों में हड़ताल की आज्ञा भेज दी है।'

'इस सम्बन्ध में जातीय समिति की राय अभी तक ज्ञात हुई या नहीं?' क्राउज़ेल ने पूछा।

विलाकम्पा ने घोषित किया :

'जातीय समिति ने क्रान्तिकारिणी समिति के मूलतत्व तथा प्रमुख वास्तविक उद्देश्यों का समर्थन किया है।'

'वह कौन-कौन-सी धाराएँ हैं?' क्राउज़ेल ने पूछा।

अरबैनो ने एक फ़ाइल लौट-पौटकर कहा—

'वह यह हैं। 'सरकार के अत्याचार के विरुद्ध और उसकी शासन

शृङ्खला को तोड़ने के लिए आन्दोलन करना—जब कभी भी प्रति-क्रियात्मक दल की गोलियों से कोई कामरेड मारा जाय तो उसके विरोध में सार्वत्रिक हड़तालें करना—ऐसे घोषणापत्र निकालना जिनमें बूर्ज्वा लोगों के अपराधों के सम्बन्ध में समाजवादियों की चश्मपोशी की पोल खोली जाय—विघ्नात्मक कार्य—परिस्थिति के अनुसार काम पर लौट जाने या हड़ताल जारी रखने का निश्चय करना।' परन्तु इनमें ऐसी कोई बात नहीं है जिससे कमेटी का जातीय भाव प्रकट होता हो। एक स्थानीय परिषद् के कार्यों से विशेष कोई बात इन धाराओं में नहीं है।'

'किन्तु जातीय मत प्राप्त किये बिना हम इन्हें स्वीकार नहीं कर सकते।' कोई बोल उठा।

'सारी बात तो यह है,' किप्रियानों ने कहा, 'कि बारसिलोना-निवासी कामरेड अपने ऊपर कोई ज़िम्मेदारी नहीं लेना चाहते!'

सामर ने बोलने की आज्ञा माँगी। कुछ कागज़ात निकालकर उसने कहा—

'कामरेड क्राउज़ेल, असली बात तो यह है कि जहाँ तक हमारे आन्दोलन के निषेधार्थक भाग का सम्बन्ध है हम सभी अपना-अपना कार्य करने को तत्पर हैं। जब कि अन्य संस्थाएँ जैसे क्रान्तिकारिणी समिति आन्दोलन का क्रियात्मक रूप से संचालन करने और उसको सफल बनाने की चेष्टा कर रही हैं तो जातीय समिति की यह इच्छा कि उसे कोई सूचना न दी जाय सर्वथा उचित ही है। चूँकि क्रान्ति के तात्कालिक भविष्य के सम्बन्ध में कोई निश्चित कार्यनीति नहीं है वह कुछ भी जानना नहीं चाहते। इसके अतिरिक्त जो कुछ हम करें या औरों से करवाएँ उसका उत्तरदायित्व भी वह अपने ऊपर नहीं लेना चाहते। यह बिलकुल स्वाभाविक बात है। बस अब वर्तमान दशा में हमारा यही कर्तव्य है कि हम मैदान में

आकर सब कुछ बलिदान करने को कटिबद्ध हो जाएँ। यदि हम फिर असफल होना नहीं चाहते तो हमें आगे बढ़ना होगा और जाते-जाते अपने लिए मार्ग बनाना होगा। यदि हम ऐसा नहीं करेंगे तो हम अपने विनाश के पथ पर जायँगे। इस मार्ग का नक्शा हम इस समय तैयार कर सकते हैं और फिर जातीय समिति को भी उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य कर सकते हैं। यदि हम उसे उनके परीक्षार्थ भेजेंगे तो वे उसे ठुकरा देंगे। वे उसे एक वैधानिक सुधार-मात्र ख़याल करेंगे और हर हालत में इस बात पर अड़ जाएँगे कि उस पर सार्वजनिक मत लिया जाय। और यह तो स्पष्ट ही है कि यह काम १५ दिन से पहले न हो सकेगा। यदि हम इन्हें केवल सूचित कर दें और उनकी अनुमति न माँगें तो वे कुछ भी न कहेंगे और परिणाम की प्रतीक्षा करेंगे। मेरा विचार तो यह है कि या तो फ़ौरन काम पर लौट जाएँ या कल ही एक ऐसा आज्ञापत्र निकाल दें जिसमें बूर्ज़्वा लोगों से प्रभुत्व छीन लेने के लिए निश्चयात्मक, तात्कालिक एवं वास्तविक साधनों की विवेचना हो।'

सभा में एक क्षण के लिए सन्नाटा छा गया। सभी दुविधा में पड़ गये।

विलाकम्पा ने कहा कि मैं इससे सहमत हूँ; किन्तु सफ़ेद बालों-वाले खूसट ने कहा कि मुझे तो इस बात का विश्वास नहीं होता कि हम इस बार बूर्ज़्वा लोगों की सत्ता नष्ट करने में समर्थ हो सकेंगे।

'इसलिए,' उसने कहा, 'चूँकि हमें अपने ऐसा कर सकने में विश्वास नहीं है, मैं काम पर लौट जाने की राय देता हूँ।'

कुछ लोगों ने इसका विरोध किया। किन्तु वृद्ध ने हाथ उठाकर कहा—

'कामरेड सामर ने हमारे सामने एक जटिल समस्या रख दी है जिस पर विचार करना हमारे लिए अनिवार्य है। या तो हम बूर्ज़्वा

लोगों की सत्ता के स्थान पर अपनी सत्ता स्थापित कर लें या कुछ भी न करें। मैं लम्बे वादविवाद में पड़ना नहीं चाहता, क्योंकि पहली बात को मैं पूर्णतः अस्वीकार करता हूँ, अतः मेरे लिये एक अच्छे क़ानूनदाँ, नहीं मेरा मतलब है एक कुशल तर्कशास्त्री के रूप में (उसने इस प्रकार सशीघ्र संशोधन किया मानो 'क़ानून' शब्द ने उसकी जीभ जला दी हो) यह कहना संभव नहीं है कि दूसरे काम को हाथ में लेने से पहले हमारे लिए पहले कार्य की नींव डालना आवश्यक है। बूज़्वा लोगों के प्रभुत्व को नष्ट करके हम अपना प्रभुत्व स्थापित नहीं कर सकते, क्योंकि यह बात कहना उतना ही निरर्थक है जैसा कि उसकी बजाय कोई अन्य सत्ता स्थापित करने को कहना। मैं प्रभुत्व के प्रत्येक रूप को अपने उत्कृष्ट अराजकवादी सिद्धान्तों के विरुद्ध समझकर अस्वीकार करता हूँ।'

सामर ने हँसकर टीका की,

'बड़े ऊँचे सिद्धान्त हैं न!'

वह वृद्ध इस बात को सुस्पष्ट रीति से बताने का अवसर प्राप्त करना चाहता था कि कुलीनता के दो रूप हैं। एक बूज़्वा पद्धति के अनुसार और दूसरा एक और, इससे विभिन्न। किन्तु सामर जल्दी में था और उद्विग्न तथा अधीर भी मालूम होता था। उसने कहा कि मैंने जातीय समिति के नाम एक पत्र लिखा है जिसमें हमने उन्हें उन कामों की जो कि हम करने जा रहे हैं सूचना दी है; किन्तु उनकी स्वीकृति नहीं माँगी है।

उसने इस पत्र को पढ़ना आरम्भ कर दिया, परन्तु वृद्ध ने बीच में बाधा देते हुए कहा—

'किन्तु हम इसे डाकद्वारा नहीं भेज सकते।'

सामर ने कहा कि वह बीजाक्षर में लिखा हुआ है और बीच बीच में इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण प्रश्नों द्वारा बाधा उपस्थित करना

अनुचित है। वाक्य सरल थे। उसमें उन बातों का उल्लेख था जो हम वस्तुतः कर सकते थे। उनसे यह प्रतीत होता था कि क्रान्ति बड़ी आसानी से सफल हो जायगी। इस पर वृद्ध ने शोक से सिर हिलाकर कहा—

'मैं इसके पक्ष में इस कारण वोट नहीं दे सकता कि कामरेड ने इसको मार्क्स की।अधम प्रेरणा से लिखा है।'

अरवैनो ने व्यक्तिगत रूप से सामर के प्रति आदर भाव प्रदर्शित करते हुए रूस का इस कारण विरोध किया कि उसमें स्वातंत्र्यवाद का अभाव था।

किप्रियानो ने मेज़ पर हाथ मारकर कहा—

'मैं अराजकवादी हूँ, फिर भी मैं इसके पक्ष में वोट देता हूँ और उस पर अपने हस्ताक्षर करूँगा। जिन सिद्धान्तों को हम औरों पर लागू नहीं कर सकते उनकी पवित्रता की दुहाई देकर हमें अपने उन भाइयों को जो गलियों में युद्ध कर रहे हैं नहीं त्याग देना चाहिये।'

किप्रियानो की सरल सहृदयता से पुलकित होकर सामर उसकी ओर कुछ देर देखता रहा। तदनन्तर उसने अन्य सदस्यों की ओर ध्यान से देखा। युवकगण उसके पक्ष में थे। पीले बालों और सफ़ेद खाल वाला दैत्य लिवर्टो गारशिया, भारी चेहरे और विषण्ण स्वभाव वाला एलिनियों मारग्राफ़, और दो और छपाई का कार्य करनेवाले सदस्य—जोज़ी क्राउज़ेल और हेलियॉस पीरेज़—उसके समर्थक थे। फिर भी, जब वोट डाले गये तो उस खूसट ही की विजय हुई। सामर उठ खड़ा हुआ और बोला—

'मैंने केवल शिष्टाचार के नाते ही इस प्रश्न को यहाँ उठाया था। यद्यपि दलपरिषद् ने इसको अस्वीकृत कर दिया है फिर भी मैं इसे आज रात को क्रांतिकारिणी समिति के सामने रक्खूँगा, क्योंकि मैं इस बात को जानता हूँ कि काम कराने का बस यही एक तरीक़ा है।'

किंतु किप्रियानो क्रोध से जला जा रहा था।

'अरे भाई, यहाँ से चलो भी !' उसने कहा।

'कहाँ चलें ?'

'उनके हाथों प्राण देने के लिए। अब तो बस यही होना रह गया है।'

विलाकम्पा ने बात काटकर कहा—

'अच्छा, इससे तो बूर्ज्वा लोगों को प्रसन्नता होगी।'

'परंतु हम यहाँ भी तो वही काम कर रहे हैं,' किप्रियानों ने ज़ोर देकर कहा—'बूर्ज्वा लोगों को प्रसन्न कर रहे हैं।'

अरबैनों ने किप्रियानो से जवाब तलब किया। विजयी की शुभ-कामना के साथ वृद्ध ने किप्रियानों की तरफ़दारी करते हुए कहा—

'कामरेड किप्रियानो नीत्शे के अनुयायी अराजकवादी हैं। मैं उनकी बातें समझता हूँ, पर—'

सामर ने वृद्ध को कुपित दृष्टि से देखते हुए बात काटकर कहा—

'तुम हमारी बात समझते हो और इससे अधिक खेद की बात यह है कि तुम यह भी जानते हो कि हमारी बात ठीक है। परन्तु तुम स्वयं एक बिगड़े हुए बूर्ज्वा के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हो। तुम क्रांति से भय खाते हो और इसी प्रकार अपना सफ़ेद सिर हिला कर सुख-स्वप्न देखते हुए मर जाना चाहते हो।' ये दोनों एक दूसरे का मनोभाव खूब समझते हैं। सामर ने किप्रियानों की ओर से उत्तर दे दिया है, अतः वह कुछ और कहना नहीं चाहता। सामर ने यह भी कहा कि यद्यपि उन्होंने उसके प्रस्ताव के विरुद्ध वोट दिये थे फिर भी वह किसी सभा या कमेटी के निश्चय को भंग नहीं कर सकते। अब तो सब इसी बात पर सहमत हैं कि बिना सोचे समझे हुए सड़क पर जाकर हर एक से लड़ जाओ, इसका एक यही अर्थ हो सकता है कि उनके हाथों मारे जाओ।

५

वह वहाँ से अत्यन्त क्षुब्ध होकर बाहर गया। दो चार छोटे-मोटे प्रस्ताव पास करने के पश्चात् जब सभा विसर्जित हुई तो लिबर्टो, एलिनियो, जोज़ी, हेलियाँस और किप्रियानो भी उसके साथ हो लिये। मैं भी मुर्ग़ा बग़ल में दबाए हुए, उनके साथ थी। जब हम गली में पहुँच गये तो बिलाकम्पा हमारे पीछे दौड़ता हुआ आया। उसने मुर्गे की ओर देखा। वह मेरे साथ आना चाहता था; परन्तु उसे कोई बहाना न सूझा। या शायद उसने यह सोचा हो कि ऐसा करने से मेरा दिमाग़ बहुत बढ़ जायगा। किप्रियानो ने जोज़ी और हेलियाँस से कहा—

'फ़ाऊ से सावधान रहना। घर मत जाओ। बूज़र्वा-विज्जू लहू का प्यासा हो रहा है।' किन्तु यह दोनों टाइप के केस को सुरक्षित स्थान पर रख आने के विचार से घर जाना चाहते थे। गुप्त-रीति से घोषणा पत्र छापने का इस इलाक़े में एक यही साधन था।

उनका कहना था—'यदि मज़मून टाइप में सेट हो जाय तो वह कहीं-न-कहीं छपा ही लिया जायगा।'

अब यह निश्चय हुआ कि वे दोनों घर से लौटकर सामर के साथ विलाकम्पा के घर चले आएँ। वहाँ उन्हें जलपान की सामग्री मिलेगी। पुलिस विलाकम्पा पर सन्देह नहीं करती थी अतः उसके यहाँ जाने में कोई जोखिम की बात नहीं है। तत्पश्चात् वे दोनों चले गये। लिबर्टो, एलिनियो और किप्रियानो भी दूसरे दिन के काम की तैयारी करने के लिए वैलेकास जाना चाहते थे। लिबर्टो की जेबें कागज़ों से भरी हुई थीं। मानो वह चलती-फिरती मंडल, स्थानीय और क्रांतिकारिणी समितियाँ हो। सामर के लेख को इङ्गित करते हुए उसने कहा—'यह तो आज ही रात को निकालना होगा।' जब हम प्लाज़ा दि मैनुएल बैसर्रा पहुँचे तो हमें कुछ चहल-पहल नज़र आई। गलियों में चलते हुए तो ऐसा मालूम हो रहा था मानो लोग शहर छोड़कर

भाग गये हों या वह ताऊन से बर्बाद हो गया हो। किप्रियानो ने कहा—'मैड्रिड आज कैसा उल्लसित है !'

किन्तु मैं इस पर सहमत न हो सकी, क्योंकि ट्राम्वे के बिना वह वास्तविक शोभा कहाँ ! किप्रियानो और वे दोनों छपाई का काम करनेवाले हमसे यहाँ पर अलग हो गये। विलाकम्पा एक आदमी को देखने के लिए रुक गया जो एक दरवाज़े में बैठा हुआ नींद से झूम रहा था। जब उसने हमें देखा तो उठकर लड़खड़ाता हुआ हमारे पास आया।

'कासानोवा, तुम यहाँ कैसे ?'

'मैं यहाँ एक कामरेड के आने की प्रतीक्षा में बैठा हुआ हूँ।,' उसने आँखें मलते हुए कहा, 'उसके पास मेरे विचार में दो रिवालवर हैं। मुझे यहाँ बैठे हुए सारी रात हो गई है, सच कहता हूँ। आज कल एक रिवालवर प्राप्त करने के लिए जो दिक्कतें और परेशानियाँ उठानी पड़ती हैं, अगर मैं उनका वर्णन करूँ तो तुम मेरा विश्वास नहीं करोगे।'

'परंतु जब हमने अस्त्रों की दूकान लूटी थीं तो क्या तुम हमारे साथ नहीं थे ?'

'हाँ था तो किंतु मेरे हाथ तो बस एक ऐसा पुराना तमंचा लगा जिससे सदियों पहले कुलीन लोग आपस में द्वंद्व-युद्ध किया करते थे। उसे नाल से भरना पड़ता है और पीठपर बारूद और छर्रे का बोरा लाद कर चलना पड़ता है।'

विलाकम्पा ने कुछ सोचकर कहा--

'क्या तुम सेराफ़ीन उरबेज़ को जानते हो ? उसके पास तीन रिवा-लवर हैं। वह शहर के दूसरे सिरे पर रहता है।' एक शब्द भी और बिना कहे सुने कासानोवा दूसरी ओर घूम पड़ा, एक क्षण के लिए चारों ओर देखता रहा, और फिर एक बग़ली में घुस गया। उसे नींद

बहुत आ रही है, वह सिर आगे किये हुए जा रहा है। ऐसा प्रतीत होता है मानो वह लम्पों के खंभों से लड़ने जा रहा है। हम बराबर ढालू भाग के नीचे की ओर चल रहे हैं। कुछ दुकानें अधखुली हैं। एक मोटरखाने के किवाड़ भिड़े हुए हैं। अंदर कुछ सिविलगार्ड बैठे हुए हैं। उनके पास एक भरी हुई मैशीनगन है जिसको चलाने भर की देर है।

आगे बढ़कर गली अधिक सजीव प्रतीत होती है। लोग डरे हुए मालूम होते हैं। वे हर एक आवाज़ को बड़े ध्यान से कान लगाकर सुनते हैं। थोड़े-से मज़दूर एक जगह खड़े हुए हैं। कल की अँधेरी और भयानक रात के बाद आज का दिन शांत, स्वच्छ तथा भयरहित मालूम होता है। ये लोग हाल-चाल देखने के लिए बाहर निकले हैं। 'वीजिया' का एक सरकारी संस्करण निकाला गया है। पत्रविक्रेता हाँक लगा रहे हैं—'गतरात्रि की गंभीर घटनाएँ—समस्त देश में युद्धावस्था की घोषणा'—हम भी इसकी एक प्रति मोल लेते हैं, सामर उसे नाम मात्र खोलकर शीर्षकों पर एक दृष्टि डालता है—'कल रात का भयानक दंगा'—'विघ्नात्मक कार्य, उसके शिकार'—'सरकारी दृष्टिकोण'—'सार्वजनिक घोषणा'—'षड्यंत्र के नेताओं का पता लग गया।' सामर ने मुस्कराकर कहा—

'कैसा षड्यंत्र ? यदि कोई षड्यंत्र रचा गया होता तो इस समय सरकार का नामो निशान तक बाक़ी न रहने पाता।'

एक पैराग्राफ़ पर उँगली रखकर उसने विलाकम्पा को दिखाते हुए कहा—

'देखो, मुरिल्लो को मार डाला।'

विलाकम्पा समाचार पढ़ता है—'मालूम हुआ है कि उसका नाम मुरिल्लो था और वह एक खतरनाक साम्यवादी और अगली श्रेणी का षड्यंत्रकारी था।' विलाकम्पा और सामर दोनों हँस पड़े—

'बेचारा मुरिल्लो !'

उसकी एक दंगे में इत्तफ़ाक़िया गोली से मृत्यु हुई थी। उसके बाद अब कौन जाएगा ? क्या अब की बार हमारा नम्बर होगा ? सामर ने हमारे हृदयों की बात जानकर कहा—

'सबसे श्रेष्ठ बात तो यह है कि हम सर्वसाधारण समुदाय में अपने आपको लय करदें, अपने व्यक्तित्व को खो दें, तो चाहे वे हमारे सीने में गोली भले ही मार दें ; परन्तु वे हमें कभी मार नहीं सकते।'

विलाकम्पा ऐसी बातें पसन्द नहीं करता है। वह मुझसे कहता है कि आज जैसे दिन मुझे पीले रंग के वस्त्र नहीं पहनना चाहिये क्योंकि पीला रंग विश्वासघातियों का है। मुझे तो लाल रंग के कपड़े पहनना चाहिये। सामर उसका यह मुँहतोड़ उत्तर देता है—

'यह पीले रंग के कपड़े इसलिए पहने हुए हैं ; क्योंकि तुम्हें ट्रामगाड़ियों से प्रेम है।'

'सब ट्रामगाड़ियों से ?' मुझे बिलकुल पगली समझकर विलाकम्पा प्रश्न करता है।

'अब तुम यदि यह बात पूछते हो तो सुनो। वास्तव में वे सभी एक-सी हैं, अतः मैं उन सभी से प्रेम करती हूँ।'

विलाकम्पा मेरी टाँगों को देखकर गुनगुनाता है—

'एक जवान देहाती पादरी ने
मुझे मोज़ों का जोड़ा दिया।
मैंने उससे कहा जानवर है तू और नंगे पैरों रहना पसन्द किया।'

'कैसा बेहूदा गीत है। मुझे पादरियों से क्या वास्ता ? असल बात तो यह है कि ट्रामगाड़ियों के प्रति मेरा प्रेम होने के कारण वह मुझसे क्रुद्ध है।'

'क्या तुम बहुत दिनों से प्रेम करती हो ?'

'अपने नन्हें बचपन से !'

सामर हँसकर कहता है—

'यह अब भी तो बच्ची ही है।'

मैं इन्हें अपने इस प्रेम की बात समझा सकती हूँ ; परन्तु इस कार्य के लिए यह समय उचित नहीं है। रिपब्लिक स्थापित होने पर मैंने एक ट्रामकार को जलते हुए देखा था। वह बेचारी मार्ग भूले हुए शिशु की तरह फूट-फूटकर रोती हुई मालूम होती थी!

हमें भयाकुल चीत्कार सुनाई देते हैं। लोग सब ओर भागे जा रहे हैं। हमें न तो कोई गार्ड देख पड़ता है और न कोई और भय का कारण। कदाचित् इस प्रायः जन-शून्य गली में इस प्रकार की शब्द-रहित गोलियाँ आ रही हैं जो उछलकर छतों पर पहुँच जाती हैं और जँगले के अन्दर बैठी हुई रसोई करनेवाली को जम लेती हैं। परन्तु हम शान्त रहते हैं। जब चारों ओर सन्नाटा छा जाता है तो हमें सहसा कूड़े के एक ढेर के पास बैठे हुए ४-५ वर्ष के दो बच्चे दिखाई देते हैं। वे उसे कुरेद कुरेदकर बंदगोभी के डंठल और बासी रोटी के किके बीन-बीनकर खा रहे हैं।

विलाकम्पा फिर आग्रहपूर्वक पूछता है—

'क्या तुम सचमुच ट्राम गाड़ियों से प्रेम करती हो?'

सामर मेरी ओर से इस प्रश्न का उत्तर देता है और संक्षेप में उसकी व्याख्या करता हुआ कहता है कि बूर्ज़्वा आत्मा के जो कण हमारे अन्दर अब भी मौजूद हैं हम उनको अपने भावों से दूर रखते हैं। हमारी मनोवृत्तियों का सारा नाता जनेन्द्रियों से है, आत्मा से उनका कोई सम्पर्क है ही नहीं। जब ये इन्द्रियाँ सो जाती हैं अथवा तृप्त हो जाती हैं तो आत्मा किसी भी वस्तु पर आसक्त हो जाती है। यदि हमारी आत्मा और मनोवृत्तियाँ मिलकर काम करती होतीं तो हमारा आचरण भी बूर्ज़्वा लोगों जैसा होता। हम भी भावुक होते। परन्तु हम ऐसे हैं नहीं। हमारी आत्मा भी अपने रास्ते पर चलती रहती है और

बूर्ज्वा लोगों की परिभाषा में वह 'आध्यात्मिक रीति' से प्रेम करती है। किसी ट्राम गाड़ी के साथ, या कासानोवा की तरह रिवालवर से, या नराई करने की गोल हँसिया से।

उसकी बात मेरी समझ में नहीं आई ; और न विलाकम्गा ही कुछ समझ पाया है, यद्यपि वह कहता है कि मैं समझ गया हूँ। परन्तु इतनी बात ज़रूर जान पड़ती है कि सामर की व्याख्या के परिणाम-स्वरूप ट्रामगाड़ी के प्रति मेरा प्रेम अब और ज़्यादा हो गया है। उसी क्षण एक ट्राम सड़क पर आती हुई दिखाई देती है। हम जड़वत् उसकी ओर घूरकर देखते हैं।

'बिजली कट जाने पर यह कैसे सम्भव हो सकता है ?'

एक मज़दूर हमें बताता है कि इस लाइन की मरम्मत हो गई है और सरकार ने गाड़ियाँ चलाने की आज्ञा दे दी है। 'परन्तु यह,' उसने वहाँ से चुपके से खसकते हुए कहा—'सही सलामती से ट्रामखाने नहीं पहुँचेगी।' उसकी यह बात सच निकली। हमारे पास तक पहुँचने से पहले ही किसी चीज़ के फटने का बड़े ज़ोर का धमाका हुआ। खरंजे के पत्थर उड़-उड़कर उसके ऊपर बरसने लगे। लाइन उड़ गई। गाड़ी पटरी से उतर गई। उसका एक पहिया हवा में घूम रहा था। हम भागकर सबसे क़रीब के कोने में जा खड़े हुए। मैंने सामर का रिवालवर ऊपर निकाल लिया ताकि वह जब भी चाहे उसका उपयोग कर सके। मुर्ग़ा इतना डर गया कि उसने पंजों से मेरा साया फाड़ डाला जिसमें मुझे आलपीनें लगानी पड़ीं। हम खड़े-खड़े यह सब देख रहे हैं। इस ट्राम में दो सिविलगार्ड हैं जो पत्थरों के टुकड़ों और शीशे के किरचों से ज़ख़्मी हो गये हैं। वे ज्यों-त्यों बाहर आते हैं। कंडक्टर को कोई चोट नहीं आई है, परन्तु वह बिना सोचे समझे बेतहाशा भागा चला जा रहा है। बग़ल की गलियों में से मनुष्यों की टोलियाँ निकलती हैं। ये लोग लड़ने-मरने को तैयार हैं। इनमें से

थोड़े-से ट्राम के पास जाते हैं, बाक़ी और पीछे गली में खड़े रहते हैं। मैं ट्राम को चाहती हूँ। उसका अपराध ही क्या है? मुझे पैट्रोल की गन्ध आती है। वे उसे जलाने जा रहे हैं। सामर को उसका रिवालवर देकर मैं क्षण-मात्र में खरंजा पार करती हूँ, और नाली फलाँग कर ट्राम पर चढ़ जाती हूँ। मेरा यह साहस देखकर वे सब पिछली ओर से आते हैं परन्तु मैं किसी को प्लेटफ़ार्म पर चढ़ने नहीं देती।

'चुप रहो। इसे जलाओ मत। ट्रामगाड़ी हमारी मित्र है।'

नीचे की ओर से घोड़ों की टापों का शब्द सुनाई देता है। गोलियों की आवाज़ भी होती है। लोग तितर-बितर हो जाते हैं। मैं इञ्जिन के पास सिकुड़ कर बैठ जाती हूँ। और भी गोलियाँ छूटती हैं। अब ट्राम के आस-पास कोई नहीं है। केवल मैं ही उसके अन्दर बैठी रहती हूँ। कुछ गोलियाँ खिड़कियों पर लगती हैं। शीशों के टुकड़े इधर-उधर बिखर जाते हैं। मुर्ग़ा मेरी बग़ल से निकल कर गोलियों के डर से सीटों के ऊपर-नीचे और खिड़कियों की देहलियों पर कूद-फाँद रहा है। जहाँ मैं छुपी हुई बैठी हूँ वहाँ से मैं सामर और विलाकम्पा को देख सकती हूँ। वह अपने कोटों के कालर चढ़ाये हुए और टोपों को नीचे किये हुए फ़ायर कर रहे हैं। कोनों में खड़े हुए अन्य सभी मज़दूर फ़ायर कर रहे हैं। घोड़ों की टापों का शब्द समीपतर आता हुआ सुन पड़ता है। सड़क श्मशान सदृश जनशून्य है। ट्रामगाड़ी पर इस प्रकार तड़ातड़ गोलियाँ पड़ रही हैं मानो धूप से तख़्ते चटख रहे हैं। मैं बहुत देर तक नेत्र बन्द किये रहती हूँ। दूर से मैशीनगन की खड़खड़ाहट सुन पड़ती है। चार-पाँच बाढ़ों के पश्चात् वह खड़खड़ाहट फिर सुनाई देती है और फिर रुक जाती है। तदनन्तर मुझे अपने चारों ओर टापें सुनाई देती हैं। मुझे कोई पुकारता है। 'यह मुझे गिरिफ़्तार करनेवाले हैं।' मैंने समझा। मेरा चमकीला रिवालवर मेरी टोपी में लिपटा हुआ है। एक और कह रहा है—

'वह मुर्ग़ा। उसे पकड़ लो।'

मुँह पर से हाथ हटाने के पूर्व मैं थूक के आँसू लगा लेती हूँ। गार्ड मुझे सांत्वना देते और पूछते हैं—'क्या तुम्हें भागने का अवसर नहीं मिला।' वे समझते हैं कि मैं एक मुसाफ़िर हूँ। गाड़ी पर आक्रमण आरम्भ हो जाने के कारण मैं वहीं बैठी रह गई। मैंने अपना मुर्ग़ा माँगा। एक गार्ड उसकी टाँगें पकड़े उलटा लटकाये हुए ले आया, मुर्ग़े ने गर्दन मोड़कर उसके हाथ पर चोंच मारी। मैं उसे बग़ल में दबाकर बड़े इतमीनान के साथ उस समीपवर्ती गली की ओर बढ़ी, जहाँ कि अपने विचार में मैंने सामर को देखा था। जब मुझे यह भय होने लगा कि मैं उनको न पा सकूँगी तो वे सहसा एक द्वार से निकले। विलाकम्पा मुझसे रुष्ट था। वह ट्रामगाड़ी के प्रति ईर्ष्या से जला जा रहा था। उसने एक ओर द्वार में जाकर अपना रिवालवर जूते के अन्दर छिपाया। सामर ने मुझे आँख भरकर देखा। वह शान्त तथा आत्मनिष्ठ है जैसा कि वह सदैव इस प्रकार के छोटे-से संकटों के समाप्त हो जाने पर हुआ करता है। वह कहता है।

'पहले तुमने मेरा चुम्बन क्यों लिया?'

मैंने कंधे उचकाकर कहा—

'क्योंकि तुम मुझे अच्छे मालूम होते हो।'

उसने मुझे एक अद्भुत भाव से देखा। मैंने फिर कहा—

'अच्छा, देखो—मैं विलाकम्पा को भी पसन्द करती हूँ, परन्तु मैंने उसको चुम्बन नहीं किया।'

इस गली में बूर्ज्वा लोग रहते हैं। मनुष्य के नाम पर एक चिड़िया भी नज़र नहीं आती। विलाकम्पा द्वार से बड़बड़ाता हुआ निकलता है। मैं नहीं जानती कि आया वह मुझसे ट्राम गाड़ी बचाने के अपराध में नाराज़ है या कामरेडों के प्राण बच जाने के कारण मुझसे प्रसन्न है। किंतु मैं यह जानती हूँ कि वह इस समय मुझे आँखें मिला कर देखेगा नहीं।

हिंसा के गुणों पर विलाकम्पा के विचार

मेरे घर पर मेरे साथ खाना खाने के बाद, सामर और स्टार को छोड़ कर, अन्य लोग यहाँ से चले गये हैं। मुझे यह मालूम नहीं है कि स्टार और पत्रकार कहाँ ठहरेंगे। किंतु इन दोनों का सदा एक विचार हुआ करता है। स्टार को रिझाने के लिए मुझे फिर लाल टाई और पामेड का प्रयोग करना पड़ेगा। उनके बूर्ज्वा न होते हुए भी स्त्रियों पर टाइयों और साफ़ बालों का बहुत प्रभाव पड़ता है। कभी-कभी ऐसे भी अवसर आते हैं जब, यदि मेरी स्टार के साथ बात तय हो जाय, मैं उसको सामर से अलग ले जा सकता हूँ। किन्तु यह बात कठिन है, क्योंकि ये दोनों सदैव मेरा विरोध ही किया करते हैं। यही इस बात का एक मात्र कारण है कि मैं इन दोनों को एक दूसरे का समर्थन करते देखकर चिढ़ जाता हूँ। अन्यथा, मुझे इन दोनों के

साथ-साथ रहने की कुछ भी परवाह नहीं है। स्वयं मेरे मन में यह बात कभी नहीं आई है कि संगठन या कार्य-संबंधी विषयों को छोड़कर मेरा स्टार के साथ कोई और नाता भी हो सकता है।

स्टार के आग्रह करने पर ऐसे कार्तूसों की खोज में जो उसके रिवालवर में फ़िट आएँ मैंने अपने सारे हथियार उलट-पलट डाले हैं। उसके रिवालवर को देखने से ऐसा मालूम होता है कि वह खिलौना है। उसमें इतनी छोटी गोली आएगी जो ज़खमी करने या प्राण लेने की अपेक्षा मुँह पर मलनेवाला पाउडर उड़ाने के लिए अधिक उत्तम होगी। परन्तु मुझे एक कारतूस मिल ही गया जिसका नं० ५ था। वह एक रंगा हुआ खिलौना-सा है। बिलकुल नया। उसको हाथ में लेकर उसका वज़न देखा, उसको उंगलियों में फिराकर देखा। तब मैंने कहा कि लाओ रिवालवर में भर दूँ किंतु उसने मेरे हाथ में से रिवालवर छीन लिया।

'अभी नहीं। उस क्षण के आने पर मैं स्वयं उसे वहाँ रख लूँगी।' हमने छोटा-सा मज़ाक भी किया। 'वह किसको मारना चाहती है?'

'उसका शत्रु कौन है?' 'स्टार की बात को कौन बुरा मान सकता था?'

सामर तक ने तो उसका उपहास किया था। किन्तु हँसने में उसने हम दोनों को परास्त कर दिया। उसने जेबी-चाकू की नोक से कारतूस के मुँह पर क्रास का निशान बनाना चाहा। मैंने उसको बतलाया कि यह निशान केवल उन गोलियों पर बनाया जा सकता है जिनके सिरे खुले हुए होते हैं। मैंने उसे कई कारतूस दिखलाये जिन पर यह निशान बने हुए थे। इसका परिणाम यह होता है कि गोली घूमती हुई क्रास के रूप में फटती है और शरीर को बहुत हानि पहुँचाती है। कभी कभी ऐसा भी हुआ है कि ऐसी गोली पेट में घुसकर आँतों, फेफड़ों इत्यादि सभी के टुकड़े उड़ाती हुई कन्धे से बाहर निकल आई

है। वह चीर फाड़ का कार्य खूब करती है। तत्पश्चात् मैंने गोली पर चाकू की नोक से उसके नाम के प्रथमाक्षर 'S. G.' खोद दिये। उसने सामर को चाक़ू और गोली देते हुए कहा—

'यह लो। अपने नाम के भी प्रथमाक्षर खोद दो।'

सामर ने 'S. G.' के नीचे 'L. S.' खोद दिया और मुझसे भी अपने प्रथमाक्षर खोद देने को कहा। परन्तु स्टार ने मेरा हाथ रोककर कहा—

'नहीं। नहीं। केवल मेरे और सामर के नाम ही रहने दो।'

निस्सन्देह यह मुझे बहुत बुरा मालूम हुआ। यह भेदभाव क्यों? मैंने एक क्षण के लिए उसे रुष्ट भाव से देखा। उसने मुँह बनाकर जीभ निकाल दी। यह लड़की होशियार होने का स्वांग भरती है, और उसकी मूर्खता भी दूसरों को भुलावे में डालने का एक साधन मात्र है। मैं उसे भलीभाँति समझता हूँ। मैं यह जानता हूँ कि यह सब बनावट है। मैं उसके रहस्यपूर्ण आचरण और रिवालवर से बुरी तरह ऊब गया हूँ। रिवालवर का कैसा ढकोसला बना रक्खा है: अधिक से अधिक वह आँखें मींचकर किसी बर्तन पर गोली चलायगी। ये लड़कियाँ न तो क्रांतिकारिणी हैं और न कुछ और ही। ये तो बस लोगों के बाजों के ऊपर रक्खे हुए गुलदानों की तरह हैं—सुकुमार और सुदर्शन—केवल दिखावा मात्र! यदि ये चाहती हैं कि हम लोग इन्हें गुरु-गम्भीर समझें तो इन्हें एक ज़रा-सी टाई या साफ़-सुथरे सिर पर रीझना छोड़ देना पड़ेगा!

अब चूँकि स्टार ने मेरे विनाशकारी अस्त्रों के भण्डार को उथल-पुथल कर दिया है मैं उन्हें गिनकर और साफ़ करके यथा स्थान रखता जा रहा हूँ। इसी बीच में जब कि मैं अपने रिवालवर को खोलकर, टुकड़े-टुकड़े अलग करके, तेल में डूबे हुए कपड़े से साफ़ कर रहा हूँ मेरे मस्तिष्क में न जाने कैसे विलक्षण विचार उठने लगते हैं। उनका सम्बन्ध

क्रांति से है। कुछ दिनों से मुझे यह पूर्ण विश्वास हो गया है कि सामर के समान मनस्वी होने के लिए अद्भुत विचारों का होना आवश्यक है। मुझे यह चिन्ता लगी हुई है कि सारे काम हमारी इच्छा के अनुसार हों, बूर्ज़्वा लोग तोंदें खोले हुए हमारे पास आएँ और हम उनमें छुरे भोंक दें। और फिर उसी समय सब मिलकर गाने गायें, जैसे कि मैंने बार्सिलोना में सुने थे—उद्यानों में वसन्तऋतु के स्वागतार्थ खुशी के गीत। और जब बूर्ज़्वा न रहेंगे तो हम सब मिलकर गाएँगे और एक नये धर्म का निर्माण करेंगे। उस धर्म का मूलाधार परिश्रम होगा—उत्पादन के आँकड़ों का उसमें एक महत्त्वपूर्ण स्थान होगा। तब ईर्ष्या तथा द्वेषरहित भाव से सब पुरुष एक दूसरे को आँख मिलाकर देख सकेंगे, और जब हम स्त्रियों की ओर उस उन्मत्त भाव से देखा करेंगे जिससे कि हम उनको कभी-कभी गलियों में देखा करते हैं तो उनका मुख लज्जा से लाल नहीं हो उठेगा। हर बात उचित रूप से हुआ करेगी—जिस प्रकार पौधे यथोचित धूप और जल पाकर फलते-फूलते हैं उसी प्रकार हमारे बच्चे भी निष्कलंक और सुखी होंगे। हम प्रसन्न-चित्त और दयालु होंगे। हममें उस भावुकता का लेशमात्र भी न होगा जिसके कारण लड़कियाँ अपने उरोज पूरी तरह बढ़ने नहीं देतीं, छोटी लड़कियाँ दुबली-पतली बनी रहती हैं और हजामत बढ़ाए हुए स्थूलकाय पादरी विधवाओं के पीछे घूमा करते हैं।

रिवालवर को अन्दर से साफ़ करने के पश्चात् मैं कपड़ा निकालता हूँ तो उस पर धुआँ के धब्बे देख पड़ते हैं। अन्तिम गोली कब छूटी थी? क्या मैंने उसको आज प्रातःकाल अलकला में, ट्राम गाड़ी के मामले में, छोड़ा था? मेरी गोली किसी भी गार्ड के नहीं लगी और न किसी गार्ड के घोड़े ही के। जैसे ही मैं घोड़ा दबाने जा रहा था वैसे ही गोली के मार्ग में एक सफ़ेद दाढ़ीवाला बुड्ढा बैसाखी के सहारे चलता हुआ आ मौजूद हुआ। उसके कन्धों के चारों ओर एक काला

शाल लिपटा हुआ था और उसके जूते बहुत साफ़ और चमकीले थे। वह लँगड़ा था, उसकी मुखाकृति से विषाद और रुलाई टपक रही थी। उसने मार्ग में आकर गोली रोक ली। उसकी बैसाखी उड़कर एक तरफ़ जा पड़ी, उसका टोप गिर पड़ा और वह स्वयं एक पक्षी के सदृश खरंजे पर ढेर हो रहा। इस बात से वास्तव में मुझे बड़ा धक्का लगा। परन्तु युद्ध में इससे कहीं अधिक करुण दृश्य वह होता है जब किसी मकान पर गोला गिरता है और स्त्रियों और बच्चों के प्राण लेता है, पर इससे युद्ध में कोई बाधा नहीं पड़ती। हमारा भी यही हाल है। इसके अतिरिक्त, एक लँगड़ा आदमी जीवित रहकर भी क्या कर सकता है, विशेषतया जब कि वह श्वेत दाढ़ी रखता हो और बूर्ज्वा क़िस्म के पेटेन्ट चमड़े के जूते पहनता हो। मेरा रिवालवर अब साफ़ है। उपरोक्त घटना को इस नूतन दृष्टिकोण से देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है मानो मेरे रिवालवर की नाल शीशे की बनी हुई हो। किन्तु मैं अपने मस्तिष्क से उस काले शाल की स्मृति नहीं भुला सकता। वह कौआ सदृश काला था। लँगड़े के गिरते समय वह किस बेहूदी तरह घूमा था। एक मोटर ड्राइवर ने जो उस समय मेरी बग़ल में खड़ा हुआ था मुझे बाद में बतलाया कि वे लोग उसको एम्बुलेंस में डाल कर अस्पताल ले गये हैं। उसने आँख मारकर यह भी कहा था, 'वे उसकी पूरी छीछालेदर कर देंगे।'

मैं उसकी बात का विश्वास करता हूँ। जो लोग अस्पताल जाते हैं वे लौटकर नहीं आते। वह मौतघर है। मैं अपने रिवालवर पर फिर पॉलिश करता हूँ। जब मैं अब फिर उसके अन्दर झाँककर देखता हूँ तो वह शीशे से भी अधिक उज्ज्वल प्रतीत होता है मानो उसके अन्दर बिजली जल रही हो। वह पदक की तरह चमकीला है। बूर्ज्वा लोग काले शालोंवाले बहुत-से पक्षी पालते हैं। पादरियों जैसे चुग़ेवाले पक्षी। मुझे यह जान पड़ता है कि जब मैं रिवालवर को मेज़ पर रख

देता हूँ तो मैं उस बुड्ढे की बात भूल जाता हूँ ; परन्तु जब मैं उसे हाथ में उठा लेता हूँ तो फिर उसकी याद सताने लगती है। ऐसा प्रतीत होता है कि इन अस्त्रों में भी चेतना शक्ति है। जब हम उस सामान की दूकान पर आक्रमण कर रहे थे तब मैंने अपनी गोली से एक गार्ड का टोप गिरा दिया था। यह एक बहुत बढ़िया मज़ाक था। मुझे अपना रिवालवर यह कहता हुआ-सा प्रतीत हुआ : 'अच्छा मित्र, अब आइन्दा यह याद रखना कि मुझसे वार्तालाप करते समय तुम्हें अपना टोप अवश्य उतार लेना चाहिये।'

मैंने रिवालवर साफ़ किया, उसमें टाइपराइटरवाला तेल दिया, जिसकी खूबसूरत शीशी एक शिलिंग में मिलती है, और इसके बाद उसमें कारतूस भरे। उसके भण्डार में एक ओर केवल एक ही कारतूस बचा हुआ था। मेरी समझ में नहीं आता कि इतना शोर गुल क्यों हो रहा है। मेरे विचार में वह बहुत-सा सीसा व्यर्थ खो रहे हैं।

मेरी अलमारी में एक पॉकेटबुक रखी हुई है जिसमें शाही ज़माने के तीन नोट भी हैं। उन पर फ़िलिप द्वितीय की मूर्ति है और एस्कोरियल का चित्र है। मैंने केवल केस ही रख छोड़ा है। मेरी तबियत कुछ भी करने को नहीं कर रही है। मैंने पीछे की जेब में रिवालवर रख लिया है। मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं कुछ मोटा हो गया हूँ। मुझे इस विचार से सुख मिलता है। यदि मकानवाली यहाँ आई तो मैं उसे बताऊँगा कि गायें फ़िलिप द्वितीय का सिर और एस्कोरियल के पत्थरों को क्यों खाया करती हैं। स्वयं उसका सिर गाय-जैसा है और मुझे ऐसा याद पड़ता है कि जब वह पशु-चर्म जैसी खाल वाले हरामखोर निखट्टू पति से लड़ा करती है तो वह गाय के समान डौंकती है। अपनी जेब में रिवालवर देख कर मैं प्रसन्न हूँ यद्यपि आज कल ऐसे दिन हैं कि जेबें फट जाती हैं। तो भी मेरी जेब फटेगी नहीं, क्योंकि मैंने उसमें चमड़े का अस्तर लगाया है। गली में आम हड़ताल का दृश्य है। गोला

बारूद से भरी हुई दो गाड़ियाँ आई हैं। हमने युद्ध के लिये रुपया जमा किया है; फेडरेशन कमेटी अब पूरी बन गई है और उसको कार्य करने की पूरी स्वतंत्रता है। अब हम आगे बढ़े जा रहे हैं। ऊपर चढ़ रहे हैं। हिंसा–जैसा कि मेरी रात की मेज़ पर पानी की सुराही के नीचे दबे हुए पैमफ़्लेट में किसी ने ख़ूब कहा है—हिंसा समस्त क्रियाओं तथा प्रतिक्रियाओं का उद्गम-स्रोत है। किन्तु इस गंदे बूर्ज्वा संसार में कुछ ऐसी कुव्यवस्था देख पड़ती है कि हम प्राकृतिक भी नहीं हो सकते जिसे लोग प्राकृतिक होना कहते हैं—क्योंकि ऐसे हो जाने से हिंसा हद से ज़्यादा बढ़ जाएगी।

लो वह मकानवाली आ रही है। उसके बोलने से पहले ही मैं पूछता हूँ—

'तुम्हें रुपया चाहिये?'

'नहीं।'

'क्या गाय का पेट शाही बंक नोटों से भरा हुआ है?'

वह बिना उत्तर दिये कंधे उचका देती है। मुझे सहसा चची आइज़ाबेला की बात याद आ जाती है और मैं द्वार को इंगित करके कहता हूँ—

'तो फिर जा नरक में, हरामज़ादी कहीं की!'

वह चीखती हुई भाग खड़ी होती है। हर एक प्राकृतिक कार्य हिंसात्मक होता है। इसके बाद उसका पति आता है और उसके कुछ कहने के पूर्व ही मैं प्रश्न करता हूँ—

'क्या तुम मुझ पर आक्रमण करने आये हो?'

'नहीं तो।'

'मुझे कहवा पीने कि लिए बुलाने आये हो?'

'यह सब क्या बक रहे हो।'

मैं उसको भी द्वार का संकेत देता हूँ।

'यदि तुम मुझसे बात-चीत करने आये हो तो मैं पहले ही से बतलाये देता हूँ कि मैं निकम्मे आदमी से बात नहीं करना चाहता।'

वह भी चला जाता है। बात तो बिलकुल पूरी उतरी। परंतु मुझे हिंसा इसमें स्पष्ट देख पड़ती है। किन्तु यह हमारी सभ्यता की मूर्खता है जो स्टार भी ज़्यादा मूर्ख है। यदि जेब में रिवालवर पड़ा हो, सड़क पर साथ में कामरेड हों, और आत्मा क्रांति से ओतप्रोत हो, तो हमें ईश्वर समझो, या उससे भी कुछ ज़्यादा! इसके अतिरिक्त सभी कुछ दुर्बलता है, उसमें मानो किसी रोगी के पसीने जैसी दुर्गन्ध आती है। परन्तु अब वे लोग अपनी उङ्गलियों के जोड़ों से दरवाज़ा खटखटा रहे हैं।

'अन्दर चले आइये।'

अरे यह तो सेविका निकली। एक ग़रीब लड़की, बिलकुल नव-यौवना और सुन्दरी। इतने दिनों तक मृत्यु से एकदम गुथ-पुथ रहने के पश्चात्, आज मुझे नशा-सा चढ़ा हुआ प्रतीत हो रहा है। जब मैं यह सोचता हूँ कि मेरे रिवालवर का भीतरी भाग बिलकुल काँच जैसा उज्ज्वल है तो यह नशा मेरे सिर पर बुरी तरह सवार हो जाता है, और मेरे रविवार के सबसे बढ़िया वस्त्रों को नोच खसोट कर मुझे काँटों के ढेर पर लिटा देता है। लो सेविका तो यहाँ मौजूद है ही। ऐसा प्रतीत होता है कि मकानवाली या उसके पति को अब यहाँ आने का साहस नहीं होगा। यह लड़की भी इतनी भयभीत है कि उसके मुखसे एक शब्द भी नहीं निकल सकता और वह मेरी ओर भयाकुल दृष्टि से बराबर देखे जा रही है।

'तुम यहाँ क्यों आई हो? यदि तुम शुद्ध भाव से काम करनेवाली होती तो तुम हमारे पक्ष में होती। किंतु तुमको तो पादरियों ने फाँसा दे रक्खा है और इसका यही परिणाम है कि तुम्हें कमरों में झाड़ू लगाने और किरायेदारों से अपने नितंब नुचवाने के अतिरिक्त कोई और काम आता-जाता ही नहीं!'

अब तो लड़की की आँखें फट-सी गईं और उसके मुँह से झाग निकलने लगा। अब फिर प्राकृतिक क्रियाका अर्थ हिंसा हुआ। मैं अधीर हो उठता हूँ।

'अरे, तुम्हें क्या करना है? तुम झाड़ू देने आई हो या अपने नितंब नुचवाने?'

अब और भी ज़्यादा डर कर वह सिसकी भरती हुई कहती है—

'वह मरा जा रहा है।'

'वह क्या?'

'डॉन फ्रीडेल।'

मैं उसका तात्पर्य नहीं समझ पाता।

'अरे, ज़रा पास आकर कहो।'

वह कुछ चौंकी, परन्तु फिर सहज भाव से हाथ पीछे रक्खे हुए वह मेरे पास चली आई। किन्तु जब उसने मुझे हँसते हुए देखा तो उसने ऐसा मिस किया मानो वह अपना साया ठीक कर रही हो।

'अब कहो क्या कहती हो! उस मूर्ख बुड्ढे को क्या हुआ है?'

'वह मरा जा रहा है।'

'वह मरणासन्न है। मेरे बाहर जाते समय तुम भी कैसी अच्छी ख़बर लेकर आई हो!'

लड़की जल्दी-जल्दी छोटे-छोटे क़दम रखती हुई बाहर चली जाती है। द्वार पर पहुँचकर वह मुड़ी, मानो वह कुछ कहना चाहती थी, परन्तु वह कुछ बोली नहीं। मैं अपने लोगों के साथ इस प्रकार का व्यवहार नहीं करता, परन्तु बूर्ज्वा लोगों के साथ ऐसा करने को विवश-सा हो जाता हूँ। यह डॉन फ्रीडेल एक बुड्ढा आदमी है जो तम्बाकू का काम करता है। वह सख्त कालर और कफ़ पहनता है और हमेशा अपने एक चचा का ज़िक्र किया करता है, जो कार्ल के ज़माने में जनरल था, जिसको, उसके कथनानुसार, लिबरलों ने गोली से मार

दिया था। जब मैं उसकी इस बात पर सन्देह प्रकट करता हूँ तो वह शपथ खाकर कहा करता है कि उसके देहाती घर में एक शीशे के पात्र में अभी तक वह रुमाल सुरक्षित रक्खा हुआ है जिससे मरते समय जनरल की आँखें बन्द की गई थीं। इस बुड्ढे ने यहाँ सबसे अच्छा कमरा किराये पर ले रक्खा है और सभ्यता की प्रगति का वह जानी दुश्मन है। अगर उसका बस चले तो वह सारे अराजकवादियों और साम्यवादियों को गोली से मार दे। जब कभी भी वह समाचार पत्र में यह खबर पढ़ता है कि मज़दूरों के प्रतिनिधि प्रेसीडेंट के पास कोई शिकायत लेकर गये हैं तो उसे क्रोध का दौरा-सा हो आता है और वह झल्लाकर कहता है—

'वह इन लोगों से मिलता ही क्यों है?' उसके मुँह से क्रोध के मारे झाग गिरने लगता है। 'इन बदमाशों की अच्छी तरह, खूब अच्छी तरह, मरम्मत कर देने की ज़रूरत है।'

चूँकि उसकी यह धारणा है कि गृहस्थी के चक्कर में पड़कर मनुष्य बिलकुल उल्लू बन जाता है और इस भय से कि बीबी उसे पूरा बैल बना देगी उसने अब तक शादी नहीं की है। वह कभी-कभी किसी गली-गली मारी फिरनेवाली वेश्या को दो-चार शिलिंग देकर अपनी विषयवासना शान्त कर लेता है। उसका कमरा मेरे कमरे से मिला हुआ है। एक दिन मैंने उसे ज़ोर से प्रार्थना करते हुए सुना। मालूम होता है कि वह ईश्वर से अधिक सन्तुष्ट नहीं है। वह कह रहा था—

'तूही मुझे मोह में फँसा देता है और फिर मुझे बीमारी भी लग जाने देता है। अरे, परमेश्वर, यह तो एक अनुचित बात है।'

और आज वही बुड्ढा मरणासन्न है। जब मैं बरामदे में से होकर जाता हूँ तो रसोई घर से रोने पीटने की आवाज़ आती है। तो क्या वह सचमुच मर गया! उसे मरते हुए देखना तो एक तमाशा देखने के समान मनोरंजक होगा! मैं उसके कमरे में घुसता हूँ।

प्रकाश बहुत धीमा है। खिड़कियाँ बन्द हैं। एक कोने में, चादर के ढेर के अन्दर से दुर्गन्धपूर्ण उलटी साँसे निकल रही हैं मानो बन्द गोभी उबल रही है। मैं मुँह बन्द करके नाक से साँस लेता हूँ और जब तक मेरे फेफड़ों में खूब हवा नहीं भर जाती और मैं निश्वास नहीं छोड़ पाता मैं मौन रहता हूँ। मकानवाली और उसका पति रोगी के दोनों ओर बैठे हुए हैं। वह मेरी ओर संदिग्ध दृष्टि डालते हैं और मकानवाली क्षमा प्रार्थना करती है मानो उसने कुछ देर पहले मेरा द्वार खोलकर कोई अपराध किया हो। मेरे विचार में हिंसा असभ्य है, परन्तु चूँकि वह स्वाभाविक है लोग उसका सम्मान करते हैं। इन्हीं लोगों को देखो। कुछ ही मिनट पूर्व मैंने उनके सम्बन्ध में दो एक अप्रिय किन्तु सच्ची बातें कही थीं, फिर भी—निस्सदेह उनके हृदय में डॉन फ्रीडेल के प्रति जो आदर भाव है वह भी बड़ी हद तक उनके इस शिष्टाचार कें लिए उत्तरदायी है। मृत्युशय्या के समीप मेरे लिए स्थान करने के लिए जब मकानवाली उठ खड़ी होती है तो वह इत्तफ़ाक़ से खिड़की का पट बन्द कर देती है। उसका पति मुझसे उसको खोल देने की प्रार्थना करता हुआ कहता है—

'खुली हवा से मृत्यु-पीड़ा कम हो जाती हैं।'

मैं इस संकटावस्था में किंकर्तव्यविमूढ़-सा देख पड़ता हूँ। मेरी समझ ही में नहीं आता कि क्या करना या कहना चाहिये। अन्दर क़दम रखते ही बस यही जी चाहता है कि नाक बन्द करके थूके जाऊँ। वह मुझे रोग का नाम बताकर विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वह साध्य है किन्तु मैं सोचता हूँ कि यह जितनी जल्दी मरे उतना ही अच्छा है। शुभस्य शीघ्रम्। गृहाध्यक्ष रोगी को चमची से पानी पिलाता है। मैं उससे कहता हूँ—

'आप क्यों व्यर्थ सेवा कर रहे हैं? यह बचेगा तो है नहीं, फिर क्यों मुफ़्त परेशान हो रहे हो।'

यह बात मकानवाली को इतनी भद्दी मालूम होती है कि वह अपने पति का पक्ष लेकर ज़ोर से कहती है—

'इनका यह अन्तिम समय तो सचमुच है ही।'

उसका पति कहता है—

'परन्तु इतने ज़ोर से मत बोलो। वह सब बातें समझता है। वह होश में है।'

'वह सब समझता है?'

मैं मन ही मन कहता हूँ—'इन्होंने भी क्या ढकोसला बना रक्खा है!' मालिक मकान रोगी को आवाज़ देता है—

'डॉन फ़ीडेल, प्रिय डॉन फ़ीडेल!'

मेरे मन में हँसने की क्रूर इच्छा प्रबल हो उठती है, विशेषतया जब कि मैं मकान मालिक को एक आँसू पोछते हुए देखता हूँ। वह बारम्बार कहे जा रहा है—

'डॉन फ़ीडेल!'

और रह-रहकर वह डॉन फ़ीडेल की सोने की घड़ी को देखता जाता है जो मेज़ पर रक्खी हुई है। उसकी दृष्टि रोगी की जेब से निकली हुई तम्बाकू की डिबिया पर लगी हुई है जिसके सम्बन्ध में वह सोच रहा है कि यह अवश्य चाँदी की होगी। अवसर पाकर वह रोगी को मेरे आने की सूचना देते हैं। वह मेरी ओर अपनी निष्प्रभ दृष्टि उठाता है। फिर कुछ कहे विना आँखें बन्द कर लेता है। उन्होंने उसके पेट पर एक सलीब रख दी है और उसके एक कान के समीप पवित्र वस्त्र। थोड़ी ही देर बाद बरामदे से बातचीत की आवाज़ आती है। वह तौलिया जिससे मकानवाली रोगी की मक्खियाँ उड़ा रही थी और उसको हवा झल रही थी मेरे हाथों पर डालकर वह द्रुतगति से बाहर चली जाती है। फिर वह द्वार में खड़ी होकर पति को प्रसन्न भाव से बुलाती है। उनके उत्साह को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आग-

न्तुक कोई बड़ा आदमी अवश्य है। मैं हाथ में तौलिया लेकर डॉन फ्रीडेल की शय्या के पास खड़ा हो जाता हूँ। मैं गृहपत्नी के सदृश तौलिया जब-तब रोगी के शिर पर झपक देता हूँ। परन्तु ऐसा करने की मेरी इच्छा नहीं है। मुझे तो इस समय सांडों के दंगल की याद आ रही है और हर बार तौलिया फेरते हुए मैं ज़ोर से कहता जाता हूँ—

'ओली!'

और फिर बाँए से दाएँ फेरते हुए—

'फिर मुड़ चलो।'

मुझे तो जाने की जल्दी थी; किन्तु रोगी को मरने की कोई जल्दी नहीं मालूम होती थी। मृत्यु ने केवल उसकी मुद्रा को उग्र बना दिया है। इसके अतिरिक्त और कोई बात नहीं देख पड़ती। मैं बरामदे में जाकर गृह-पत्नी को तौलिया देकर बाहर जाने लगता हूँ।

'डॉन फ्रीडेल का क्या हाल है?' वे ऐसे स्वर में पूछते हैं मानो वे उसकी मृत्यु का समाचार सुनने की आशा कर रहे हों।

मैं चलते-चलते उत्तर देता हूँ—

'वह सदा का आलसी इतना शरमदार नहीं है।'

मैं गली में जा पहुँचता हूँ। बूर्ज्वा लोग न तो मनुष्य हैं और न पशु ही। उसका महत्त्व न्यूनतम है। वह कुछ भी नहीं है। मुझे एक बूर्ज्वा की मौत की क्या चिन्ता, जब कि मैं स्वयं उन्हें गोली से मारने के लिए यहाँ आया हूँ?

सामर, अम्पारो, और मुख़बिर का अन्त

उद्यान के भीतर बने हुए एक ग्रीष्म-निवास के अन्दर मैं अम्पारो के साथ बैठा हुआ हूँ। हमसे थोड़ी ही दूर पर उसकी चची बैठी हुई अपना काम कर रही है। हम उसको हरी-हरी पत्तियों में से देख भी सकते हैं। यह कुञ्ज अर्ध-नारंगी के आकार का है, इसमें चारों ओर हरी-हरी बेलें हैं जिनमें सुन्दर पुष्प खिले हुए हैं। यहाँ की बूर्ज़्वा-सुषमा और शांति से मुझे क्षोभ होता है। मुझे यह देखकर कि अरदली लोग कर्नल की तरह ही मेरा सम्मान करते हैं लज्जा आती है। मुझे यह स्मरण है कि जब मैं सर्विस में था तो मुझे अपने अफ़सरों के घरवालों तक से द्वेष हो गया था। यहाँ आने से मेरे हृदय में एक दुःखजनक अनुभूति उदय हुई है और वह यह है कि मैं मानो एक दुरात्मा बूर्ज़्वा हूँ जिसके होश-हवास रफ़ूचक्कर हो गये हैं और जो चारो हाथ-पैरों पर

बड़ी शान से मटक-मटककर चल रहा है। इसके अलावा, मेरे हृदय और मन में एक झंझावात-सा उठ रहा है। पहले तो मैं अपने आपको अम्पारो के मकान में पाता हूँ, दूसरे वह मेरे पास उपस्थित है, और तीसरे मेरे सामने वही पुरानी जटिल समस्या उठ खड़ी होती है—क्या मुझे पहाड़ के पास जाना होगा या पहाड़ मेरे पास चला आयगा? या मैं अपनी प्रेयसी के घात द्वारा पहाड़ से एक दम नाता ही तोड़ डालूँ? मुझे प्रत्येक दशा में बर्फ़ीले मार्ग से गुज़रना है—बर्फ़ ऐसी भयंकर है कि मेरा सारा शरीर जला जा रहा है—और मैं व्यर्थ ही अपने आपको धोखा देने की चेष्टा कर रहा हूँ। मैं पहाड़ पर भी हो आया हूँ। जब मैंने सुन्दर सितमणियों में सूर्य-रश्मियों को प्रतिबिंबित होते हुए देखा तो मैं सहस्रों क्रकचायतों के रंग-बिरंगे प्रकाश से चौंध्या कर उनकी ओर अग्रसर हो गया। परन्तु यहाँ तो सूर्य अणुओं को विच्छिन्न करता और मृत्युजनक रूप धारण करके आता है। फिर मैंने वायु का सन्देश कान लगाकर सुना। उसके श्वास में मृत्यु का एकाकीपन था, वह सर्वव्यापक दुःख से रुदन कर रहा था। बर्फ़ की स्फटिक मणियों के साथ उनके विभिन्न रंगों के बाग़ों में बैठकर मैं न जाने कितनी देर तक स्वप्न देखता रहा। सर्दी से मेरी त्वचा जली जा रही थी। मेरे सिर के और तीन दिन बढ़े हुए ठोडी के बालों में हवा की तीव्रता मालूम होती थी। जब वह मेरे ठिठुरे हुए लाल हाथों को काटती हुई-सी आती थी तो मैं प्रसन्न हो उठता था। मैं पर्वत शिखर पर अकेला था, बिलकुल एकाकी, संसार से बहुत दूर, बर्फ़ और वायु के लोक में, इतने ऊँचे धरातल पर! इस जाफ़रानी और नीले पर्वत-मण्डल में आना, बर्फ़ के स्फटिकों और क्रकचायतों के मध्य में शीत से ठिठुरना, समस्त पर्वत शिखरों की सर्दी से अधिक बलवान् अंतराग्नि से अपने आपको गरमाने का अनवरत प्रयत्न करना, और यह स्वप्न देखना कैसा विलक्षण था—'इन पर्वत शिखरों की शीतल धवलता

में नीचे का सारा मालिन्य विलीन हो जायगा, पापों की भाप उड़ जायगी, सारा बूर्ज़्वा भ्रष्टाचार ग़ायब हो जायगा। अम्पारो हिम सदृश पवित्र तथा स्वच्छ है और मेरे हृदय का सूर्य उसको सोखकर और पिघलाकर सुख के रंगीले उद्यानों की सृष्टि कर रहा है। मेरे सिर के ऊपर वायु ज़ोर से चीख़ रही है। वह शैलश्रृङ्गों की विजनता और अज्ञात शक्तियों के सामने घुटने टेक देने के अतिरिक्त और कुछ न कर सकने के सर्वव्यापी दुःख की घोषणा कर रही है।'

यह घुटने टेक देना—हिम्मत हार कर बैठ जाना भी कैसा शोचनीय है, जब कि प्रत्येक वस्तु हमसे सिर उठाने को कह रही है, रहस्य का उद्‌घाटन करने का, बूर्ज़्वा दैवाधीनता का निषेध करने का, ढोंग पन्थियों के रहस्यवाद का मूलोच्छेद करने का निमंत्रण दे रही है! हिमाच्छादित पर्वत श्रृङ्गों को, इन्द्रधनुष के रंग बिरंगे प्रकाश को ठुकरा देना, निर्जनता की वायु का विरोध करना और सूर्य के विरुद्ध क्रान्ति की पताका उठाना—यह है वीरों का काम। यदि वायु रोती है तो हम अपने विनोदनाद से उसकी कराह को दबा देंगे, उसके लिए हमारे सामने हार मान लेने के सिवाय और कोई चारा ही नहीं है। वह नीचेवाला नगर हमारे कुसुमित लतागृह के परे है। गलियों में मानो भूचाल आया हुआ है। पीले खरंजे पर मनुष्यों की काली-काली टोलियाँ खड़ी हुई हैं। हर एक कोने में माज़र राइफ़िलें नज़र आ रही हैं! सफ़ेद निर्जन सड़कें। खरंजे पर रेत पड़ी हुई है और जहाँ-तहाँ गार्डों के घोड़ों की लीद! कमान खिची हुई है और एस्पार्टको का वाण आग की तरह लाल हो रहा है। तो क्या, इन सब बातों की उपस्थिति में, हम हिम्मत हारकर भाग खड़े होंगे?

मैं अम्पारो की बग़ल में बैठा हूँ। किन्तु मेरे कानों में स्टार के यह शब्द गूंज रहे हैं—

'तुम्हारा प्रेम पोस्टकार्डोंवाले चित्रों जैसा है!'

अम्पारो यह जानती है कि क्रान्ति मुझे उससे दूर रख रही है। वह अपने आशापूर्ण शब्दों से मुझे चौंका देती है—

'यदि अब साम्यवाद की विजय हो जाय तो फिर हम सदा शान्ति-पूर्वक रहा करेंगे।' उसके स्वर में बच्चों की सी प्रसन्नता है।

मैं कोई और बात सोचता हुआ उसकी हाँ में हाँ मिला देता हूँ। तदन्तर मैं उसकी ओर ध्यान से देखता हूँ। उसके नेत्रों के पीछे कुछ है ही नहीं। पुतलियों तक पहुँचकर सब चीज़ें रुक जाती हुई प्रतीत होती हैं। पर्वत शिखरों और उनकी हिमतारकाओं के समान—बिलकुल वही बात। यह देखकर कि मैं बातचीत नहीं कर रहा हूँ वह क्रांति के प्रति अपना उत्साह दिखाए जा रही है। अन्त में मैं उससे पूछता हूँ—

'क्या तुम साम्यवादी हो?'

'हाँ।'

'किन्तु यह असम्भव है—तुम तो ईश्वर में विश्वास करती हो।'

संकटावस्था का पूर्वाभास करते हुए वह कहती है—

'इस सुख के लिए जो उसने मुझे दिया है मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ। इस बात को छोड़कर मैं और सब बातों में साम्यवादी होना चाहती हूँ।'

'यदि हमारी सहायता करने का—अपनी इस धारणा को प्रमाणित करने का—तुम्हें कोई अवसर मिल जाय तो कैसा हो?'

उसकी आँखें प्रसन्नता से चमक उठीं।

'यद्यपि मैं जानवरों से डर जाती हूँ, विशेषकर बरों और मधु-मक्खियों से मुझे बड़ा भय लगता है, फिर भी तुम्हें यह न समझ लेना चाहिये कि मैं कोई भी ऐसा काम जो एक साम्यवादी स्त्री कर सकती है न कर सकूँगी।'

उसके इस शिशुवत् शब्दों से मेरे हृदय पर छुरी-सी चल गई।

हम दोनों मौन हो जाते हैं। वह इस मौन का अर्थ नहीं समझी। फिर उसने मेरा हाथ पकड़ कर कहा—

'क्या तुम मुझसे प्रेम नहीं करते ?'

मुझे स्टार और चित्रवाले पोस्टकार्डों का ध्यान आ जाता है। मैं कुटिल भाव से कहता हूँ—

'मैं तुमसे कुछ याचना करना चाहता हूँ।'

'वह क्या ?'

'उससे शायद तुम्हारे पिता को कुछ हानि पहुँचे।'

वह असमंजस में पड़ जाती है।

'यदि तुम्हें मुझसे प्रेम है तो तुम उनके विरुद्ध कोई कार्य करने को मुझसे कहोगे ही नहीं।'

मैं उसे अपनी बात समझा देता हूँ। वह काम जितनी जल्दी बन पड़े उतना ही अच्छा होगा। वह काम यह है कि वह तीन छपे हुए सरकारी फार्मों पर नीचे की तरफ़ रेजिमेंट की मुहर लगाकर मुझे लादे। वह बारकों में जाने के आज्ञापत्र हैं। फ़ार्म और मुहर कर्नल के डेस्क पर रखे हुए हैं। यह काम बिलकुल आसान है। बहुत देर तक चुप रहने के पश्चात् अम्पारों मुझसे कहती है—

'तुम मुझसे प्रेम नहीं करते !'

मैं उसकी बात अनसुनी करके हठपूर्वक कहता हूँ—

'प्रिये, अपना मार्ग निश्चित कर लो। ऐसे समय हमारा आचरण निश्चित और खुला हुआ होना चाहिये। एक आदर्श के सामने कुटुम्ब का महत्त्व कुछ भी नहीं रह जाता। ज़रा सोचो तो कि जीसस ने, जिसके प्रति तुम अपनी प्रार्थनाओं में इतना प्रेम जताया करती हो, एक निर्धन मनुष्य से यह कहा था—'जो कोई मेरी अपेक्षा अपनी माता या पिता से अधिक प्रेम रखता है, मेरे योग्य नहीं है।' 'क्योंकि मनुष्य के शत्रु उसके घर ही के लोग होंगे।' जीसस ने संसार के सामने एक आदर्श

रक्खा था। हम भी अपना आदर्श पेश करते हैं। ईश्वर और मुझमें से तुम किसको वरण करती हो? क्रांति और पिता में से तुम किसका पक्ष ग्रहण करोगी?'

उसमें और उसकी सहज बुद्धि में संघर्ष आरम्भ हो जाता है और उसकी आत्मा एक पक्षी के समान छटपटाने लगती है। उस कपोत की तरह जो स्टार ने चित्रित पोस्टकार्ड के एक कोने में बनाया था। परन्तु अब वह उसके नेत्रों में चमकते हुए पर्वत शिखर पर बैठा हुआ दिखाई दे रहा है। जला देनेवाली सर्दी। शिखा-युक्त आग्नेय हिम। और शैलश्रृङ्ग के वायु का गाया हुआ वही विजनता का विषादमय गान। विचाराभाव, प्रकाश, वायु, चट्टानें, हिम और समस्त वस्तुओं को एक ताल कर देनेवाला अनन्त! विचार शून्यता। वह सिसकी भर कर साग्रह कहती है—

'तुम्हें मुझसे प्रेम नहीं है।'

'हम इस बात पर विचार नहीं कर रहे है,' मैंने तेज़ होकर कहा—'हम तो क्रांति की बात सोच रहे हैं।'

रुआँसी होकर वह फिर वही बात कहती है—

'तुम मुझे प्यार नहीं करते।'

अब कटु स्पष्टता के साथ—अपने शब्दों के गूढ़ार्थ से उत्तेजित होकर मैं विरक्त भाव से कहता हूँ।

'यदि मैं तुमसे प्रेम न करता तो तुमसे विवाह ही क्यों न करलूँ। यह शादी सभी प्रकार मेरे लिए शुभ होगी। विवाह संस्कार खूब शान के साथ होगा, गिरजाघर में रोशनी की जायगी, गाना बजाना होगा। इस सबके अन्त में मुझे तुम जैसी सुन्दर रमणी पर पूर्णाधिकार मिलेगा। तुम समझ सकती हो कि यह सब मेरे लिए कितना सहज है। परन्तु मैं तुमसे उसी तरह प्रेम करता हूँ जिस प्रकार कि मेरे लिए तुम से प्रेम करना सम्भव होता है—जिस तरह कि तुम से कभी कोई

भी प्रेम नहीं कर सकता। मेरा प्रेम निराशा तक जा पहुँचा है।'

मैं अपनी सतृष्ण दृष्टि से उसके नेत्रों को भेद देता हूँ।

'प्यारी, मेरा प्रेम निराशा तक जा पहुँचा है।'

वह हर्ष से पुलकित हो उठी।

'किन्तु तुम निराशा का नाम क्यों ले रहे हो?'

'क्योंकि तुम्हें अपना जीवन जानते हुए भी मैं तुम्हें त्याग देने को विवश हूँ।'

वह मेरे शब्दों के अर्थ पर विचार करती है। वह उसे शीघ्र ही समझ जाती है। दुःख से भरे हुए सीधे-सादे शब्द!

'नहीं! यह कदापि नहीं हो सकता! तुम्हारे लिए मैं सब कुछ त्याग दूँगी!'

'क्या तुम परमात्मा को त्याग दोगी?'

वह चुप हो जाती है। पत्तों में छनछन कर आनेवाले प्रकाश में उसकी दृष्टि भटकती फिरती है। मैं कहे जाता हूँ—

'क्या तुम अपने पिता को छोड़ दोगी?'

उसके नेत्रों में एक आँसू छलक आता है। तो भी उसके पलकों के सिरों पर ज्योति फ़ौलादी चमक के साथ नृत्य कर रही है।

'ईश्वर ही ने तो,' वह अन्त में कहती है, 'हमें यह प्रेम का पागलपन प्रदान किया है। अब रही पिताजी की बात—सो वह कितने कृपालु हैं!'

मेरा भाव बदल जाता है। मेरे हृदय में अपने माता-पिता की स्मृति जाग्रत हो उठती है। इस दृश्य से मैं क्षुब्ध हो जाता हूँ। बूर्ज़्वा भावना! शकर की तरह मीठी। मेरे अन्तस्तल की गहराइयों में से एक आवाज़ उठती है और मुझसे संरब्ध स्वर में कहती है—'हिजड़े मत बनो! कैसे दुःख का विषय है! बूर्ज़्वा मूर्खता को अंगीकार मत करो!' किन्तु उसका प्रेम अविचल है। यह मुझसे हर दशा में प्रेम

करेगी। चाहे कोई बलहीन हो, या मूर्ख या क्रांतिकारी—सभी पुरुष उस जैसी रमणी से यही प्रथम शब्द कहा करते हैं। और जादूगर की लकड़ी की तरह यह शब्द उसके हृदय में छिपी हुई अमूल्य प्रेमराशि का पता लगाने के लिए पर्याप्त है।' वह देखती है कि मैं उससे दूर चला गया हूँ। वह मेरा मुँह ताक रही है; क्योंकि उसे त्याग देने का निश्चय जो मेरे शब्दों से वास्तव में व्यक्त नहीं होता है वह मेरे होठों के दबाव से प्रकट हो रहा है। वह आग्रह करती है—

'मैं तुम्हारे साथ चलूँगी! प्रेम के अतिरिक्त मुझे संसार में किसी भी वस्तु की कोई परवा नहीं है। मैं—'

मैंने शासन के स्वर में उसे रोक कर कहा—

'पहले वह फ़ार्म लाकर कामरेडों के कार्य को सुगम बना दो।'

उसने संदिग्ध भाव से पूछा—

'क्या इससे क्रांति आरम्भ हो जायगी?'

'कम से कम,' मैंने उत्तर दिया, 'इससे विप्लव आगे अवश्य बढ़ जायगा।'

अभी तक उसको इस निश्चय पर पहुँचने के लिए यथेष्ट सामग्री प्राप्त नहीं हुई है। फिर भी वह एक वीराङ्गना बनने जा रही है। उसका सिर वक्षस्थल पर झुका हुआ है, उसके नेत्र एक पक्षी के नेत्रों की तरह चमकदार हैं, उसके अधर पृथक हैं—वह कैसी अप्रतिम सुन्दरी प्रतीत होती है!

'परन्तु, प्यारे ल्यूकस अभी तो तुमने कहा था कि तुम्हें मुझे त्याग देना पड़ेगा। यदि मैं तुम्हें वह फ़ार्म लादूँ तो क्या फिर भी तुम्हारा यही विचार रहेगा?'

'फिर भी ईश्वर हमारे बीच में वाधक रहेगा ही।'

'मुझे हाँ या ना में उत्तर दो।'

'हाँ।'

वह सन्तुष्ट तथा शान्त हो गई थी ; किन्तु अब उसने होंठ विसूड़ने आरम्भ कर दिये । क्षण मात्र में उसकी प्रफुल्ल, उल्लासपूर्ण मुद्रा दारुण निराशा से मलिन हो गई ।

'क्या पापा को बलिदान कर देना भी तुम्हारे लिए पर्याप्त न होगा ?'

'पिताजी को बलिदान करने की इसमें क्या बात है ?'

'निस्सन्देह है । तुम जानते हो कि तुम रेजिमेंट में बग़ावत फैलाना चाहते हो, और उसका पहला शिकार कर्नल ही होगा ।'

मैंने इसका कोई उत्तर नहीं दिया । उसने रोना आरम्भ कर दिया । तब मैंने उससे पूछा—

'क्या तुम मुझे अपराधी समझती हो ?'

'प्राण प्यारे ल्यूकस ! मैं तो यह जानती ही नहीं कि तुम्हें क्या समझूँ । यदि तुम अपराधी भी होओ तो भी मैं तुम्हें इसी तरह प्यार करूँगी । मैं तो पूर्णतः विवश हूँ !'

यह न जानते हुए कि मैं क्या कर रहा हूँ, मैंने एक सिगरेट जलाया । उसने जेब से रुमाल निकाल लिया और जब मैंने यह कहा कि हम कोई भी काम करने को विवश नहीं हो सकते तो वह उसे दाँतों से काटने और फाड़ने लग गई । जब उसकी चाची ने यह देखा कि हम दोनों में कुछ अनबन-सी हो गई है तो वह हमें रह-रहकर कनखियों से देखने लगी ! अम्पारो ने सुबकी भरकर कहा—

'हाय ! मुझे मौत भी तो नहीं आती !'

उसके आँसुओ से मेरा हृदय नहीं पसीजता । मुझे उन आसुओं का ध्यान आता है जो भूख के अन्धकारमय निवास-स्थानों में और अन्याय के कारागारों में बहे हैं । आज की रात भावुकता मुझे मर्माहत करने में असमर्थ सिद्ध हुई है । कार्य, तर्क, सम्भवताएँ । जैसा कि उस दिन सिनेमा में हुआ था, केवल युक्तियों से काम नहीं चलता । मैं कार्य चाहता हूँ—मैं ठोस कृत्यों की युक्तियाँ चाहता हूँ । यदि मैं

प्रेम करता हूँ, तो यह मेरी बहुत बड़ी हानि है। यदि मैं उससे अपना पिंड न छुड़ा सका तो मैं गोली मारकर आत्मघात कर लूँगा। मैं कदापि बूर्ज्वा नहीं बन सकता। और वह कभी मेरे पक्ष में आ नहीं सकती। मैं इस काम में सफल होने का प्रयत्न करूँगा, अन्यथा उस नवीन कल्पना के लिए, जो दिन प्रतिदिन प्रबल और विजयशालिनी होती जा रही है, और हम दोनों से अधिक महत्वपूर्ण है, मुस्कराते हुए, रिवालवर के शब्द के साथ प्राणोत्सर्ग कर दूँगा। अपने रेशमी वस्त्रों को, शृङ्गार की मेज़, उद्यान और सदय कुटुम्ब को छोड़ना वह किस प्रकार मुझ जैसे विप्लवकारी की विपन्न झोंपड़ी में आ सकेगी? गुलाब और कारनेशन के फूलों के साथ रहनेवाली वह सुकुमार रमणी कूड़े के ढेर पर खिले हुए एक जंगली फूल से किस प्रकार प्रेम कर सकेगी? यदि मेरे दाँए हाथ में रिवालवर हो और वह अपना सारा सौंदर्य और भोलापन खोकर मेरी बग़ल में खड़ी हुई हो, तो मैं क्या कुछ कर सकूँगा? नहीं! उसको मुझे त्याग देना ही होगा। क्या मैं उसे त्यागकर किसी और के साथ सुखी हो सकूँगा? मैं ऐसा नहीं कर सकता, करूँगा भी नहीं। मैं यह नहीं जानता कि ऐसा किस प्रकार किया जा सकता है और मैं उसको सीखूँगा भी नहीं! मैं ज़रा भी काँपे बिना यह बात तो सोच सकता हूँ कि मैं जर्मिनल की तरह मर जाऊँ और मेरा भेजा बाहर कीचड़ में पड़ा हो; किन्तु मैं यह नहीं सोच सकता कि वह किसी दूसरे के बाहुपाश में बद्ध हो सकती है। इस विचार मात्र से मुझे ऐसा प्रतीत होता है मानो मेरे पैरों के नीचे से पृथ्वी निकल गई है। और उसके शब्द थे—

'हाय, मुझे मौत भी नहीं आती!'

मैंने उसके यह शब्द निःशंक भाव से सुने थे। इस बात पर विचार करने से मैं एक क्षण के लिए कुछ घबड़ा-सा गया। किन्तु मुझे तत्काल यह याद आ गया कि उसने यह कहा था कि यदि मैं अपराधी भी होऊँ

तो वह मुझसे इतना ही प्रेम करेगी। मैंने कदापि उसको मार डालने की बात नहीं सोची थी, मैंने केवल उसके मर जाने की सम्भावना पर विचार किया था। किंतु यदि मैं उसके प्राण भी हर लूँ तो भी वह मुझसे प्रेम करती रहेगी। मैं न जाने क्यों अपने आप को गड़बड़ाने के लिए यह बातें सोच रहा हूँ। वह मेरे हाथों मर कर भी मुझे सुखी बनाने को तत्पर है। किंतु वह अपने सफ़ेद दाढ़ीवाले परमेश्वर को बलिदान नहीं करेगी। मुझे भी जर्मिनल की तरह मरकर कीचड़ में सड़ना मंजूर है, किन्तु मैं उस मेज़ पर जिस पर कि वह काँच का सचित्र गुलदान रक्खा हुआ है उस बूर्ज्वा ईश्वर के नेतृत्व में कदापि न बैठूँगा। किंतु इतने पर भी हमारे शरीर एक दूसरे को प्रणयकातर स्वर में पुकार रहे हैं, हम दोनों ही रागावेश से कँपकँपा रहे हैं, हम दोनों के रोम-रोम से यौवन-मद छलक रहा है। आत्मा से दूर, उस घृणित आत्मा से बहुत दूर जो कभी प्रवृत्ति और कभी निवृत्ति की सृष्टि करती है और किसी प्रेम पीड़ित वृद्ध कवि की कल्पनाओं में मृत्यु के साथ खेल किया करती है, हमारे शरीर एक दूसरे के रहस्य को समझते हैं और वह उसके गुलाबी कपोलों और मेरी तीन दिन से न बनी हुई ठोढ़ी को कूक मारकर मिला देते हैं। जिस प्रकार झंझावात में रह-रहकर विद्युत् कौंदती है उसी प्रकार हम दोनों भी अपनी-अपनी अंतर्प्रेरणा के अनुकूल कभी परस्पर एक दूसरे की ओर खिंचते हैं और कभी दूर हट जाते हैं। वह अपने संकेत को विकसित करती हुई कहती है—

'यदि मैं मर जाऊँ तो तुम्हें सुख होगा।'

उसकी बूर्ज्वा संस्कृति को इसका विरोध करना चाहिये। परंतु उसके अन्तस्तल में एक ऐसी शक्ति उदित होती है जो इस संस्कार को परास्त कर देती है। वह मेरी आँखों पर दृष्टि गड़ाती है; किन्तु मैं सिगरेट के धुँए से उन्हें छिपा लेता हूँ। वह धुँए के उड़ जाने की प्रतीक्षा करती है; किन्तु इसके पूर्व कि वह मेरी आँखों में आँखें डाले मैं यंत्रवत् कहता हूँ—

'तुम भी कैसी ऊल-जलूल बातें कर रही हो !'

तदनन्तर मैं सीधी दृष्टि से, उसकी ओर ऐसे भाव से देखता हूँ जिसको वह निर्ममता का परिचायक खयाल कर सकती है, किन्तु वह कहती कुछ भी नहीं । जो कुछ मैं उससे कहता हूँ, जिस प्रकार मैं उसको देखता हूँ, जैसा कुछ वह मेरे मन का भाव समझती है इन्हीं पर उसके नेत्रों, उसके अधरों, उसके हाथों की गति, यहाँ तक कि जिस तरह वह अपना शरीर झुकाती है वह भी इन्हीं पर निर्भर रहता है। उसके साथ ऐसी घनिष्ठता होते हुए, उसको अपने प्राणों से भी अधिक चाहते हुए, उसके मुख से ऐसे शोकावह शब्द सुनकर भी कुछ न कहना और टस से मस न होना ! हमारा मौन गहन है, अनन्तकाल के समान अगाध !

अपने संकेत को अंतिम प्रश्न के रूपमें परिणत करती हुई वह मुझसे कहती है -

'मैं मर जाऊँ तो तुम सुखी होगे—क्या यह सच नहीं है ?'

यही शब्द जब उसने पहले कहे थे तो अपने आप से कहे थे। किन्तु अब मेरे नेत्रों में दृष्टि गड़ाकर यह प्रश्न वह मुझसे कर रही है। सिगरेट समाप्त हो गया है, अतः मैं उसे फेंक कर, इस निस्तब्धता में, उसकी दृष्टि का उत्तर दृष्टि से देता हूँ ! कदाचित् वह यह खयाल करती है कि मैं उससे प्रेम नहीं करता । या वह मुझे धूर्त समझ रही है । वह मुझे क्या समझती है, इस बात की मुझे कोई परवा न होना भी कैसी भीषण बात है ! फिर भी, यह सब कुछ होते हुए भी, मैं उसे अपनी समस्त अन्तरात्मा से प्यार करता हूँ ।

'यदि तुम उत्तर न दोगे' वह कहती है 'तो भी मैं तुम्हारा अभिप्राय समझ जाऊँगी ।'

मैं अब बातें करना नहीं चाहता । मेरा मस्तिष्क दूसरी ओर चला जाता है । मुझे याद आता है कि जोज़ी काउज़ेल और हेलियाँस पीरेज़

विलाकम्पा के घर खाना खाने नहीं आये थे। सम्भवतः वह गिरफ़्तार हो गये हैं। इसके बाद मैं फ़ाऊ के और अपने उस प्रस्ताव के सम्बन्ध में जिसको कि अब तक क्रान्तिकारिणी समिति ने स्वीकार कर लिया होगा, सोचने लग जाता हूँ। इस बीच में वह क्या कहती या सोचती है, मैं नहीं कह सकता। मैं केवल इतना जानता हूँ कि वह मुझसे कुछ कहती रही है, उसने मुझसे कुछ विलक्षण प्रश्न किये हैं। जब मैं सहसा सचेत होकर उठ बैठता हूँ और उसकी ओर देखकर कहता हूँ—'मेरी बात सुनो' तो वह चौंक पड़ती है और सिर से पैर तक थहरा जाती है।

'तुम क्यों डर गई ?'

यह भी कैसा प्रश्न है ! वह बेचारी क्या जाने कि क्यों डर गई।

'अब मेरी बात सुनो। अब तुम्हें मेरी बात का निश्चयात्मक उत्तर देना होगा।'

'हमें—मुझे (अधिक प्रभाव डालने के लिए मैंने कहा) रेजिमेन्ट की मुहर लगे हुए उन फ़ार्मों की परमावश्यकता है। क्या तुम मुझे वह ला दोगी ?'

वह उठकर दृढ़ता के साथ चली जाती है। वह घर के अन्दर जाती है। मैं अब अकेला हूँ। मैं बहुत दूर जा पहुँचता हूँ। मैं अब राग और बुद्धि के मध्यवर्ती शून्य में तैर रहा हूँ। बुद्धि जाग उठती है। वह मुझे वात-शूल जैसी प्रतीत होती है। मैं पृथ्वी पर, कंकड़ के फ़र्श पर दृष्टिपात करता हूँ। उस पर उसके पाँव के निशान देख पड़ते हैं। किन्तु वह अभी से कोई भूतकालीन वस्तु-सी जान पड़ती है। अब तो केवल स्मृतियाँ शेष रह गई हैं। उनकी जड़ें मेरे हृदय में बहुत गहरी चली गई हैं। वह हमेशा बढ़ती और ऊपर आती रहेंगी। उसकी चाची यह सोचती है कि शिष्टता के नाते उसके लिए मुझसे वार्तालाप करना उसका परम कर्तव्य है

'बड़ी भयंकर घटनाएँ हो रही हैं, ल्यूकस कल रात की घटना की तुम्हें खबर है ?'

'नहीं तो, मादाम। क्यों क्या हुआ ?'

'वही बिजलीवाली बात। उन्होंने सारे मैड्रिड की बिजली बन्द कर दी।'

'होओ—हाँ।'

'उसके बारे में तुम्हारा क्या खयाल है ?'

'अच्छा, अच्छा, आप ही बतलाइये कि मैं आपको क्या उत्तर दूँ।'

'यही कि यह बहुत बड़ी ग़लती थी। बहुत-से घरों में रोगी भी तो हैं।'

'हाँ, हैं क्यों नहीं।'

'इसके अलावा, मरे भी तो कितने ही।'

मैं चुप रहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वृद्धा मेरा पिंड छोड़ दे।

तदनन्तर वह प्रश्न करती है—

'ये लोग अब क्या चाहते हैं ?'

'कौन जाने ?'

विलक्षणता तो यह है कि मैं सच बोल रहा हूँ। हममें किसी नियत काम को आरम्भ कर देने की शक्ति तो मौजूद है; परन्तु इस बात से कि हम क्या चाहते हैं हम हठपूर्वक अनभिज्ञ रहते हैं। फिर भी मेरा अन्तःकरण निर्मल है। मैं इस बात को जानता हूँ। वास्तव में न तो कोई मनुष्य अपनी इच्छाशक्ति को क्रांति की ओर जाने से रोक सकता है और न उसको क्रान्ति की ओर प्रेरित ही कर सकता है। फिर इस बात को न जानने से कि मैं किधर जा रहा हूँ अन्तर ही क्या पड़ सकता है ? अम्पारो के लौट आने तक उसकी चाची बराबर बातचीत करती रहती है। अम्पारो दृढ़-संकल्प और निश्चिन्त प्रतीत होती है। उद्यान पथ पर चलती हुई वह बड़ी सुन्दर मालूम होती है। न जाने

क्यों मुझे यूनानी देवियों के उपहास-चित्रों का स्मरण हो आता है। वह आकर मेरी बग़ल में बैठ गई। उसने अपनी कचुंकी के नीचे से कुछ काग़ज़ निकालकर कहा—

'यह लो ल्यूकस। इनका जो चाहो सो करो'

मैंने उसका हाथ पकड़कर अपने अधरों से लगा लिया। उसने मेरी ओर एक अभूतपूर्व तथा अज्ञात शान्तभाव से देखा।

'क्या तुम्हारे विचार में वह अब भी असम्भव है?' उसने कहा।

'क्या?'

'हमारा प्रेम।'

'अभी थोड़ी कसर है, प्रिये। पहले अपने पिता को इस बात का ज्ञान न होने देने का वचन दो।'

'मैं वह वचन देती हूँ—बोलो, अब क्या कहते हो?'

मैं पहले उसकी भुजा का और फिर उसके अधरों का चुम्बन करता हूँ। वह चुपचाप मेरे बालों पर हाथ फेरती है।

'क्या यह वास्तव में सच है?' उसने एक मिनट के बाद कहा। 'क्या यह सच है कि हम सुखी होंगे?'

'अभी नहीं।' मैं आवेश में उससे दूर हट कर कहता हूँ।

वह आँखें फाड़ कर कहती है—

'अभी नहीं?'

'हाँ। क्या तुम ईश्वर को मानती हो?'

'प्यारे ल्यूकस, अब मुझसे और कुछ न पूछो।'

'क्या तुम ईश्वर में विश्वास रखती हो?'

'ओफ़! कैसी आफ़त में जान है!'

'क्या तुम ईश्वर को मानती हो?'

'मैं तो तुम्हें मानती हूँ।'

मैं उसको कुतूहल-पूर्ण दृष्टि से देखता हूँ। यह लड़की कुछ बदली

हुई दिखाई देती है। उसकी दृष्टि से ऐसा प्रतीत होता है मानो वह एक क्षण मात्र में दस वर्ष व्यतीत कर चुकी हो। वह मुझे एक प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखती है जिसका तात्पर्य है—'क्या तुम अब हमारा सुखी होना संभव समझते हो?' मैं भी बिना बोले हुए, नेत्रों की मूक भाषामें उससे प्रश्न करता हूँ—'और तुम—क्या तुम ऐसा होने में विश्वास करती हो?' वह मेरा प्रश्न समझ लेती है और उसका उत्तर ऐसी अद्भुत रीति से देती है कि मेरी आँखें खुल जाती हैं। मेरी छोटी-सी पूर्णतः निर्दोष प्रेमिका में अब एक नूतन शांति और मधुरता का आविर्भाव हुआ है जिसका मूलाधार मेरे लिए एक रहस्य है। दुःख से बुद्धि का विकास होता है। वह एक अभूतपूर्व भाव से मेरी ओर ताकती है। उसकी दृष्टि से एक ऐसे अलौकिक आत्मविश्वास का परिचय मिलता है जो मानवीय आश्वासन से कोसों परे है। उसका नीरव तथा मृदु उत्तर, अपनी गहनता और मधुरता से मेरे हृदय की गहराइयों को चीरता हुआ नीचे जा पहुँचता है। मैं पुलकित हो उठता हूँ।

'और तुम?' मैं फिर पूछता हूँ। 'तुम्हारा विश्वास क्या है?' 'क्या हमारा सुखी होना संभव है?' उसके नेत्र चमकने लगते हैं। वह दृढ़ता पूर्वक निषेधार्थक उत्तर दे रहे हैं।

'नहीं।'

मैं उसके दोनों हाथ फिर पकड़ लेता हूँ। उसके 'नहीं' कहने पर भी मैं विवशता के साथ उससे तत्क्षण प्रश्न करता हूँ—

'क्या तुम मुझसे प्रेम करती हो?'

वह मेरी ओर चुपचाप ताकती रहती है। वह अपना छोटा-सा हाथ मेरे कोट के कालर पर रख देती है। फिर वह धीरे-धीरे चलकर गरदन तक पहुँच जाता है।

'प्यारे ल्यूकास, मैंने भी कैसी मिथ्या आशाएँ बाँधी थीं!'

वह यह शब्द इस प्रकार कहती है मानो वह फ़रिश्तों के दल को,

जिनके अस्तित्व में उसकी पूर्ण श्रद्धा है, अपनी दृष्टि के सामने से आकाश में अन्तर्धान होते हुए देख रही हो। वह कहे जाती है—

'कैसे मनोहर स्वप्न थे!'

हाँ, वह मुझसे प्रेम करती है, किन्तु मुझको इतना आत्मसंयमित देखकर वह रोएगी नहीं। यह अनुभव करके कि मैं उसे खो देनेवाला हूँ, मुझे उसको त्याग देना है, मैं उसके पास खसक जाता हूँ। उसका शान्तभाव बहुत देर तक नहीं ठहर पाता। अब वह हाथ उठाकर अपना मुख छिपा लेती है। उसके होंठ इस प्रकार खुलते हैं मानो वह उन्हें ज़बरदस्ती खोल रही हो, उसकी दृष्टि, निराशा से विह्वल होकर, छत पर जा लगती है। वह सुबक-सी उठती है। अब वह खुलकर शिशुवत् सुबक रही है, किन्तु उसके नेत्रों में आँसू नहीं हैं। वह विषादमय स्वर में कहती है—

'मेरे जीवन के प्यारे, मिथ्या स्वप्नो!'

उसकी कमर में बाँह डालकर मैं उसे छाती से लगा लेता हूँ। अब वह अपने आपको सुरक्षित समझकर मुस्कराने की चेष्टा करती है। परन्तु वह अब भी काँप रही है। मानो उसे जूड़ी आ रही हो। अब उसका अन्तिम स्वप्न भी उसे छोड़कर चला जाता है। वह रोकर कहती है—

'हाय, हमारी नन्ही बच्ची! अब तो उस नन्ही का होना ही असम्भव हो गया!'

इन शब्दों के साथ मैं उसके इस अन्तिम स्वप्न को, एक नीली छाया के सदृश उसके नेत्रों के सामने से जाते हुए देखता हूँ। जब वह मेरे दोनों हाथ पकड़कर मुझे ताकती है तो उसका प्रायः शिशुवत् फूल-सा मुख दुःख से बिलकुल मुरझाया हुआ प्रतीत होता है।

'अब यह बात कभी हो ही नहीं सकती, प्यारे ल्यूकस।'

मुझे इस बात का निश्चय है कि वह रोयेगी नहीं। किन्तु वह मेरे

हृदय से चिपटकर कराह रही है। उसने अपने दाँए हाथ की मुट्ठी बाँधकर अपने होठों को कसकर दबा रक्खा है। उसके हृदय की धड़कन और काँपने से मैं एक क्षण के लिए घबरा जाता हूँ। अब न मालूम क्या हो! कुछ देर बाद हम दोनों अलग हो जाते हैं।

'हे परमात्मन्, मेरा सारा जीवन ही स्वप्न देखते बीत गया!'

इस दुःखमय संसार की नश्वरता का सारा रहस्य उस पर खुल चुका है। वह जानती है कि वहाँ अब कुछ हमारे लिए है ही नहीं। मैं उसको सब बातें बताना चाहता हूँ, किन्तु केवल इतना भर कह पाता हूँ—

'प्यारी अम्पारो, यही क्रान्ति है।'

अब कुछ और कहना ही शेष नहीं रहा। उसके मन्द-स्वर में कहे हुए 'नहीं' से संसार की अन्तिम सीमाएँ भी मुखरित हो उठी हैं। वह मानो समाधि की अवस्था में लीन होकर, गोल-गोल आँखें चमकाकर, उत्तर देती है—

'यदि क्रान्ति को हमारे प्राण ही लेने हैं, तो मुझे अपनी मृत्यु की कोई चिन्ता नहीं है। परन्तु उस बेचारी नन्ही बच्ची ने कौन-सा अपराध किया है कि उसका जन्म तक न हो!' ऊपर अस्ताचलगामी सूर्य की अन्तिम किरणें मकान पर पड़ रही हैं। जब वह उठकर मेरे कन्धों पर अपने दोनों हाथ रखकर मेरी आँखों में आँखें डालती है तो मुझे बस वही 'नहीं' देख पड़ता है। अपने सहकारियों की ओर ध्यान बटाकर मैंने अपने आपको आत्मसंयम की पराकाष्ठा पर पहुँच जाने को बाध्य कर दिया है। मुझे उसकी आँखों में वह 'नहीं' बराबर दिखाई पड़ रहा है। मेरे नेत्रों में जड़ीभूत अन्धकार के अतिरिक्त उसे कुछ और दिखाई ही नहीं देता। हम एक भी शब्द बिना कहे-सुने अलग हो जाते हैं। यही हमारी अन्तिम विदा है। हम दोनों के बीच में अब बस एक ही शब्द रह गया है जिसके दुहराने का हममें से किसी को साहस

नहीं होता—'असम्भव, असाध्य !' अब तो किसी प्रकार का कोई प्रश्न ही नहीं रहा। सुबकियाँ भरती और 'अम्माँ, अम्माँ' कहती हुई वह घर के भीतर चली जाती है। उसकी दशा आज फिर एक मा से बिछुड़े हुए मृगछौने जैसी है। परन्तु इस बार वह सदैव के लिए खोया हुआ है। मैं अपनी एड़ियाँ रेत में धँसा देता हूँ। उद्यान का समीरण कहता है—'बस अब कभी कुछ नहीं।' सांध्य अन्धकार के साथ मेरे साथियों की आवाज़ कहती है, 'सदैव कुछ और।' एक खिड़की पर कँपकँपाता हुआ पर्दा कहता है, 'बस अब कुछ भी नहीं।' रात्रि की नवागन्तुक छाया पुकार कर कहती है—'सदैव हमसे अधिक।' उसकी चाची को सलाम किये बिना ही मैं वहाँ से चल पड़ता हूँ। इस समय उसकी भृकुटि बहुत चढ़ी हुई है, निस्सन्देह इसका कारण यही है कि उसने हमें चुम्बन करते हुए देख लिया है।

ज्योंही मैं गली में प्रवेश करता हूँ मुझे चीत्कार और कोलाहल की आवाज़ें सुनाई देती हैं। एक स्थूलकाय पुरुष मेरी ओर दौड़ता हुआ चला आ रहा है। मैं उससे टकरा जाने से बाल-बाल बच जाता हूँ। वह बाग़ की दीवार के पास पहुँचकर उसको फाँद जाने का प्रयत्न करता है; परन्तु निष्फल रहता है। फिर वह उससे लगा हुआ भागता है। छोटा-सा बुएनावेन्टुरा, ग्रेको और सेटियागू भी पीछा करते हुए यहाँ आ पहुँचते हैं। अब मुझे ज्ञात होता है कि वह दुष्ट कौन है।

'जल्दी करो। खबरदार रहना—वह अभी लौटकर आता होगा। उसके पैर में चोट लगी हुई है—वह बहुत दूर तक भाग कर नहीं जा सकता।'

वे मेरे पास से दौड़ते हुए चले जाते हैं। बुएनवेन्टुरा ने दो गोलियाँ चलाईं। फ़ाऊ पेट के बल चलता हुआ सुअर की तरह ठुकरा उठता है। वह किसी प्रकार फिर उठ खड़ा होता है और भाग कर बारकों के उस भाग में जाना चाहता है जो उद्यान के पहली तरफ़ है। वह बेलों

से चिपट जाता है जिससे नीले फूल कुचल जाते हैं। वह अब घास पर खड़ा है। क्रास के रूप में उसके दोनों हाथ दीवार पर लगे हुए हैं। वह अपने पीछा करनेवालों की ओर आँखें फाड़ कर ताक रहा है। एक छोटी-सी छिपकली जो उसके जूते के नीचे आ गई है साँस लेने के लिए बेताब होकर अपना मुँह आगे निकालती है। तीनों कामरेड फ्राऊ के निकटतर जा पहुँचते हैं। वह उस पर चार, छः, दस बार गोलियाँ चलाते हैं, यहाँ तक कि यह दुष्टात्मा नाक के बल पृथ्वी पर गिर पड़ता है और उसकी खुली हुई आँखें कुछ देख नहीं सकतीं। तब कामरेडगण अपने हथियार छिपा कर वहाँ से नौ-दो ग्यारह हो जाते हैं। बारकों से निकल कर सैनिक, निर्देशानुसार, गिनती के हवाई फ़ैर करते हैं और फिर अपने अफ़सर को घटनास्थल पर बुला लाते हैं। वही छिपकली, जिसकी पूँछ टूटी हुई है, अब फाऊ के पतलून पर रेंग रही है। मकान के धूमरंध्र के ऊपर सूर्य की किरणें अब भी अस्थिरगति से चमक रही हैं। इसके नीचे मेरी प्रेमिका का बेलों और पुष्पों से लदा हुआ बरामदा है। वह सचमुच पोस्टकार्ड के चित्रों वाला बरामदा है!

चाची को महाकाली के दर्शन

श्रीमती क्लेटा अब मुझे अपने घर में नहीं रखना चाहतीं। मकान क्या है पूरा नरक है! यहाँ आये हुए अभी मुझे १२ घंटे हुए हैं। इतनी ही देर में पिस्सुओं से नाक में दम आ गया है। इधर यह चुड़ैल अलग मेरे प्राण खाये जा रही है। अपने पतिकी द्वेष-प्रकृति का दुखड़ा रोते-रोते मेरे कानों के परदे फाड़ डाले। इसका पति सचमुच गदहा ही था। रही उसकी पर-पुरुष शंका की बात-सो यह कोई इंद्र के अखाड़े की परी तो है नहीं—गंदी कुतिया कहीं की! मुझे यहाँ से निकाल देने का भी क्या बहाना निकाला है! मेरे यहाँ रहने से इसकी-एक सिपाही की विधवा की—बदनामी होती है! मुझ पर कैसा रोब जमा रही है—मानो यह कोई महारानी है। यह वही तो है जिसने अपने पति की बीमारी में जब उसे एक कौड़ी तक न मिलती थी-मैले कपड़ों की चार

लादियाँ धोईं थीं। अब कहो क्या कहते हो? और इस पर यह छोकरी यह शान गाँठती है कि मेरा स्वामी पुलिस में एक अफ़सर था! जब मुझसे यह झूँठी डींग न सही गई तो मैंने भी खुलकर कह दिया—

'मेरे पति तो सदा हमारे खर्च भर को कमा लाया करते थे।'

इसका उस चुड़ैल ने यह उत्तर दिया—

'मेरे पति ५० सिपाहियों के ऊपर अफ़सर थे।'

फिर थोड़ी देर रुककर उसने काँटा मारा—

'हाँ, जब कभी कोई दंगा होता था तो ५० से भी ज्यादे सिपाही उनके नीचे काम किया करते थे।'

मैंने भी जलकर उसके मुँह पर थप्पड़-सा मार दिया—

'और मेरे पति ने उन सबको मार भगाया था।'

इसके बाद मैं समझ गई कि अब हाथापाई तक नौबत पहुँचने वाली है। उसे सहमी हुई देखकर मैं भी चुप पड़ गई। वह स्वयं कारपोरल की पत्नी के पास मेरे आज रात के सोने का प्रबन्ध कर आई है। विधवा क्लेटा स्टार को बहुत चाहती है। इस खयाल से कि कारपोरल की पत्नी पर अधिक बोझ डालना अनुचित है, मैंने स्टार से इस सम्बन्ध में कोई बात नहीं कही है। स्टार अपने मुर्ग़े के साथ श्रीमती क्लेटा ही के यहाँ रहेगी। वह मुझसे सभी वस्तुओं से अधिक अपने मुर्ग़े को चाहती है। उसका हृदय पत्थर है। आजकल के बच्चे अपना हृदय माताओं के पेट में छोड़ आते हैं। जब उसने फ़ाऊ की मृत्यु का समाचार सुना तो उसने यह सोचा तक नहीं कि फ़ाऊ ने उसके पिता को कई बार जेल भिजवाया था, उसने सन्तोष की श्वास लेकर अपने मुर्ग़े से कहा—

'मेरे छोटे बदमाश, अब तुम सन्तोष से रहना।'

मुर्ग़े को वह लाड़ में 'छोटा बदमाश' कहा करती है। मैं बिलौटे को इससे अधिक सभ्य शब्दों से पुकारा करती हूँ। परन्तु मुर्ग़े को

कोई चिन्ता क्यों नहीं करनी चाहिये। ईश्वर की दी हुई थूथड़ी से वह फिर बकने लगती है—

'फ़ाऊ की कुदृष्टि तुम्हारे ऊपर अभी से नहीं थी, वह तो रिपब्लिक की स्थापना से पहिले ही से तुम्हारा शत्रु था। कभी-कभी मैं उसे किसी द्वार में बैठे हुए मुर्ग़ों को एक विचित्र भाव से देखते हुए देखा करती थी। मैं झटपट भागकर बाहर आती और मुर्ग़ों को उठाकर अन्दर चली जाया करती थी। तब वह ज़मीन पर थूकता और जीभ चटका-कर क्रोध में बड़बड़ाता हुआ वहाँ से चल पड़ता था।'

वृद्धा क्लेटा भी बड़ी मूर्खा है। इसीलिए तो उसको स्टार की बक-वास में बड़ा आनन्द मिलता है। किन्तु यदि यह लड़की अपनी दादी की बात पर कान दे तो मैं उसे बहुत-सी ऐसी बातें बताऊँ जो बड़े काम की हैं और जिन्हें मैंने अपने हृदय में छिपा रक्खा है। अभी तो बहुत दिन पड़े हैं और जो श्रद्धा के साथ बैठकर कुछ सीखना चाहे तो उसे बताने के लिए परमेश्वर ने मुझे जीभ भी दे रक्खी है।

ल्यूक्रीशिया का घर बड़ा भला मालूम होता है। जितना उजाला श्रीमती क्लेटा के मकान में दोपहर को रहता था उतना तो यहाँ आधी रात को भी रहता है! यहाँ सफ़ाई भी ख़ूब है। वह सुहागिन है, इस लिए सब ऊँच नीच समझकर हर एक के साथ यथोचित व्यवहार करती है। यौवन काल से स्त्री को पुरुष की आवश्यकता होती है। श्रीमती क्लेटा अभी इतनी बूढ़ी नहीं हो गई है कि उसे आदमी का अभाव न अखरे। इसीलिये वह अनमनी-सी रहती है। जब गिरजाघर जाकर वह मोमबत्ती भेंट चढ़ाती है तो मर-सी जाती है। इन लोगों को इतनी व्याकुल और फिर भी विफल मनोरथ देखकर मैं हँसते-हँसते लोट जाती हूँ।

ल्यूक्रीशिया के कारपोरल ने विवाह से पहिले ही उसके लिए मकान बनवा दिया था। पहले यह सब बंजर था। कारपोरल ने उसका यह

टुकड़ा क़िस्तों पर मोल लिया। चूँकि वह स्वयं राजगीरी का काम करता है उसने एक साल में मकान बना कर खड़ा कर दिया। वह एकतल्ला मकान है। उसके दो भाग हैं और एक तहखाना भी है। इसके बाद उपांत और इस मकान के बीच में और भी मकान बन गये जिससे अब यह बस्ती के निकट हो गया है। 'कारपोरल' वास्तव में कारपोरल नहीं है ; परन्तु लोगों ने उसका इस कारण यह नाम रख दिया है कि जब वह अपनी प्रियतमा से प्रेमालाप करने आया करता था तो वह सेना में एक सवार था और एक बड़ी-सी तलवार बाँध कर उपांत में आया करता था। वह भलामानस है। जर्मिनल से उसकी बड़ी गहरी मित्रता थी। मेरे साथ भी मियाँ-बीवी दोनों का व्यवहार बहुत अच्छा है। मैंने घर में आते ही फ़ौरन काम करने की चादर ओढ़ ली और काम में जुट गई। काम कुछ ऐसा बहुत था ही नहीं, केवल खाना बनाना था। मैं पानी भर लाई, आलू छीले और फिर अपने घर से जाकर थोड़ी-सी प्याज़ की गाँठें ले आई जो बहुत बढ़िया हैं। मेरे घर के आँगन में पुलिसवाले तमाखू पी रहे थे।

'दादी, तुम्हारे पास क्या है ?'

'गोबर !' मैंने उनकी ओर से मुँह फेरे हुए उत्तर दिया।

इस पर वह चश्मेवाला खिलखिला पड़ा। मैं उनसे बातें नहीं करना चाहती थी। इसी से उनकी ज़ुबान बंद करने के विचार से, जब तक मैं वहाँ रही बराबर इस तरह की आवाज़ें करती रही मानो मैं कुत्तों को दुत्कार रही हूँ या उन्हें सीटी बजा कर अपने पास बुला रही हूँ। परन्तु ये अभागे बड़े बेहया होते हैं—ये किसी भी बात का बुरा मानते ही नहीं। हर हालत में मस्त रहते हैं। रात ठंडी थी और आकाश तारों से जगमगा रहा था। जब मैं ल्यूक्रीशिया के यहाँ पहुँची तो वहाँ किप्रियानो, ग्रेको, सेंटियागो और बुएनवेन्टुरा मौजूद थे। फिर एलिनियो मारग्राफ़ और लिवर्टो भी आ पहुँचे। मकान के सबसे निकट वाले

दोनों कोनों पर हमारे दो आदमी पहरा दे रहे थे। ये सब लोग बड़ी जल्दी-जल्दी बोल रहे थे। जब वह चुप रहता है तो लिवर्टो बराबर पलक मारता रहता है; किंतु बोलते समय वह ऐसा नहीं करता। एलिनियो बड़ा घमंडी है। दूसरे की कोई बात वह सुनता ही नहीं, क्योंकि वह यह समझता है कि उसने दुनिया की सारी बातें पहले ही से सोच रखी हैं और वह अब जीवनभर, बिना सोचे किसी भी अवसर पर उचित बात कह सकता है। कारपोरल और इन दोनों की यह राय है कि मैशीनगन को किसी दूसरे स्थान में ले जाना चाहिये और उस जगह को गुप्त रखना चाहिये। अब वह गुप्त स्थान निश्चित हो चुका है। अब कारपोरल कहता है--

'इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है कि हमारी यह पार्टी अच्छी है।'

इसके बाद यह निश्चय करके कि सभा के स्थान का नाम बाद में बताया जायगा वे लोग यहाँ से चले जाते हैं। फिर मैं यह देखती हूँ कि ग्रेको और सेंटियागो के रिवालवर उनकी बग़ल में बेंच पर रक्खे हुए हैं। वे दोनों दरवाज़े की एक तरफ़ उसके समीप बैठे हुए हैं। मैं कुतूहल से आगे झुककर झाँकती हूँ किन्तु मुझे कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता। कमरे में एक बिस्तर, एक हाथ धोने का बर्तन, स्वतन्त्रता तथा क्रान्ति के दो चित्रों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं मालूम होता। इसी तरह के दोनों चित्र मेरे घर में भी लटके हुए हैं। मैं फिर बिस्तर के नीचे झाँकती हूँ। वहाँ भी कमोट और ल्यूक्रीशिया के पुराने सलीपरों के सिवाय कुछ भी नहीं दिखाई देता। चूँकि वह मुझे कुछ बताते नहीं हैं मैं भी कोई बात उनसे नहीं पूछती, किन्तु यह सब बातें जानने के लिए मेरा मन बुरी तरह छटपटा रहा है। इन कामरेडों के सम्बन्ध में मेरी भावना बड़ी ऊँची है, ये लोग कुछ सख्त ज़रूर हैं; परन्तु कोरे गप्पी नहीं हैं। ये बहुत भारी-भरकम हैं और लोग इनका आदर भी करते हैं। मेरे विचार में कारपोरल जर्मिनल जैसा है। वह अपने दिल की

बात अपने दिल ही में रखता है। परन्तु मुझे यह सब बातें नहीं सोचनी चाहिये। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि कारपोरल ही क्रान्ति का प्रमुख नेता है। ये लोग इस दम्पति की रक्षा में इस प्रकार तत्पर रहते हैं जैसे कि पहले ज़माने में महाराजों की रक्षा का प्रबन्ध किया जाया करता था। ऐसा मालूम होता है मानो ये लोग एक दम्पति के शयनागार की नहीं वरन् किसी देवालय की रक्षा कर रहे हों! बाहर खड़े हुए चौकीदार किसी भी सन्दिग्ध मनुष्य को इधर नहीं आने देते। आओ 'कुत्तो', अब यहाँ आओ! मेरा तो बस यही जी चाहता है कि वह चश्मेवाला यहाँ आता!

अब उन दोनों आदमियों की जगह पर दो और आदमी आ बैठते हैं। इन दोनों को मैं नहीं पहचानती। ये दोनों फिर घड़ी देखकर, रिवालवर हाथ में लिये बाहर जाते हुए मुझसे कहते हैं—

'बूढ़ी माँ, खुशी मनाओ। हम उन सभी को उसका मज़ा चखाने जा रहे हैं!'

'ईश्वर तुम्हारा मनचीता करे!'

'और यदि वह न करे तो! अब हमें ईश्वर भी नहीं रोक सकता है!'

यह शब्द भद्दे अवश्य हैं, परन्तु हृदय से निकले हुए हैं। ल्यूक्रीशिया मेज़ पर एक बड़ा प्याला, रोटियाँ और पाँच रकावियाँ रखती है। दोनों रिवालवरवाले कारपोरल के साथ आकर मेज़ पर बैठ जाते हैं। ये लोग मेरे लिए सबसे अच्छा स्थान खाली छोड़ देते हैं। मैं इसका निषेध करती हूँ—

'हम दोनों बाद में खा लेंगे। पहले तुम लोग खा लो। जब तुम खा चुकोगे तो मैं और ल्यूक्रीशिया भोजन करेंगे।'

कारपोरल कहता है 'नहीं।' ल्यूक्रीशिया और खाना ले आती है। ऐसा जान पड़ता है कि हम सभी एक साथ बैठकर खायेंगे। हमारे घर में तो ऐसा नहीं होता था। पुरुष पहले खाया करते हैं। स्त्रियाँ

उनकी सेवा करने ही के लिए पैदा हुई हैं। उन्होंने मुझे सबसे अच्छी जगह बिठाया है किन्तु मैं इतना समझती हूँ कि यह स्वयं मेरा आदर नहीं है, इसका वास्तविक कारण यह है कि मैं जर्मिनल की मा हूँ खाने में बहुत-सी चीज़ें नहीं हैं। ग़रीबों-जैसा भोजन है, किन्तु है सब स्वादिष्ट। चूँकि ल्यूक्रीशिया और कारपोरल के दिल खूब मिले हुए हैं, उनके मुखों पर सन्तोष की आभा देखकर चित्त प्रसन्न हो उठता है। बेंचों पर बैठे हुए द्वार का पहरा देनेवाले दोनों आदमियों ने भी खूब पेट भरकर खाना खाया। इसके पश्चात् सिगार जलाकर वे दोनों फिर अपने स्थान पर जा बैठे। अब इन तीनों में वार्तालाप आरम्भ हो जाता है। कारपोरल खेद भरे स्वर में कहता है—

'यह बड़े शोक की बात है कि हम लोगों को गोली से काम लेना पड़ता है।' अपने घुटनों को मुट्ठी से दबाकर वह इन शब्दों पर ज़ोर देता है—

'मेरे मन में नये विचार आने के लिए केवल पढ़ना और अपने मित्रों की बातें सुनना ही यथेष्ट है।'

'यह एकदम व्यर्थ बात है,' एक पहरेवाले ने उत्तर दिया। 'जब तक उनकी गरदन पर हमारा पैर न होगा तब तक उनकी समझ ही में न आएगा।'

भोजन करने के पश्चात् मुझे नींद मालूम होती है। किन्तु मुझे यह भय है कि यदि मैं सो जाऊँगी तो गोलियों की आवाज़ से जाग पड़ूँगी। मालूम तो ऐसा होता है कि कुछ होने-हवानेवाला नहीं है। परन्तु इन लोगों के हाव-भाव और शब्दों से यह स्पष्ट ज्ञात होता है कि आज रात को कोई असाधारण घटना घटित होनेवाली है। कारपोरल चिन्तित भाव से कहता है—

'यह एक पार्टी है!'

इसी समय मानो उसकी बात को सत्य प्रमाणित करने के लिए, दो

पुरुष अन्दर आते हैं। उनमें से एक लँगड़ा है। मुझे ऐसा याद पड़ता है कि मैंने उसे इससे पहले देखा है—भीख माँगते हुए। उसकी दाढ़ी सफ़ेद है। उसकी आयु ५० के लगभग होगी। दूसरा आदमी बुड्ढा तो नहीं है; किन्तु फ़ाक़ों ने उसका चेहरा भयानक बना दिया है। ये दोनों कारपोरल से बातचीत करने के पश्चात् शयनागार में घुस जाते हैं। मैं गरदन बढ़ाकर झाँकती हूँ। परन्तु यहाँ शयनागार में तो कोई भी मनुष्य नज़र नहीं आता और न उससे बाहर जाने का कोई द्वार ही दिखाई देता है!

रक्षा करो, भगवान्, रक्षा! यहाँ तो जादू चल रहा है!

किन्तु कारपोरल और उसकी पत्नी, दोनों में से कोई भी इस ओर ध्यान नहीं देता। मनुष्य आते हैं, अन्तर्धान हो जाते हैं, और यहाँ होता-हवाता कुछ भी नहीं! मैं बैठे-बैठे सो जाती हूँ। मेरे बराबर की मेज़ उठ जाती है और जब उसका पाया फिर नीचे आता है तो मैं चौंक पड़ती हूँ। ल्यूक्रीशिया रकाबियाँ उठाती है। मैं उससे एक मिनट रुक जाने को कहती हूँ जिससे हम दोनों मिलकर झटपट सारे बर्तन धो डालेंगी। फिर मैं दो तीन बार ऊँघकर आँखें खोल देती हूँ। अब मैं काम करने को कटिबद्ध हूँ। मुझे ऐसा मालूम होता है कि मैं अब सारी रात सोऊँगी ही नहीं।

'चाची आइज़ाबेला,' कारपोरल मुझसे कहता है, 'जितनी बड़ी हानि तुम्हारी हुई है उतनी हममें से किसी की नहीं हुई।'

बात तो यह बिलकुल सच्ची है, किन्तु जब मैं इन लोगों को अपने जर्मिनल का बदला लेने के लिए इतना उतावला देखती हूँ तो मुझे ऐसा मालूम होता है मानो मेरा पुत्र मरा ही नहीं है। सबसे बड़े दुःख का समय वह होगा, जब यह सब समाप्त हो जाने के पश्चात् मुझे रोज़-मर्रा का साधारण जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। परन्तु कारपोरल कहता है कि ऐसा समय अब आएगा ही नहीं।

'क्यों नहीं ?' मैं प्रश्न करती हूँ।

'क्योंकि हम हर वस्तु को समाप्त करने जा रहे हैं।'

मैंने अपने जीवन से बहुत कुछ देख लिया है—मैं इस बात का किस प्रकार विश्वास कर लूँ ? अभी बहुत-से आदमियों की हत्या करनी पड़ेगी। इस काम के लिए वर्दियों—वर्दीवालों—की आवश्यकता होगी। जाकट और टोपी पहननेवाला मनुष्य बस एक गार्ड मात्र को मार सकता है।

मैं उन्हें वह बमवाली बात सुनाती हूँ। मैं सारे शहर को उड़ा देने का संकल्प करके घर से चली थी; परन्तु वह सब बम ज्यों के त्यों मुझे जर्मिनल के साथियों को दे देने पड़े थे। कारपोरल ठहाका मार कर हँस पड़ा। मैं खिसिया गई। मैं उसे लौट कर कुछ कहना नहीं चाहती थी। अतः मैं रसोई घर में चली गई। ल्यूक्रीशिया मुझसे काम कराना नहीं चाहती थी। वह मुझको इस तरह सुला देना चाहती थी मानो मैं एक निकम्मे गूदड़ की पुतली थी। परन्तु मैं न मानी। मैंने कहा—

'तुमने भी हद कर दी। चालीस बर्षों से मैं सब से पीछे सोती और सबसे पहले उठती आई हूँ! बिस्तर बूढ़ों के लिए हुआ करता है। मैं अभी बूढ़ी थोड़े ही हो गई हूँ। मैं तो सबसे पीछे सोऊँगी।'

'तो फिर तुम बिलकुल सोओगी ही नहीं, चाची आइज़ाबेला।'

'यह क्यों ?'

'यहाँ तो सारी रात जमाव रहेगा।'

'बहुत अच्छी बात है। इसकी चिन्ता ही क्या ! सारा जीवन सोने के लिए थोड़े ही बना है!'

जब वे यह देखते हैं कि मैं मानूँगी नहीं तो मुझे सफाई कर लेने देते हैं। बराबरवाले कमरे से बातचीत की आवाज़ आ रही है। मैं बैठी-बैठी ऊँघने लगती हूँ। जब-तब मैं पदचाप सुनती हूँ और जाग

पड़ती हूँ। इतने में और आदमी आ पहुँचते हैं। इनमें से कुछ बहुत बूढ़े हैं। उनके लिए तो बिस्तर पर पड़ा रहना ही अच्छा था। विशेष कर एक आदमी का हाल तो बहुत ही करुण है। वह पाँव घसीट कर चलता है। उसकी आँखों से बराबर पानी निकल रहा है और उसका सिर हिलता है। यह सब कारपोरल के शयनागार में जाते हैं। मैं जागती रहने के लिए प्रार्थना करनी आरंभ कर देती हूँ। माला निकाल कर मैं प्रार्थना करती हूँ—अपने पुत्र के लिए, उसके यश तथा कीर्ति की वृद्धि के लिए। जब मुझे यह याद आता है कि मेरे घर में इस समय पुलिसवालों ने डेरा डाल रक्खा है तो मुझसे प्रार्थना नहीं की जाती। 'प्रभु की पवित्र प्रार्थना! 'काश हम इन पुलिसवालों को कहीं जंगल में पकड़ पाते!' ईश्वर कहता है, 'अपने शत्रुओं को क्षमा कर दो,' किन्तु उसने इन एजेन्टों और गार्डों के संबंध में कुछ भी नहीं कहा। जब मेरा पुत्र गली में मारा गया तो उसका हृदय शुभ विचारों से ओत-प्रोत था। अतः मैं ईश्वर से उसको क्षमा कर देने की प्रार्थना नहीं कर सकती। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उसको किसी की क्षमा की आवश्यकता नहीं है। उसको ईश्वर से भी कोई शिकायत नहीं थी। ईश्वर ने उसका ऐसा कोई अपराध नहीं किया था जिसका दोषारोपण वह ईश्वर पर करता और जिसके लिए वह उसको क्षमा प्रदान करता। ईश्वर और जर्मिनल दोनों में से किसी को एक दूसरे से कोई शिकायत नहीं थी। मैं यही प्रार्थना करती हूँ कि परलोक में भी उसे ऐसा ही यश प्राप्त हो जैसा कि उसने इस लोक में प्राप्त किया था। यद्यपि वह बराबर लड़ता रहा और युद्ध में शत्रुओं के हाथ से मारा गया तो भी वह हमेशा शांत रहा, क्योंकि वह ऐसा छिछोरा नहीं था कि आज कुछ सोचे और कल कुछ, और न उसने कभी यह ही किया कि कहा कुछ हो और किया कुछ और ही हो। रही स्वर्ग सम्बन्धी बात, सो मैं तो यही समझती हूँ कि वह ऐसा स्थान होगा, जहाँ सबको यथेष्ट भोजन मिलता होगा,

जहाँ सभी एक दूसरे की प्रशंसा करते होंगे, एक दूसरे के सद्‌गुण देखते और एक दूसरे का सम्मान करते होंगे। जर्मिनल को इस लोक में इसी प्रकार शांति और यश की प्राप्ति हुई थी और मैं प्रार्थना करती हूँ कि उसको परलोक में भी वही शांति तथा कीर्ति प्राप्त हो।

परन्तु मैं अपनी प्रार्थना समाप्त नही कर पाती। मैं सो जाती हूँ। मैं सहसा फ़र्श पर ठोकर मारती हूँ।

'श्रीमती जी ? क्या मामला है।'

'ईश्वर की क़सम ! मैं सो रही थी।'

'माता जी, बुरा न मानियेगा। बिस्तर पर जाकर सो रहिये।' मेरा जी अच्छा नहीं है। मैं फिर सो जाती हूँ। मेरे लिए सो जाना अच्छा ही है, क्योंकि मुझे स्वप्न बहुत दीखा करते हैं। गत रात्रि को मैंने स्वप्न में देखा कि समस्त भद्रगण और उनकी स्त्रियाँ, गलियाँ और सड़कें छोड़ कर अपने मकानों में जा छिपे थे। हमारा पूर्णाधिकार था। न तो वहाँ गार्ड थे और न पुलिस, और हम लोग पुअर्टा दि सोल और साइ-बेलीज़ में स्टोव पर खाना पका रहे थे। कभी-कभी कोई द्वार खुलता था और कोई भद्ररमणी अपना हाथ बाहर निकाल कर याचना करती थी—'ईश्वर के नाम पर एक चुटकी नमक दे दो।' हम लोग द्वार के पास जाकर उसके हाथ में थूक देते थे। एक बरामदे की खिड़की ज़रा-सी खुली और एक मारक्विस ने अपनी खोपड़ी निकाल कर कहा—

'ईश्वर-प्रेम के नाते एक दियासलाई दे दीजिये !'

इस पर मेरे जर्मिनल ने, जो छिन्न-भिन्न होते हुए भी जीवित था, उठ कर एक पत्थर से सारी खिड़कियाँ तोड़ डालीं। तदनन्तर हमने नाचना आरम्भ कर किया। वृत्ताकार खड़े हुए मनुष्यों के बीच में खड़े होकर विधवा क्लेटा ने तो अपना पेटीकोट ही उठा दिया और भुजा फड़का कर कहा—'मैं तो एक सिपाही की विधवा स्त्री हूँ।'

यह परसों की बात है। बहुत अच्छा—अब हम भी देख लेंगे!

मैं पलँग पर लेटी हूँ और स्वतः प्रश्न करती हूँ कि क्या मैं सो रही हूँ। यह इसलिए कि कभी-कभी मैं कुर्सी पर बैठी-बैठी सो जाया करती हूँ और फिर जब वहाँ से उठकर मैं बिस्तर पर जा लेटती हूँ तो मुझे नींद नहीं आती। यह सब मेरे इस बूढ़े शरीर का अपराध है जो एक टूटी हुई घड़ी के सदृश है।

मुझे बाहर नई आवाज़ें सुन पड़ती हैं। ल्यूक्रीशिया रसोईघर में जाकर रकाबियाँ खड़बड़ा देती है। शोर मच रहा है। कोई चुप हो जाने को कह रहा है। इसके पश्चात् मुझे सामर के बोलने की आवाज़ आती है। जीसू! यह बिस्तरे पर पड़े रहने का समय नहीं है। मैं कपड़े पहनकर यह देखने उठती हूँ कि वहाँ क्या हो रहा है। द्वार खुला हुआ है। कुछ लोग आते है और दीवार से लगे लगे इस प्रकार अन्दर जाते हैं कि उनकी पगध्वनि से भाषण में कोई बाधा न पड़ने पाये। वे कारपोरल के शयनागार में जाते हैं और जब मैं झाँककर अन्दर देखती हूँ तो मुझे वहाँ कोई भी दिखाई ही नहीं देता! कुछ मिनट बाद एक लंगड़ा वृद्ध क्रास की सूरत में हाथ उठाता हुआ बाहर निकलता है। सामर उससे प्रश्न करता है—

'तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?'

वृद्ध उसकी ओर देखकर गम्भीर स्वर में कहता है—

'ओफ़! मेरे बच्चे!'

'यह ग़रीबों के लिए पवित्र माता के समान है। जब तुम जान जाओगे तो तुम भी इसी तरह अपने आपको क्रास किया करोगे।'

मैं फिर शयनागार में चली जाती हूँ। वहाँ अब कोई नहीं है। मैं आखें मल कर घर के द्वार पर जा खड़ी होती हूँ। चिथड़ों में लिपटे हुए चार पाँच मनुष्य वहाँ ज़मीन पर सोये हुए हैं। थोड़ी दूर पर दो कामरेड पहरा दे रहे हैं। यह इस उपांत का सबसे दरिद्र भाग है। यहाँ केवल चोर और फ़ाक़ेमस्त रहते हैं। इस घोर अभाव के सामने

ल्यूक्रीशिया का मकान किसी आर्कविशप का महल मालूम होता है। मैड्रिड पर अन्धकार छाया हुआ है। ऐसा मालूम होता है मानो मकानों में प्रकाश पहुँचानेवाले समस्त तार उन्होंने कैंची से काट डाले हों। शाबाश ! यह बहुत अच्छा किया ! इस उपान्त के इन लोगों के लिए, जिनको ईश्वर ने त्याग दिया है, प्रकाश का कोई अधिक महत्त्व भी नहीं है। इससे लाभ ही क्या हो सकता है ? केवल जुएँ और मैला नज़र आने लग जायगा। परन्तु वहाँ सामने मैड्रिड है। और मेरा पुत्र ?

'और आप—आपका जर्मिनल के सम्बन्ध में क्या विचार है ?'

'मेरा ?' एक आकार रहित प्रच्छन्न मूर्ति ने मेरे बराबर श्वास लेते हुए उत्तर दिया।

'अच्छा आप ही कहिये कि मैं क्या विचार करूँ ? वह अब शान्त है।'

'किन्तु उसके समान और कोई तो यहाँ है नहीं, क्या है कोई ऐसा और भी ?'

'प्रत्येक शरीर में एक आत्मा है।'

हम दोनों एक मिनट तक मौन रहे। फिर मैंने प्रश्न किया—

'तुम यहाँ क्यों आया करते हो ?'

उसने मेरी ओर एक विलक्षण भाव से देखकर उत्तर दिया—

'यदि तुम नहीं जानतीं तो मैं तुम्हें बताऊँगा भी नहीं।'

आग लगे इनके रहस्यों को ! इतने में कारपोरल ने आकर प्रसन्नता और शङ्का के मिश्रित स्वर में कहा—

'प्रत्येक उपांतवासी इस बात को जान गया है ; किन्तु पुलिस को अभी पता नहीं चला। किन्तु हम अब उसको एक सुरक्षित स्थान में ले जानेवाले हैं।'

आखिरकार जब दो और मनुष्य शयनागार में जाने लगे तो मैं

भी उनके पीछे हो ली। पलँग की एक ओर फ़र्श में एक चोर द्वार है। उसको उठाने पर एक ढालू ज़ीना दृष्टिगोचर होता है। मैंने सोचा यदि औरतों को नीचे जाने की मनाही होगी तो वे स्वयं मुझसे कह देंगे। तहखाने में लगभग तीन दर्जन मनुष्य उपस्थित हैं। चूँकि छत बहुत नीची है कुछ लोग सिर झुकाये खड़े हैं और कुछ दोहरे हो गये हैं। कुछ अन्य लोग अपने आराम की खातिर घुटनों के बल बैठे हुए हैं। यहाँ अन्धेरा छाया हुआ है। कमरे के सिरे पर केवल दो मोमबत्तियाँ जल रही हैं। सब शान्त और निःशब्द खड़े हैं। चूँकि कोई भी यहाँ सिर ऊँचा नहीं कर सकता ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब प्रार्थना कर रहे हैं। मेरे पास खड़ा हुआ कोई कह उठता है—

'वह दिन अब समीप आ पहुँचा है।'

'कौन-सा दिन?' मैं पूछती हूँ।

'सच्चे न्याय का दिन।'

यह आदमी कभी-कभी हमारे घर आया करता था। जितने भी मनुष्य यहाँ उपस्थित है प्रायः सभी को मैं पहचानती हूँ। मेरे यह पूछने पर कि क्या है? ये लोग एक ऐसा शब्द कहते हैं जिसका अर्थ मेरी समझ में नहीं आता। उल्लू न बनने के विचार से मैं किसी से कोई प्रश्न नहीं करती। कोहनी मारती और धक्के देती हुई मैं आगे पहुँच जाती हूँ। लोग कानाफूँसी कर रहे हैं। आगे की पंक्ति में पहुँचकर मुझे ग्रेको मोमबत्ती का गुल काटता हुआ दृष्टिगोचर होता है। सामने एक मशीन रखी हुई है। शिकारी कुत्ते के सदृश वह लम्बी और दुबली-पतली दिखाई देती है। उसके तीन टाँगें है। ल्यूक्रीशिया के स्वभाव को जानते हुए मुझे उसकी सफ़ाई और चमकीलापन देख कर कोई आश्चर्य नहीं होता। मैं फिर पूछती हूँ कि यह क्या है। लोग फिर वही अटपटा शब्द कहते हैं, परन्तु इस बार वह मुझे याद हो जाता है—

'मशीनगन।'

मेरा विश्वास है कि वह एक मिनट में ५०० फ़ॉयर कर सकती है। इसके पहले मैंने मशीनगन कभी नहीं देखी थी। अपने-अपने विचारों में डूबे हुए सभी आदमी उसकी ओर नीरवभाव से ताक रहे हैं। मैं सोचती हूँ कि यदि जनाज़े के दिन यह हमारे पास होती तो स्पेन के सारे गार्डों का सफ़ाया कर देती और बेचारे जर्मिनल तथा उसके दोनों साथियों की हत्या का बदला चुक जाता। सब लोग अपने टोप हाथों में लिये हुए हैं। मेरे पास खड़ा हुआ एक बहुत दुबला-पतला आदमी गहरी साँसे ले रहा है। मैशीनगन समर्थ तथा मूक है। उसकी एक ओर धातु के डिब्बों का एक ढेर-सा लगा हुआ है। दो बक्स भी पास रखे हैं जिनमें उसकी मरम्मत करने के लिए औज़ार मालूम होते हैं। सभी लोग प्रार्थना करते हुए से प्रतीत हो रहे हैं। न तो मैं औरों से भिन्न मालूम होना चाहती हूँ और न प्रार्थना करने के अतिरिक्त घुटनों के बल बैठकर मैं कोई काम करना ही जानती हूँ, इस-लिए मैं अपनी व्यक्तिगत प्रार्थना इस प्रकार करती हूँ :

'प्यारे ईश्वर, तेरी ही असीम अनुकम्पा से हम लोगों की सहायता के लिए एक ऐसी मशीन प्राप्त हो सकी है, उसके लिए मैं तेरी स्तुति करती हूँ और तुझे धन्यवाद देती हूँ। तूने उसको निर्माण करने के लिए जो बुद्धि हमें प्रदान की है उसके लिए भी मैं तेरी वन्दना करती हूँ और तेरा धन्यवाद करती हूँ।' मैं एक बार 'प्रभु की प्रार्थना' पढ़कर यह मनाती हूँ कि इस मशीन के चलानेवालों को कोई हानि न हो और उसकी गोलियाँ उन लोगों के हृदयों में प्रवेश करें जिन्होंने मेरे पुत्र की हत्या की है।

मेरे पीछे से अराजकवादियों के इधर-उधर आने-जाने की पदचाप सुनाई देती है। ग्रेको कहता है कि हम लोग अब इसे बक्स में बन्द कर देंगे और हर एक दर्शक का कर्तव्य है कि क्रान्ति माता के नाम पर

इस रहस्य को अपने हृदय ही में रक्खे और सारे काम पूर्ववत् करता रहे। दर्शकवृन्द में से दो व्यक्ति इसका निषेध करते हैं—

'साम्यवादी भी तो रहस्य को गुप्त रखना जानते हैं।'

ग्रेको इसका यह उत्तर देता है—

'हाँ हाँ, क्यों नहीं। मैं इस बात को जानता हूँ। परन्तु हमें ग़लत-फ़हमियों में नहीं पड़ना चाहिये। लोगों को भ्रम में डालकर उत्तेजित मत करो। वादविवाद का यह समय नहीं है।'

मैं फिर इन लोगों पर दृष्टिपात करती हूँ। यदि इन लोगों में अपनी इच्छा के अनुकूल कार्य करने की सामर्थ्य है तो यह मशीन भन्-भन् करती हुई बूर्ज़्वा लोगों की खिड़कियों में गोले पहुँचा देगी। आज ही रात को संसार में एक भी बूर्ज़्वा जीवित नहीं रहेगा।

कोई एक प्रश्न करता है:

'यह मशीन किसकी है?'

चार पाँच ने उत्तर दिया—

'क्रान्ति की!'

ग्रेको मेरे समीप आकर कहता है—

'दादी, ज़रा इसे देखो तो। कैसी साफ़ है। जवानी कैसी फूटी पड़ रही है। हमारे पक्ष की सबसे पहली मशीनों में से यह एक है। हैं और भी मशीनगनें जो सिविल गार्डों के पास हैं। कुतियें! छिनालें! कामरेडगण,' उसने समस्त दर्शकों को सम्बोधित करते हुए कहा, 'ज़रा इस ओर देखो! यह एक अमरीकन नमूने की हाँचकिस मैशीन-गन है! यह सर्वोत्तम शस्त्र—'

एक वृद्ध ने बात काटकर कहा—

'कामरेड ग्रेको, मुझे क्षमा कीजिये। एक और शस्त्र है जो इससे भी अधिक प्रभावशाली है—संस्कृति—ज्ञानोन्नति।'

इस पर यह सभी लोग हँस पड़ते हैं। मशीनगन बक्स में बन्द कर

दी जाती है ग्रेको कहता है—

'संस्कृति बूर्ज़्वा लोगों का एक चकमा है। हमें दास बनाने के लिए यही सबसे बड़ा फाँसा है। इसी की दुहाई देकर हमें दासता की ज़ंजीरों में जकड़ा जाया करता है।'

'हमें संस्कृति नहीं चाहिये! ज्ञानोन्नति जाए भाड़ में! मशीनगन उसको भस्मीभूत कर देगी!'

साम्यवादी पुकार उठते हैं—

'ज्ञान को मार्क्स ने विकसित किया।'

सफ़ेद गलमुच्छोंवाले वृद्ध ने कहा—

'और ग्रीस और रोम ने क्या किया? डेमास्थनीज़ और अफ़लातून क्यों अमर हुए?'

'यह सब कोरी बकवास है! हरामी बूर्ज़्वा लोगों की बीट!' नौजवानों ने चीखकर उत्तर दिया।

अब जैसे ही बुड्ढा भाषण देने को उद्यत हुआ कि ग्रेको मोमबत्तियाँ बुझाकर खिसक चला। मैं भी उसकी जाकट पकड़कर इस भय से कि कहीं हाथापाई आरम्भ न हो जाय पहले ही बाहर निकल आई। ग्रेको ने ज़ीने पर पहुँचकर कहा—

'भाइयों, सब बाहर चले आओ!'

दियासलाइयाँ जला जलाकर लोग बाहर आये। बुड्ढा अब भी नवयुवकों से वादविवाद करने पर तुला हुआ है और वह उसे खूब बना रहे हैं। अब मैं शान्तिपूर्वक सोने जा रही हूँ।

मैं लेटकर प्रार्थना करती हूँ। संत जोज़ेफ़ के बजाय मैं मशीनगन को सम्बोधन करती हूँ। मैं ठीक तो नहीं जानती; किन्तु मेरा विचार है कि यदि हम इस कुमारीदेवी की शरण पहले से ग्रहण कर लेते तो जर्मिनल न मारा जाता और मुझे इस प्रकार जूड़ी न आया करती, क्योंकि उस हालत में इन पुलिस के कुत्तों का अस्तित्व संसार में न होता।

किन्तु आजकल तो इनकी भरमार है। इन जंगलियों के मुँह पर तोबड़े नहीं हैं, इनकी थूथड़ियाँ खुली हुई हैं। इनके पास टिकट और बिल्ले हैं। वे अपने कोटों के कालर चढ़ाकर भाग जाएँगे। इसी उद्देश्य से ये सब सफ़ेद और पीले नौजवान विचारपूर्ण और निःशब्द भाव से इस कुमारी के सामने खड़े हैं। मैंने 'पीले' इसलिए कहा कि हमारे साथ एक समाजवादी भी उपस्थित था। परन्तु हममें से हर एक इस कुमारी की पूजा करता है।

बस अब बातचीत बन्द। बस अब तो प्रार्थना किये जाओ! गिंडारों की तरह रेंगते हुए सब लोग नतमस्तक होकर कुमारी की शरण ग्रहण करते हैं। हाँचकिस देवी के सामने मुख उठाकर सब अपनी मनोकामना निवेदन करते हैं और फिर भूख से संघर्ष करने को चले जाते हैं। परन्तु आज उनके मुखों पर शान्ति और सन्तोष की आभा देख पड़ती है जैसी कि गिरजाघर में सामूहिक प्रार्थना के पश्चात् लौटने पर भक्तों के मुख पर हुआ करती है। जर्मिनल को ऐसी मशीन मिल जाने के लिए मैं न जाने क्या कुछ दे डालती। अब भी इस बात का सन्तोष है कि जर्मिनल के पक्ष को एक ऐसी दृढ़, इतनी तीव्र और चालाक, ऐसी बहादुर और निर्मल वस्तु की उपलब्धि हुई है जिसके द्वारा हम लोग भी गलियों में खूब गोलियाँ बरसा सकेंगे।

मुझे नहीं मालूम कि मैं क्या कह रही हूँ, क्योंकि मैं नींद में हूँ। मुझे अपने सामने हजामत बिना बने हुए चेहरों का एक समुद्र-सा देख पड़ रहा है। एक ओर ेको खड़ा हुआ है और दूसरी ओर वही बुड्ढा। ग्रेको कहता है—

'कुमारी हाँचकिस के अतिरिक्त सब मशीनें हमें गुलाम बनानेवाली हैं।'

संक्षुब्ध सागर के सदृश भीड़ चिल्ला उठती है—

कुमारी हॉचकिस हमारी पवित्र माता है।'

सफ़ेद गलमुच्छोंवाला बुड्ढा ज़ोर से कहता है—

'हमारी माता हमें यह बताएगी कि अराजकता सर्वश्रेष्ठ है।'

उसकी बात पर कोई ध्यान नहीं देता। ग्रेको फिर पुकार कर कहता है—

'हमने अपने हाथों से यह मशीनगन बनाई है।'

'यह कुमारी हॉंचकिस हमारी पुत्री है।' भीड़ कहती है।

ग्रेको अपना रिवालवर निकालकर उठ खड़ा होता है और कहता है—

'क्रांति की इस मशीन पर हमें पूर्ण विश्वास और आशा रखनी चाहिये।'

'कुमारी हॉचकिस हमारी अन्तरात्मा है! हुर्रे! हुर्रे!'

तत्पश्चात् ग्रेको इस प्रकार बोलता है मानों वह कोई प्रार्थना सुना रहा हो—

'मंत्रियों, डायरेक्टर जनरलों, लाट पादरियों, भद्र कुतियो!'

'तुम सब हमारे हाथों मौत के घाट उतरोगे!'

'पार्लियामेंट के सदस्यों, गवर्नरों, पादरियो—'

'तुम हमारे हलों में जुतकर खेत जोतोगे!'

'स्नातिकाओ?'

'अपने शुष्क स्तनों को दबाकर दूध निकालती हुई तुम जीवन में प्रथम बार मुस्कराओगी!'

'गिरजाघर के सन्तों!'

'इनकी छोटी-छोटी छेपटों से हमारी प्रेमिकाएँ शोरवा गरम किया करेंगी।'

'और पवित्र भाजन!'

'उनको हम अपने धर्म-तोड़क उत्सव के दिन काम में लाएँगे।'

'सरकारी स्टॉक के सार्टिफ़िकेट, कुलीनता के परवाने, वसीयतनामे और लाट लोगों के स्मारक, पदक और चिह्न!'

'वे गलियों में जलाये जायेंगे और हमारे बच्चे उनकी राख को पैरों से रौंदेंगे !'

'और पवित्र कुमारी !'

'वह प्रसव-वेदना सहन करेगी।'

'यस्सू, ख़ुदा का बेटा !'

'हम उसे कमज़ोर दिमाग़वाले बच्चों के स्कूल में भरती करेंगे !'

'खुदा, तीन में एक और एक में तीन, सर्व-शक्तिमान !'

'ख़ुदा है ही नहीं ! हम ख़ुदा से भर पाये !'

'पवित्र गमछों से हम अपने नवजात शिशुओं के मल-मूत्र साफ़ किया करेंगे।'

'क्रांति के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं !'

'कुछ भी नहीं ?'

'हाँ कुछ भी नहीं ! और हम केवल इस प्रकार की मशीन—कुमारी हॉचकिस को उसका प्रतीक स्वीकार करते हैं !'

चौथा रविवार

आशाएँ और निष्फलता

कामरेडों का विवाद—स्टार का 'कार्य'

कार्यवाही की याददाश्त में सेक्रेटरी लिखता है :—

'कामरेड सामर कहता है कि चूँकि यह काम बहुत ज़रूरी है इसलिए सबसे पहले मेरे प्रस्ताव पर बहस हो जानी चाहिये। जातीय समिति के नाम जो संदेश फिरे नये सिर से लिखा गया है उस पर सबको सहमत हो जाना चाहिये ताकि वह प्रातःकाल बार्सिलोना जानेवाले वायुयान पर ठीक समय पहुँचा दिया जा सके।'

कामरेड अरबैनो इसका विरोध करता है। और भी कई सदस्य जो इस प्रस्ताव से पहले से परिचित हैं उसको ज़रूरी नहीं समझते।

कामरेड अैको का भी यह मत है कि सामर के प्रस्ताव की अपेक्षा कमेटी के लिए अपने चार सदस्यों की गिरफ़ारी के सवाल पर विचार करना ज़्यादा ज़रूरी है। गिरफ़ार शुदा मेम्बरों के नाम हैं—लिबर्टो

ग्रेशिया रुइज़, एलिनियो मारग्राफ़, जोज़ी क्राउज़ेल और हेलियॉज़ पीरेज़। इनमें से अन्तिम के साथ बहुत कड़ा व्यवहार कि या गया है।

कई और कामरेड भी ग्रेको के निषेधार्थक प्रस्ताव के पक्ष में बोलना चाहते हैं। अन्त में यह निश्चित होता है कि इस मामले की रिपोर्ट कारागार समिति के पास भेज दी जाय।

कामरेड सामर अपने प्रस्ताव की पेशी पर फिर ज़ोर देता है। उसकी दरख्वास्त मंजूर हो जाती है। वह अपनी आक्रमणात्मक स्कीम का स्पष्टीकरण करता है। उसका आधार इस वस्तुस्थिति पर है कि शनिवार के दिन कामरेडों की हत्या के परिणाम स्वरूप जनता में जो विद्रोह, उत्तेजना अपने आप पैदा हुई है वह इस समय अत्यन्त बलवती हो उठी है और बूर्ज्वा लोगों में उससे भीषण उथल-पुथल मच गई है। इस सम्बन्ध में यह बात विशेषतया विचारणीय है कि अरलांज़ा के खनिज प्रांत में मज़दूरों ने अपना आधिपत्य जमा लिया है। यह कि आने-जाने तथा अन्य संसर्ग सम्बन्धी साधनों में इतनी अड़चनें पड़ गई हैं कि डाकगाड़ियों में सैनिकों से काम लेना पड़ रहा है। समस्त संस्थाओं ने आम हड़ताल का निश्चय कर लिया है और उन स्थानों में जहाँ हमारा नियंत्रण नहीं है विघ्नात्मक कार्य द्वारा हड़ताल करा दी गई है—मैड्रिड में यह बात विशेषतया विचारणीय है कि एक दो पेजी सरकारी पर्चे के अतिरिक्त एक भी समाचार पत्र नहीं निकल रहा है। इस बात पर भी ध्यान रखते हुए कि कई स्थानों में सेना अबतक तटस्थ है या हमारी सफलता से प्रभावित होकर वह हमारे साथ नैतिक सहानुभूति रखती है ; यह कि मैड्रिड की चार बारकों में विद्रोह फैलाने की चेष्टा की जानेवाली है जिनमें दो बारकों में सफल होने की अधिक संभावना है। यह बात स्वीकार करते हुए कि हमारे पास बहुत से शस्त्र मौजूद हैं और हमें और भी प्राप्त हो सकते हैं, यह कि बूर्ज्वा लोगों का सारा कामकाज इस समय तहस-नहस हो रहा है, हमारे लिए यह परमावश्यक है, कि हम

इस क्रान्ति सम्पन्न शक्ति को जिसने बूर्ज्वा लोगों के संगठन और प्रभुत्व को इतना बड़ा धक्का पहुँचाया है, सम्बद्ध करके किसी राजनैतिक उद्देश की सिद्धि के लिए प्रयोग में लायें।

कई कामरेड सामर के 'राजनैतिक उद्देश्य' वाक्य के विरुद्ध बोलने की आज्ञा माँगते हैं। सामर इन शब्दों को वापस लेकर उनकी जगह 'कुशल क्रियात्मक लक्ष्य' रख देता है। इस पर लोग सहमत हो जाते हैं और सामर आगे बढ़ता है। वह कहता है कि यदि हम परम-सीमा पर पहुँचने में देर लगायेंगे तो बूर्ज्वा लोगों की प्रतिक्रिया का सामना करना पड़ेगा और हमारी सफलता के मार्ग में इससे ज़्यादा बड़ी बाधायें उपस्थित होंगी। अपने भाषण को समाप्त करता हुआ वह कहता है कि उपांतों की कमेटियाँ, विद्रोही सैनिकों के साथ, उन शस्त्रों को लेकर जो उनके पास हैं और जिनको वह प्राप्त कर सकें, उसी दिन अन्तिम कार्यवाही कर डालें, उन्हें अपने चार्टर और प्रथम शासन-पत्र की घोषणा कर देनी चाहिये। इस नवीन क्रान्तिकारिणी सत्ता के प्रथम आदेशों द्वारा वर्तमान व्यवस्थापिका तथा राजनीतिक मशीनरी के तोड़े जाने की घोषणा हो, समस्त वर्गसम्बन्धी स्वत्वों का निषेध कर दिया जाय और सिंडीकेट की आज्ञाओं के पालन का सारा भार मज़दूरों को सौंप दिया जाय और सैनिकों को आज्ञा दी जाय कि वे स्वयं अपनी कमेटियाँ बना लें और सारा आवश्यक प्रबन्ध करते हुए वे जहाँतक सम्भव हो, अपने अफ़सरों का पद तोड़कर उन्हें भी साधारण सैनिक बना दें। ऐसे चार आदेश-पत्र निकाले जाने आवश्यक हैं, जिनमें से प्रत्येक का आधार वे चार मूल सिद्धान्त होंगे जो इस नवीन सत्ता के प्रधान अङ्गों पर हावी होंगे और उसकी विजय के मूल-स्रोत होंगे।

कई कामरेड बोलने को व्याकुल हो रहे थे और बारम्बार सभापति से अनुमति माँग रहे थे। वे लोग सामर के भाषण में बराबर बाधा दिये जा रहे थे। अन्त में सामर यह कहता हुआ बैठ गया कि पहले

आप लोग बोल लीजिये, मैं बाद में बोलूँगा। कामरेड अरबैनों ने शासन छीनने और आदेशपत्र निकालने का घोर विरोध किया। उसकी राय में आधिपत्यवाद एक भयानक दोष था और उसको इस बात का बड़ा आश्चर्य था कि कामरेड सामर को किस प्रकार ऐसे शब्द प्रयोग करने का साहस हो सका।

कामरेड सामर ने उससे पूछा कि क्या उसे यह विश्वास है कि जो मज़दूर हथेली पर सिर रखकर गलियों में लड़ रहे थे वे उसके साथ सहमत हैं। सामर यह भी कहता है कि अब कामरेड गिसवर्ट को, जिसने पहले बोलने की आज्ञा माँगी थी, बोलने दिया जाय। परन्तु गिसवर्ट ने कहा कि उसे कामरेड अरबैनो के भाषण के बाद और कुछ कहना नहीं है।

सामर यह आग्रह करता है कि मध्यस्थता का अर्थ अधिक सुस्पष्ट कर दिया जाय। गिसवर्ट कहता है कि यदि क्रांति की सफलता का अर्थ राजनीतिक उद्देश्य की सिद्धि, प्रभुत्व-प्राप्ति एवं आदेश निकालना है तो मैं क्रांति करना नहीं चाहता।

कामरेड सामर कहता है मैं कामरेड गिसवर्ट का भाव समझने में असमर्थ हूँ, जिसका गिसवर्ट यह उत्तर देता है कि वह सामर जैसे क्रांतिकारियों का विरोधी है; क्योंकि यह सारा संघर्ष समानाधिकार तथा स्वतंत्रता के लिए किया जा रहा है।

कामरेड सामर उसे यह स्मरण कराता है कि उसने भाईचारे का शब्द तो कहा ही नहीं, और यह जानते हुए कि कामरेड गिसवर्ट फ्रांस में रह चुके हैं, जहाँ बूर्ज़्वा लोगों की सशस्त्र पुलिस ने समानता, भाईचारे और स्वतंत्रता की दुहाई देकर उसकी पीठ पर कोड़े लगाये थे, उसकी बातों पर और भी आश्चर्य हो रहा है। कामरेड गिसवर्ट अपने मतका स्पष्टीकरण करता हुआ फ्रेंच क्रांति की त्रुटियाँ बताता है और कहता है कि यदि संसार का उद्धार बिना किसी शासनसत्ता के निर्मूलन

किये, चाहे वह कितनी ही नीतिपरायणा क्यों न हो, नहीं हो सकता और यदि व्यक्तिगत स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करना अनिवार्य है तो वह यही चाहेगा कि यह संसार ऐसे उद्धार के बजाय रसातल चला जाय तो कहीं अच्छा है।

कामरेड सामर कहता है कि कामरेड गिसवर्ट का यह विचार बड़ा भयानक है और यदि वह उनसे सुपरिचित न होता तो उन्हें एक दैत्य समझे बिना न रह सकता।

कामरेड गिसवर्ट उत्तर देता है कि बूर्ज्वा लोग उसको ऐसा ही समझते हैं और वह इस बात को सम्मान-सूचक ख़याल करता है।

सभापति सबसे शान्त हो जाने को कहता है और कामरेड सामर अपना भाषण पुनः आरम्भ कर देता है। प्रथमादेश 'युद्धावस्था' की घोषणा का उत्तर है। उसके द्वारा यह घोषित किया जायगा कि हम गृहयुद्ध के लिए कटिबद्ध हैं। जो सैनिक श्रमजीवियों का पक्ष ग्रहण करके क्रांतिकारिणी सत्ता की ओर से पूँजीवाद सत्ता के समर्थकों—सिविल गार्डों और छापा मारनेवाली पुलिस—से युद्ध करने को तैयार होंगे, इसमें उनकी काउन्सिलें बनाने के विषय भी दिये गये हैं।

द्वितीय आदेश के द्वारा उन सब नियमों का खण्डन होगा जिनका कि सम्बन्ध दूसरों के परिश्रम से, आर्थिक विशेषाधिकारों या व्यक्तिगत लाभ के लिए किये हुए कारखानों से है। अतः घोषणा-दिवस से न तो कोई टेक्स देगा, न सार्वजनिक सेवा करके कर अदा करेगा और न कोई मज़दूर सिंडीकेटों की आज्ञाओं के अतिरिक्त किसी फ़ैक्टरी या दुकानवाले का कोई हुक्म मानेगा। इस आदेश द्वारा यह भी व्यवस्था की जायगी कि क्रान्तिकारी प्रान्त में सिंडीकेटों के नियंत्रण में खानों में काम बराबर होता रहे। और आमतौर पर इस संघर्ष के दो पहलू मान्य होंगे—सिविल नाफ़र्मानी और सशस्त्र आक्रमण।

तीसरे आदेश के द्वारा जब तक कि केंद्रीय समिति तथा स्वाधीन

सिंडिकेटों के प्रतिनिधियों की कांग्रेस की बैठक न हो समस्त शक्ति इस कमेटी के हाथों में सुरक्षित रहेगी।

कामरेडगण सेगोबिया, अरग्नेलीज़ और टारासा बीच में बाधा देकर आग्रह करते हैं कि स्वाधीन सिंडीकेटों को सम्मिलित करना अनावश्यक है। इस पर सामर यह प्रश्न करता है कि क्या वे उन्हें क्रान्तिकारी नहीं समझते ? आपत्ति करनेवाले तीनों कामरेडों में से कोई भी न तो इस बात को स्वीकार करता है और न इससे इनकार ही करता है।

कामरेड अरबैनो 'शान्त शान्त' कहता हुआ खड़ा हो जाता है। वह कहता है कि इस प्रकार समय नष्ट हो रहा है ; अतः पहले सामर के इस दृष्टिकोण पर कि क्रान्ति को आधिपत्यात्मक और राजनैतिक रूप दिया जाय, वोट ले लिये जाँय। यदि यह स्वीकृत हो जाय तो आगे चला जाय, अन्यथा इस सम्बन्ध में और कुछ कहना व्यर्थ है।

सामर इस बात पर ज़ोर देता है कि प्रश्न सिद्धान्त का नहीं बल्कि युद्ध-नीति का है, इसलिए यही अच्छा होगा कि उसका सारा ब्यौरा सुनने के बाद ही वोट लिये जाँय। अरबैनो और अन्य तीन कामरेड इस बात का विरोध करते हैं। वे फिर बोलने की आज्ञा माँगते हैं। अतएव कामरेड सभापति कहता है कि समय बचाने के अभिप्राय से पहले वोट ले लिये जाँय। सामर भी अब कोई आपत्ति नहीं करता।

सामर के पक्ष में ५ और विरोध में ७ वोटें पड़ती हैं। अतः कार्य-क्रम के पहले विषय पर बहस होनी आरम्भ हो जाती है, किन्तु सामर के पक्ष में वोट देनेवाले कहते हैं कि उनके वोटों को लेखबद्ध कर लिया जाय और—

सामर पौ फटते हुए आकाश की ओर ताकता हुआ और सोचता है—

यदि लिबर्टो, एलिनियो, जोज़ीफ्राडजेल और हेलियाँस के बजाय पुलिस ने अरबैनो और ग्रेको को गतरात्रि में पकड़ा होता तो अवश्य आज

मेरा ही बहुमत होता। यह चारों निस्सन्देह मेरे ही पक्ष में वोटें डालते। इसलिए नहीं कि वे अधिक बुद्धिमान या तीक्ष्ण बुद्धि हैं बल्कि केवल इस वजह से कि वे युवक हैं और यह बात समझते हैं कि इस बूर्ज्वावाली स्वाधीनता की सनक में हमें क्रान्ति की बलि नहीं चढ़ा देनी चाहिये। इन खूसटों ने यही तो किया है। हमारी सफलता संभवतः इसी बात पर निर्भर थी।

उसके कानों में एक शब्द भन्-भन् कर रहा था—'विश्वासघात!' हमेशा की तरह, दुष्परिणामों का तनिक भी आभास न रखते हुए अनजान में विश्वासघात करना! जब अरलांज़ा के मज़दूरों को यह पता चलेगा कि हमने उन्हें इस संकटावस्था में निस्सहाय छोड़ दिया है तो वे बेचारे क्या करेंगे? यदि हम लोग सरकार की प्रबल और विशाल सेना के सामने एक सुदृढ़ तथा सारगर्भित कार्यक्रम के अनुसार युद्ध करते तो यह छितरा हुआ विप्लव संगठित युद्ध का रूप धारण कर लेता और क्रांति की यह द्विविधा—स्वप्न भ्रमणता—एक नवीन प्रेरणा शक्ति के रूप में परिणत हो जाती। लड़ाई का नक्शा तैयार करना परमावश्यक था। आगे बढ़ने के लिए एक सड़क। दूर से आता हुआ प्रकाश। स्वतंत्रता सड़क के दूसरी ओर खड़ी बढ़े चले आने का संकेत कर रही है। परन्तु उसके पास पहुँचें किस तरह? हमारे यहाँ तो उस मूर्ख के सदृश मनुष्य मौजूद हैं जिसने कि केवल अपनी इच्छा शक्ति की दृढ़ता दिखाने के लिए दियासलाई से अपना सारा हाथ जला डाला था और वह अभागा यह तक न समझ सका कि मैं मूर्खतावश अपने मिथ्याभिमान का तमाशा दिखा रहा हूँ! आक्रमण का कार्यक्रम तो केवल दृढ़ मानसिक शक्ति रखनेवाले मनुष्य ही बना सकते हैं। यह इन लोगों के बस का काम नहीं है जो सदैव वादविवाद और समझौते करते रहते हैं। सामर को वह अवसर भी याद आ गया कि जब ग्रुप-कमेटी में उसने इन कामरेडों का वादविवाद सुना था और

उनकी बकबक-झकझक से उसका सिर चकरा गया था। अन्य लोगों का हाल भी उसी के समान था। इन लोगों को केवल विवाद ही के लिये वादविवाद करने में मज़ा मिलता था, वे उसमें इतने तन्मय हो जाते थे कि अपना पक्ष छोड़कर प्रतिपक्ष का समर्थन करने लग जाते थे। अपने तुच्छ विचारों की भूलभुलइयों में फँस जाने पर उनके चेहरों से आत्म-गौरव तथा संतोष का ऐसा भाव झलकता था कि यह मालूम होता था कि इनको क्रान्ति से वास्तव में कुछ भी प्रेम नहीं है। पुरोहितों के सदृश वे सदैव दुनिया के दुःखों के सम्बन्ध में कुछ न कुछ अवश्य कहते थे, किन्तु इतना कह देने के पश्चात् वे बिलकुल शांत हो जाते थे! बस यही उनका उद्देश्य था। जो मज़दूर बड़ी श्रद्धा के साथ इनके पास मशविरा लेने आते थे वे बड़े असमंजस में पड़ जाते थे, उनकी समझ में कोई बात जँचती ही न थी, फिर भी वे यह अवश्य समझते थे कि इन बहस करनेवालों ने समाचार-पत्रों के सारे लेख निस्सन्देह पढ़ रखे हैं। इसके अलावा शायद एक डॉलरवाली कोई मोटी पुस्तक भी पढ़ी हो। सिर हिलाकर सामर फिर सूर्योदय का दृश्य देखने लग गया।

वह फिर सोचने लगा कि ये लोग भी उन्हीं मनुष्यों के अन्तर्गत हैं जो किसी साहूकार के कट्टर विरोधी होते हुए भी, यदि वह बढ़िया टाई लगाकर कोई मानव हित की बात-भर मुँह से निकाल दें, तो उसको सत्यपरायण मान लेने की मूर्खता कर सकते हैं। वे मनुष्य जो यद्यपि श्रमजीवियों के पक्ष में है, केवल वह दिखाने के लिए कि उन्होंने प्राचीन साहित्य का अध्ययन किया है, परस्पर वादविवाद किया करते हैं—ऐसे मनुष्यों से क्या आशा की जा सकती है? इन सबके साथ विवाद करने या सहमत हो जाने से क्या लाभ? युद्ध का कौन-सा कार्यक्रम, किस प्रकार का संलग्न विश्वास, कौन-सी तर्क-सिद्ध व्यवस्था इनमें एकता स्थापित कर सकती है?

वह अभी इन्हीं विचारों में निमग्न था कि बाँह में एलूमीनियम की बालटी लटकाये हुए स्टार सहसा उसके सामने आ खड़ी हुई। मुर्गा उसके पीछे-पीछे चला आ रहा था। सामर ने उससे कहा—

'कारपोरल के घर जाकर मेरे आने की प्रतीक्षा करो !'

आज्ञानुसार स्टार वहाँ से चल पड़ी। मुर्गा उसके पीछे हो लिया। सामर ने यह बात नोट की कि उस दुःखान्तक घटना के बाद से, स्टार हर रोज़ एक नये रंग की जर्सी पहना करती है। आज वह सफ़ेद जर्सी पहने हुए थी। उसने उसको जाते हुए अच्छी तरह देखा और सोचने लगा—

'यह है क्रांतिकारिणी। न तो इसने अराजकवाद के प्रामाणिक ग्रन्थों का अध्ययन किया है और न कल्पनावाद के साहित्य का। यह कभी असाधारण वीरता की बात सोचती ही नहीं। उसकी हड्डियों में क्रांति भरी हुई है, उसके लापरवाही से मुस्कराने में क्रान्ति की घटा देख पड़ती है। वह बिना माथापच्ची किये हुए क्रान्ति में अनन्य श्रद्धा रखती है। वही उसके जीवन जौर विश्वास का एक मात्र आधार हैं।'

स्टार आगे-आगे चली जा रही थी और मुर्गा पीछे-पीछे चल रहा था। इतने में एक पहाड़ी कुत्ता उधर आ निकला। मुर्गा जल्दी से कूदकर स्टार के दूसरी ओर आ गया और स्टार ने झुककर एक पत्थर उठा लिया। कुत्ते के चले जाने पर स्टार ने पत्थर फेंक दिया और ये दोनों फिर शांतिपूर्वक चलने लगे। इस समय मैड्रिड प्रभात के सफ़ेद-और-नीले गुम्बज से ढँका हुआ था। सामर बारकों की ओर लौटा जा रहा था; किन्तु वहाँ पहुँचने से पहले वह बाँयी ओर के एक मकान में घुस गया। घोषणापत्रों का पुलन्दा लिये हुए वह वहाँ से बाहर आया। उसे इस विचार से कुछ प्रसन्नता-सी हो रही थी कि यदि वह इस दशा में पकड़ लिया जाय तो उस पर तत्काल दोषारोपण करके उसको गोली मार दी जायगी। चूँकि वह अपनी विभिन्न मनःस्थितियों का विश्लेषण

करना पसन्द करता था ; अतएव उसने यह सोचना आरम्भ कर दिया कि उसको इस समय अपनी मौत की बात भी बुरी क्यों नहीं लग रही है।

उसने मन-ही मन कहा कि हमारे कुछ सहकारियों का आचरण हमारे विरुद्ध है। वही हम सबको नीचे गर्त में ढकेले दे रहा है। वे अनजान ही में हम सबके--अपने और मेरे--प्राणों के लेत्रा बने हुए हैं।

उसके अन्तस्तल की गहराई से एक निषेधात्मक स्वर उठा—'मेरे नहीं—वह मुझे कोई हानि नहीं पहुँचा सकते।' फिर वह सोचने लगा—

बूर्ज़्वा अन्तःकरण के क्षय का कदाचित् यह अनिवार्य परिणाम है। मेरे लिए यह उसकी अन्तिम ठोकर है।

उसने फिर विचार किया—

या संस्कृति द्वारा अपने आपको उठाना असम्भव समझकर यह मानवता की अपने ही विरुद्ध प्रतिक्रिया है।

जब वह इन विचारों में उलझा हुआ इधर से उधर टहल रहा था तो उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो अनन्ताकाश में विचरण कर रहा हो।

वह स्वतः कह रहा था कि क्रांति का भाव न तो इन लोगों में है और न प्रजातन्त्रवादी लिबरलों ही में, जो पहले डिक्टेटरी से लाभ उठाते हैं और फिर रिपब्लिक द्वारा स्वार्थ सिद्ध करते है और मेले के पत्तेबाज़ों के सदृश क्रान्तिकारी प्रोपेगंडा की बीस प्रतिशत छूट पर बाज़ी लगाते हैं। और उन लोगों में तो इस भाव का होना और भी दुर्लभ है, जिनको यदि किसी दूसरे के बढ़ जाने से मुक्ति मिलती हो तो वे ऐसी मुक्ति को भी ठुकरा देंगे या उन आदमियों में जो अपना उल्लू सीधा करने के लिए क्रान्ति की भी बलि चढ़ा सकते हैं। ये लोग आत्म-न्यूनता के रोग से पीड़ित हैं और चूँकि ये सब ओर से निराश हो गये

हैं; इसलिए उस आरजेन्टाईन के समान सर्वनाशवादी बन गये हैं। परन्तु यदि बूर्ज्वा लोग इनको ज़रा भी मुँह लगाने लगते हैं तो ये तत्क्षण उनके समर्थक बन बैठते हैं। कुछ लोगों ने मेरे प्रस्ताव को इसलिए अस्वीकृत कर दिया है कि वह मार्क्स के सिद्धान्तानुकूल है, कुछ ने इसलिए कि वह सोलहों आने सिंडीकेटवाद है। किसी ने उसको सर्वथा उचित समझते हुए भी इसलिए ठुकरा दिया है कि उसका समर्थन एक ज़्यादा अच्छे बोलनेवाले कामरेड ने किया है। उन्हें इसी बात का शोक है कि कोई दूसरा उनसे अच्छा बोलनेवाला क्यों पैदा हो गया! यह सभी निषेधात्मक शक्तियाँ हैं! भौतिक दुर्बलता और सूखी हुई आत्मा! प्रातःकालीन प्रकाश तक में निषेध प्रतीत हो रहा है। वायु में हिलते हुए वृक्ष, नीले जल में प्रतिबिम्बित सूर्य—सभी 'नहीं, नहीं,' कर रहे हैं।

रिवालवर छूट रहे हैं। हृदय कट रहे हैं, मुँह से लहू निकल रहा है; किन्तु फिर भी हर तरफ़ से निषेध हो रहा है!

सामर की विलाकम्पा से भेंट होती है। कल रात पुलिस उसके मकान पर गई थी। इसलिए उसे घर जाने का साहस नहीं हुआ और वह खुले मैदान ही में कल रात सोया था।

'क्या तुम बारकों में कोई काम करने जा रहे हो?' सामर ने पूछा।

'नहीं तो,' विलाकम्पा ने उत्तर दिया। 'मैं तो यह समझता था कि यह काम आपने अपने ऊपर लिया है।'

'हाँ, किन्तु मुझे आज रात रुकना पड़ेगा। यह थोड़े-से घोषणा-पत्र हैं। इसके बाद दो सारजेन्टों और प्रतिनिधि क्रान्तिकारिणी समिति के साथ हमारी बैठक होगी। फिर यह कल मालूम होगा कि वह हमारे साथ आक्रमण में सम्मिलित होंगे या नहीं।'

'आपके विचार में क्या होनेवाला है?'

'मैं तो हर काम के लिए तैयार हूँ। जब वे न कोई निश्चित

उद्देश्य स्वीकार करते हैं और न कोई कार्यक्रम, तो हम निश्चित रूप से विचार ही क्या कर सकते हैं ? हमें अब व्यवस्थित रूप से आगे बढ़ना है। बहरहाल हम निश्चिन्तता पूर्वक बिना रुके आगे बढ़ेंगे। हमें कोई रोक नहीं सकता।'

अब ये दोनों साथ-साथ आगे बढ़ते हैं। सामर कहता है कि उसे इस बात पर आश्चर्य हो रहा है कि न तो सेना ने अभी तक उपांत की गलियों पर अधिकार किया है और न यहाँ कहीं गार्ड या सार्जेन्ट ही दिखाई पड़ रहे हैं। लियंशियो इसकी इस तरह व्याख्या करता है—

'यहाँ कुछ भी हुआ करे, इसकी उन्हें कोई परवा नहीं है। यहाँ न कोई बैंक है और न कोई गिरजाघर। कोई मंत्री भी यहाँ नहीं रहता। फिर यहाँ है ही क्या, जिसकी रक्षा करने की इन्हें कोई चिन्ता हो। बारकों में, थानों में, चारों तरफ़ देहात में फ़ौज और पुलिस तैयार है। उपांत में भी उनकी भरमार है।'

फिर विलाकम्पा पिछली गिरफ़्तारियों का विषय छेड़ देता है। उसका विचार है कि क्राउज़ेल के पास से बहुत-से काग़ज़ात पकड़े गये होंगे। सामर कन्धे उचकाकर इसका यह उत्तर देता है—

'हमारी संस्था भर में एक भी ऐसा काग़ज़ नहीं है जिससे कोई भेद मालूम हो सके। वर्तमान रीति से काम करने का यही एक लाभ है।'

'जब आपका यह विचार है,' लियंशियो ने प्रश्न किया, 'तो फिर आप 'कार्य' क्यों कर रहे हैं ?'

'इससे तुम्हारा क्या अभिप्राय है ? मैं 'कार्य' क्यों न करूँ। सभी अड़चनों के होते हुए क्रान्ति आगे बढ़ी जा रही है।'

अब वे कारपोरल के मकान में जा पहुँचते हैं। घुटनों पर बाल्टी रखे हुए स्टार वहाँ प्रतीक्षा कर रही है। दो हज़ार घोषणापत्र उसमें रख दिये जाते हैं। सामर विलाकम्पा की ओर दृष्टिपात करता है।

उसके नेत्र शून्य किन्तु दृढ़ हैं। न उनमें बूर्ज्वा शूरवीरता की झलक है, न कल्पनावाद की और न उनमें सौन्दर्यवाद ही का कोई आभास मिलता है। उसका और स्टार का मत एक है—विकाररहित भाव से सर्वथा क्रान्ति का अनुसरण करना !

घोषणापत्र ज़ोरदार है। न तो उसमें क्रांति का आल्हा गाया गया है और न कहीं अतिशयोक्ति का अवलंब लिया गया है। उसके शब्द सीधे हृदय पर असर करनेवाले हैं। उन्हें उच्चारण द्वारा प्रभावशाली बनाने की आवश्यकता नहीं है। हमें अपनी क्रान्ति को भावविकार तथा बूर्ज्वा लोगों की आध्यात्मिक उन्मत्तता से अछूता रखना होगा। हमें तो केवल संख्याओं और कृत्यों से प्रयोजन है। संस्था ही कार्य की रीढ़ की हड्डी है और यह दोनों परस्पर अविच्छिन्न हैं। माज़र कारतूसों और आटे की बोरियों की प्रचुर संख्या। राइफ़िलों, फौजी कोटों, शहीदों, और गिरफ़्तारियों की बड़ी से बड़ी संख्या। उन प्राथमिक विचारों की संख्या जो हमारे कामरेडों के मस्तकों में अभी तक भरे हुए हैं, जिन्हें हमें बाहर निकाल देना है क्योंकि उनमें बूर्ज्वा आत्मा का विष अभी तक भरा हुआ है। हमारा काम तो बस संख्याओं और कृत्यों से है। घोषणापत्र छोटा-सा और सारगर्भित था। कुछ अराजकवाद के पुजारियों को वह अधिक रुचिकर प्रतीत न हुआ। किन्तु उसकी प्रत्येक पंक्ति में, उसके प्रत्येक अक्षर और विराम-चिह्न में ज़ोर है। उसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

बारकों में प्रवेश करने का आज्ञापत्र सामर स्टार को देता है और वे तीनों साथ-साथ कारपोरल के मकान से बाहर आते हैं। आज तो वायु तक भी प्रश्नवाचक प्रतीत हो रही है।

'इसके आगे फिर ?'

'इसके बाद क्या होगा ?'

विलाकम्पा कन्धे उचकाकर कहता है—

'फिर की बात पर माथापच्ची करना ही व्यर्थ है !'

सामर कहता है—

'मेरा 'फिर' उस प्रकार का नहीं है जिसका उद्देश्य भविष्य को प्रेरित करना हो। मेरे लिये तो संख्याओं और कृत्यों को संबद्ध कर देना पर्याप्त है। प्रत्येक आयुध में थोड़ी-सी घनीभूत वायु भर देना, हर एक संगीन पर ज़रा-सा विष लगा देना, प्रत्येक मशीनगन को दूरबीन जैसी सूक्ष्मदृष्टि प्रदान कर देना, विचारों और गोलियों को ऐसे स्थान पर रख देना जहाँ वे सबसे ज़्यादा प्रभाव डाल सकें और जहाँ हम चाहें वहीं ज़ख्म लगावें—मैं बस इतना ही करना चाहता हूँ। मैं वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के अङ्ग अङ्ग में मेखें ठोक देना चाहता हूँ, मैं उसे भौतिक साधनों द्वारा अस्तव्यस्त कर देना चाहता हूँ।

विलाकम्पा ने ज़रा देर चुप रहकर कहा—

'तुम्हें मालूम है कि मैं क्या कहने वाला हूँ ? यह कि तुम आवश्यकता से कहीं अधिक बातचीत किया करते हो।'

'अच्छा ! अच्छा !'

'जो लड़ेगा वह या तो किसी को मारेगा अथवा स्वयं मारा जायगा। परन्तु हमारे मारे जाने में भी यह भलाई है कि जहाँ हममें से एक गिरेगा वहाँ एक दर्जन नये झण्डे आ खड़े होंगे। मेरा तो विचार यह है। बस इतना ही, आगे कुछ नहीं !'

स्टार वारकों की ओर जाती हुई ओझल हो गई। उसके मुर्ग़ों को जो दौड़कर उसके पास पहुँचने का प्रयत्न कर रहा था हमने पकड़ लिया। विलाकम्पा ने स्टार से एक शब्द तक नहीं कहा। स्टार ने घोषणा पत्र पढ़ा और फिर उन्हें बालटी में रखकर और सहमति-सूचक सिर हिलाकर वह निर्भय भाव से अपना काम करने चल खड़ी हुई।

बारकों में घोषणापत्रों का जाना गोली बारूद की वृष्टि के तुल्य है। यों तो वह सफ़ेद काग़ज़ के अठपेजी टुकड़े हैं, खराब तरह छपे हुये हैं

किन्तु उनके शब्दों में चातुर्य और तीक्ष्णता है। देखने में भद्दे हैं किन्तु वे सैकड़ों को उत्तेजित करके बाग़ी बना सकते हैं, उनको भी जो पहले से बग़ावत करने को व्यग्र नहीं हैं। सामर की प्रचार कार्य पर श्रद्धा है। विलाकम्पा ने पूछा—

'बारकों में 'कार्य' करने का निश्चय कब हुआ?'

'कल रात,' सामर ने उत्तर दिया। 'चूँकि कुछ लोग पहले अन्य स्थानों की पलटनों का रंगढंग देख लेना चाहते थे, आपस में मतभेद उपस्थित हो गया। यह केवल एक वोट से निश्चय हुआ है। मैंने इसके पक्ष में वोट दी है। यदि रेजिमेंट बाग़ी हो गया तो मैं यह दावा कर सकूँगा कि यह मेरे ही वोट का परिणाम है।'

फ़ौजी बाजे बज उठे। स्वर में विफलता का—उत्सर्ग का भाव भरा हुआ था। वह रो-रोकर रात काट रही होगी। किन्तु विजय प्रकृति की होगी। वह रोयेगी, तकिया चलायेगी—जब कभी भी वह रोती थी तो कुछ न कुछ चबाते रहना उसके लिये आवश्यक होता था—किन्तु शनैः शनैः उसका शरीर शिथिल पड़ता जायगा, उसके श्वास की गति इतनी तेज़ हो जायगी कि वह सो जायगी। जब वह प्रातःकाल उठेगी तो प्रसन्न-चित्त तथा प्रफुल्लित होगी। किन्तु वह माथा सिकोड़-कर मुझे पत्र लिखने बैठेगी और उस पत्र पर आँसुओं के धब्बे अवश्य होंगे। इन विचारों से सामर को दुःख हुआ।

वे चले जा रहे थे। कहीं क़रीब में फ़ायरिंग हो रहा था। विला-कम्पा सावधानी के साथ उसी ओर चल पड़ा और सामर उसके पीछे हो लिया। उन्हें रास्ते में कई टोलियाँ मिलीं। ये लोग हँस रहे थे और अपने-अपने रिवाल्वर छिपाने का प्रयत्न कर रहे थे उनमें से एक ने कहा—हम एक दूसरे को मारे-सा डाल रहे हैं। हम कुछ ऐसे ग़द्दारों की फ़िक्र में थे जिन्होंने विघ्न कार्य से बिगड़े हुए सामान की मरम्मत की थी। किन्तु जब हम उनकी रक्षा करनेवाले गार्डों के निकट पहुँच गये तो क्या

देखते हैं कि वहाँ मज़दूरों का एक और दस्ता रिवालवर ताने हुए खड़ा है। यह समझकर कि ये लोग उन ग़द्दारों की रक्षा कर रहे हैं हम जैसे ही रिवालवर चलाने जा रहे थे वैसे ही मैंने उस चुग़द आरमेनगॉड को पहचान लिया और यह जान लिया कि उसके साथियों का भी वही उद्देश था जो हमारा था।'

वह यह कहकर हँसता हुआ वहाँ से भाग गया। वे सब भी उड़न-छू हो गये। स्टार के वापस आने तक सामर कारपोरल के घर में रुका रहा। उसने यह नहीं मालूम किया कि उस मुठभेड़ में क्या हुआ, कोई मारा तो नहीं गया और यदि कुछ लोग मारे गये तो वे कौन थे। उसका मुख़बिर एक कोने में बैठा हुआ था: वह अपनी जान को ज़्यादा से ज़्यादा क़ीमत पर बेचने को तैयार था। सामर ने जब उससे यह कहा कि यदि तुम पकड़ गये तो फ़ौरन गोली से उड़ा दिये जाओगे तो उसने शान्तिपूर्वक यह उत्तर दिया—'निस्सन्देह। इसका उन्हें पूरा अधिकार है।'

कारपोरल के मकान में सामर ने कासानोवा को देखा। वह छत की ओर ताकता हुआ ल्यूक्रीशिया से कह रहा था कि जिस मनुष्य के पास रिवालवर नहीं उसकी मिट्टी पलीद है। कारपोरल उसको निर्निमेष दृष्टि से देखता हुआ सोच रहा था—

'इसका आत्मघातक जैसा मुख है। इसके पास रिवालवर न होना ही बहुत अच्छा है।' कासानोवा मैशीनगन देखने की इच्छा प्रकट कर रहा था जिसको वे लोग पहले ही दूसरी जगह पहुँचा चुके थे। कारपोरल चालाकी से बातें बनाकर उसको टाल रहा था, वह उसको वह जगह कदापि नहीं बताना चाहता था। इस पर कासानोवा बड़े ताव में आकर कह रहा था—

'सारा माया-मोह छोड़कर मैंने बूर्ज्वा लोगों को तिलाञ्जलि दे दी है। न मैं अब लौटकर उनके साथ मिल सकता हूँ और न मिलूँगा

ही। लेकिन बड़े ग़ज़ब की बात है कि आप मेरा एतबार नहीं कर रहे हैं। ज़रा यह तो फ़रमाइये कि श्रमजीवी की हैसियत से मैं आप लोगों से किस बात में हेटा हूँ?'

सामर ने भी यह जान लिया कि कासानोवा वास्तव में उनकी श्रेणी का आदमी नहीं था। यदि उसे ऐसा अवसर मिलता तो वह रेशमी टाई लगाकर स्नातिकाओं के साथ छेड़छाड़ करने अवश्य जाता। एक रईस के यहाँ वह बैठा था। उसकी नौकरी छूट गई थी। उस घर की सबसे बड़ी लड़की के कमरबन्द के नीचे वह अपना प्रतिबिम्ब छोड़ आया था। इस बात को सुनकर ल्यूक्रीशिया इतनी हँसी कि उसका मुँह दर्द करने लगा। किन्तु कासानोवा ने फिर कहा कि उस रईस की लड़की से वह प्रेम करता था। यह सुनकर सामर और कारपोरल भी हँस पड़े।

चूँकि अब वे गुप्त बातें करने लगे थे कारपोरल ने कहा कि ट्रान्सपोर्ट सिंडीकेट का एक कामरेड एक ऐसे प्रजातंत्रवादी राजनीतिज्ञ का मोटर ड्राइवर था जो नियमित रूप से कई घरों में रंगरलियाँ मनाने जाया करता था। वह अपने आपको एक दार्शनिक बताया करता था और वे रमणियाँ उसको 'पत्रकार' कहकर पुकारा करती थीं क्योंकि वह एक समालोचना-पत्र का अध्यक्ष था और उसका प्रेम से संबंध था। वह खुद को एक बहुत शानदार आदमी समझता था और उसके शोफ़र का यह हाल था कि वह सदर रास्ते के सामनेवाले द्वार पर कभी मोटर खड़ी नहीं करता था वरन् उसको पड़ोस की एक अज्ञात-सी गली में जाकर खड़ा किया करता था, क्योंकि ऐसे खराब आदमी की शोफ़री करने में उसको बड़ी लज्जा मालूम होती थी।

सामर उस व्यक्ति को समझ गया। वह उसको व्यक्तिगत रूप से जानता था। वह इस प्रकार हँसने लगा मानो कोई उसको गुदगुदा रहा हो।

बिलकुल समीप ही एक गोली छूटने की आवाज़ आई। सामर ने कासानोवा की ओर मुड़कर कहा—

'पुलिस यहाँ अवश्य आएगी। अब यहाँ से चलना चाहिये।'

उसी समय स्टार बालटी लिये हुए वहाँ आ पहुँची। उसको खोल गया। उसकी तली में से सामर ने एक पर्चा उठाया। उसे फिर काम में लाने के विचार से उसने उसे जेब में रख लिया। उसने स्टार से पूछा—

'क्यों, किसी को कोई सन्देह तो नहीं हुआ?'

'मैं तो यही समझती हूँ कि नहीं हुआ।' स्टार ने उत्तर दिया।

सामर और कासानोवा वहाँ से चल पड़े। कासानोवा ने फिर सामर से तमंचे के लिये प्रार्थना की।

'सेंटियागो ही एक ऐसा आदमी मालूम होता है जो सम्भवतः तुम्हारी इस माँग को पूरा कर सकता है।' सामर ने कहा।

'किन्तु उसके पास रिवालवर है भी?'

'अरे भाई, जनेवा में जब अभी तक उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं हुई है तो मेरे विचार में यह शस्त्र-परिमितता की बात कोरी गप मात्र है।'

अब कासानोवा सेंटियागो की खोज में चल पड़ा। यद्यपि सामर जानता था कि सेंटियागो के पास जाना व्यर्थ है तो भी वह कासानोवा को कुछ आशा बँधाए रखना चाहता था। वे लोग फिर उसकी प्रेम-कथाओं पर विचार करने लगे।

'वह तो भावोन्मत्त है,' उन्होंने कहा, 'वह किसी कार्य के योग्य नहीं है। उसके मर जाने से भी हमारी कोई हानि नहीं होगी।'

उसके आत्मघात करने की बात सोचकर उन्होंने कन्धे उचका दिये। सामर उसकी दशा से भली भाँति परिचित था। अपने आपको इस रोग से मुक्त समझकर वह खुश हो रहा था। 'किन्तु शायद,'

उसने मन-ही-मन कहा, 'मेरा यह विश्वास रोग का प्रत्यागमन मात्र है।' वह देहात की ओर चला जा रहा था। परसों उसका प्रियतमा से झगड़ा हो गया था, तदनन्तर कमेटी ने उसका प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया—अब उसका हृदय यही कहता था कि चलो देहात की ओर चलें, वहीं शान्ति मिल सकेगी। वह पगडंडी पर हो लिया। उसके एक ओर घूरे का ढेर लगा हुआ था और दूसरी ओर मरी-हुई मक्का का एक खेत था। उसके पीछे ला मांशा का समतल मैदान था। आकाश मेघाच्छादित था। सूखी हुई पृथ्वी मेह बरसने की आस लगाये हुए थी, उसके लिये तड़प रही थी, बारम्बार पृथ्वी से आकाश की ओर खाक उड़ रही थी। हठात् वह अपना नाम सुनकर खड़ा हो गया। फिर यह खयाल करके कि यहाँ निर्जन में भला उसे कौन पुकारने आयेगा और यहाँ इस सन्नाटे में पेड़ और पत्थरों के अतिरिक्त उसे कौन पुकारनेवाला हो सकता है, वह फिर आगे चल पड़ा। वह यही सोचता चला जा रहा था—'क्या उन्होंने मेरे प्रस्ताव को अस्वीकृत करने में मूर्खता की है? इसी वजह से कि हमारे निषेध में राजनीतिक सूत्रों की भरमार नहीं है बल्कि वह भविष्य का पक्ष लेकर उस भूतकाल को मिटाना चाहता है जिसको कि परम्परावादी जीवित रखना चाहते हैं। ये लोग सम्प्रदाय के भक्त हैं और हम आशा के प्रेमी हैं। हम जो कुछ भी कर रहे हैं, उससे पौराणिक भावना और उसके भक्तों का नैतिक पतन होता जा रहा है, सम्प्रदायिकता का विच्छेद हो रहा है। हमारे कार्य से मानवता की वह निहित शक्ति ऊपर उठ रही है। वह गुप्त अवशेष शक्ति जिसके हम सच्चे प्रतिनिधि हैं, हमारे द्वारा अपना कार्य कर रही है। इस पाश्चात्य संसार में हम लोग ही बस प्रकृति के सच्चे अनुयायी और उसके साथ एकत्व स्थापित करनेवाले हैं।' उसे फिर ऐसा प्रतीत हुआ कि कोई उसको नाम लेकर पुकार रहा है। उसकी विचार-धारा उसे मार्क्स से दूर ले जा रही थी। इन दोनों बातों ने उसे कुछ घबड़ा-सा दिया था।

नगर की ओर से पीठ मोड़कर अब वह मेघों, वृक्षों और वायु से आत्मीयता स्थापित कर रहा था। किन्तु यह सब उसके क्रान्ति-सम्बन्धी विश्वास को खोखला किये डाल रहे थे। उसने विचार किया कि देहात अराजकवादी है और नगर साम्यवादी। देहात का भाव मौलिक, सीधा-सादा और गहन है। निस्सन्देह उसमें प्राकृतिक नियमों के लिए स्थान है, मार्क्सवाद भी कहीं-कहीं दृष्टिगोचर होता है, फिर भी देहात कृषि-विज्ञान की अवहेलना करता है, वृक्ष वनस्पतिशास्त्र से मुँह मोड़ते हैं, सरिता भूगोल की उपेक्षा करती है। इसके विपरीत, मशीन आँकड़ों से प्रेम करती है। पदार्थ-विज्ञान तथा रसायन-विद्या को तो उसका उसी तरह अन्तःकरण ही समझो जैसा कि मार्क्स क्रान्ति का अन्तःकरण है। कमेटियों, कार्य करनेवाले ग्रूपों, उत्तेजित जनसमुदायों को मेघों, चट्टानों, वृक्षों और सरिता के साथ समीकृत करता हुआ वह आगे बढ़ा जा रहा था। उसके पीछे से गोली छूटने की आवाज़ आई और किसी ने पुकारकर कहा—'हाथ ऊपर उठा दो।'

वह हाथ उठाकर चुपचाप खड़ा हो गया। फिर धीरे-धीरे पीछे घूमा। उसको भीत देखकर एमिलिया, वही 'सदाचारिणी' एमिलिया जो विभिन्न कार्य सम्बन्धी सिंडीकेट की सदस्या थी, खिलखिलाकर हँस पड़ी। वह दौड़कर सामर के पास आई।

'मैं बड़ी देर से तुम्हारे पीछे चली आ रही हूँ। मैंने तुम्हें पुकारा भी किन्तु तुम न रुके। आँख से ओझल हो गये। कृपया गोली चलाने की धृष्टता के लिए मुझे क्षमाकर दीजिये। पहली बार रिवालवर चलाने का मुझे बड़ा चाव लग रहा था!'

'तुमने किस वस्तु का निशाना ताककर गोली मारी थी?'

वह हँस पड़ी।

'मैंने तुम्हीं पर गोली चलाई थी।'

सामर आँखे फाड़कर उसकी ओर देखने लगा। उसने रिवालवर

को पलटकर हिफ़ाज़त से अपने पास रख लिया।

'मेरे गोली लग जाती तो क्या होता ?

'लगी भी हो तो क्या पता। क्या तुम नहीं जानते कि आरम्भ में कुछ मालूम नहीं हुआ करता है ?'

उसका भाव गम्भीर था। सामर ने सीने पर हाथ फेरा, अपनी भुजाएँ मोड़कर सीधी कीं। गहरी श्वास ली। एमिलिया ने इस काम में उसकी सहायता की। जाकट के अन्दर हाथ डालकर उसने पीठ पर हाथ फेरा। उसके पेट और जाँघों पर भली प्रकार हाथ फेर कर देखा।

'मैंने तुम्हीं को ताककर सीधी गोली मारी थी।' वह कहे जा रही थी।

'परन्तु यह तो बताओ,' सामर ने कहा, 'तुम्हें इस ओर देहात में आने की क्या सूझी थी ? क्या तुम यहाँ सिंडीकेटवादियों का शिकार खेलने आई थीं ?'

'मैं एक पुरुष का शिकार करने आई थी।'

वह सहसा खिन्न-सी हो गई। हवा भाराक्रान्त थी, मेघों की गहराई बढ़ती जा रही थी। अन्धेरी छाई हुई थी। सामर को उसमें कोई असाधारणता प्रतीत हुई। वह दोनों चलने लगे। एक दूसरे का चेहरा बिना देखते हुए वे ज़्यादा आज़ादी से बातचीत कर सकते थे।

'एक पुरुष का शिकार, यह क्या ?'

'हाँ, कोई भी पुरुष—एक हट्टा-कट्टा आदमी चाहिये था।'

'वह चाहे जो कोई भी क्यों न होता ?'

'तुम भी कैसे मिथ्याभिमानी हो! तुम्हें देखकर मैं प्रसन्न हो गई थी।'

अब सामर को मालूम हुआ कि एमिलिया की बात समझने में वह अब तक भूल कर रहा था। उसके मस्तिष्क में तरह-तरह के

विचार भरे हुए थे। उसने यूँही उससे यह प्रश्न पूछा था। अब उसे यह पूरा विश्वास हो गया कि एमिलिया देखने ही में दुबली-पतली मालूम होती थी; किन्तु वास्तव में वह सुदृढ़ तथा फुरतीली थी। अब जब उसके मन का भाव उस पर भली प्रकार प्रकट हो गया तो वह सिवाय मान जाने के कर ही क्या सकता था। वे दोनों रुक गये। सामर ने उसके नेत्रों में अपनी दृष्टि गड़ा दी। एमिलिया के नेत्रों में बिल्ली की आँखों जैसी बिजली भरी हुई थी। वह उसकी ओर सतृष्ण तथा तेजपूर्ण दृष्टि डालकर कहने लगी—

'चाहे तुम मुझे पगली ही क्यों न समझो, किन्तु मेरा हृदय पुत्र प्राप्ति के लिए अत्यन्त व्याकुल हो रहा है।'

उसके हृदय के रहस्य को पूर्णतः जान लेने के अभिप्राय से सामर ने उसको अच्छी तरह घूरकर देखा। वह अभी कुमारी थी। उसके नेत्र और अधबने शिशुवत् अवयव यह स्पष्ट बता रहे थे। 'इस लड़की ने,' उसने मन-ही-मन कहा, 'अपनी अन्तरात्मा में क्रान्ति की है, उसने बिलकुल पगली-सी होकर उसकी विजय स्वीकार कर ली है।' एमिलिया बड़ाई हुई उतावली-सी होकर कहने लगी—मानो वह उसके विचारों का समर्थन कर रही हो—

'मैं अपने कुटुम्बियों से नाता तोड़ आई हूँ। वे सब पक्के हरामखोर हैं। अब उन्हें झक मारकर काम करना पड़ेगा। मैं अब स्वतंत्र और स्वाधीन हूँ और सदैव रहूँगी भी।'

किन्तु सामर ने उसका चुम्बन करते हुए कहा, 'कल प्रातःकाल तुम्हें यह सब पादरी से कहना होगा।'

'हाँ, हाँ। किन्तु वह मुझे क्षमाकर देगा। वह तुम और मुझ दोनों से बड़ा अराजकवादी है। यदि मैं उससे अपराध निवेदन करती रही तो वह एक दिन मुझसे लाट पादरी के यहाँ बम रख आने को कहने लग जाएगा।'

हवा और भी भारी हो गई। फुआर पड़ने लगी। लगभग आधे मील की दूरी पर क्षितिज में इन्दधनुष का रंग-विरंगा मनोरम दृश्य दिखाई दिया। वे दोनों एक टीले पर जा बैठे। मेह के साथ हवा भी तेज़ हो गई। उसके उरोज इस प्रकार फड़कने लगे मानो वह कंचुकी से बाहर निकलने को व्याकुल हो रहे हों।

वे मेह में भीगते रहे। प्यासे भूमितल के समान वह वसन्तकाल के इस गरम मेह में पिघलकर एक हो गये। एमिलिया के नेत्रों में सामर को इन्द्रधनुष दिखाई दे रहा था। उसकी केशराशि पर मोती थिरक रहे थे। उसके गालों से बहकर जानेवाली बूँदों को वह पिये जा रही थी। ज़मीन भी बूँदों को सोख रही थी और उनके इर्दगिर्द की झाड़ियाँ आनन्द से मरमर शब्दकर रही थीं।

ज़मीन से, घास से, सूखे हुए पत्तों और उपजाऊ पृथ्वी में धसी हुई पौधों की जड़ों से गरमी निकल रही थी।

सामर ने उसकी वासना को तृप्त कर दिया। वह उसकी पुत्र प्राप्ति की भावुकतामयी इच्छा की पूर्ति नहीं करना चाहता था। इसी इच्छा की दुहाई देकर इन्द्रियाँ अपना काम निकाला करती है। एमिलिया को पूर्ण विश्वास था कि वह गर्भवती हो गई है। किन्तु सामर इस सम्बन्ध में अधिक प्रवीण था। वसन्तऋतु का जल जब पृथ्वी पर गिरता है तो वह यह बात नहीं सोचा करता कि मुझे करोड़ों प्राणियों के पालन-पोषण की सामग्री उपजानी है। वह तो हर्षोन्मत्त होकर अपनी तान अलापता है। अपनी गरमी वायु और मेघों को दे देता है। वह इससे अधिक कुछ भी नहीं करता।

विलाकम्पा, स्टार और उसका मुर्गा।

एक पहर दिन चढ़ने के बाद पुलिस ने उपांत पर छापा मारा। लगभग तीस एजेन्ट और कम से कम पचास गार्ड थे। हमें सहसा आ घेरने के लिए उन्होंने यही समय सबसे अच्छा समझा। कुछ स्थानों में उनके आने की तैयारियाँ हो रही थीं। इन लोगों की तैयारियों का यह मतलब नहीं था कि वे लोग पुलिस को मारकर भगा सकते थे। उनका उद्देश्य सारी वस्ती को हल्ला मचाकर सतर्क कर देना था, जिससे लोग होशियार हो जाएँ और जिस-जिसके पास हथियार या सन्देहात्मक काग़ज़ पत्तर हों वे उनको कहीं सुरक्षित स्थान में छिपा दें। स्टार और मैं उस समय श्रीमती क्लेटा के मकानवाले कोने पर खड़े हुए थे। पुलिस पार्टी को दूर से आते देखकर हम सशीघ्र मकान में घुसकर अट्टे में जा छिपे। मकान एक तल्ला है और अट्टे का द्वार

छत की तख्तेबन्दी में छिपा हुआ है। हम सीढ़ी लगाकर ऊपर पहुँचे, फिर सीढ़ी को ऊपर खेंच लिया और गुप्तद्वार को अन्दर से बन्दकर लिया। पुलिस के मोटरों के भोंपू बज रहे थे, गार्ड सीटियाँ दे रहे थे। किसी चीज़ के छूटने का एक शब्द भी हुआ, मानों कोई आसमानी गोला छूटा हो। यह इस बात का सूचक था कि वे हमें घेर रहे हैं। उन्होंने यह काम दिन में इस विचार से किया है कि रात को घेरा डालना बिलकुल व्यर्थ है। वे इस बात को भली भाँति जानते हैं कि रात को हम लोग बड़े सावधान रहते हैं। या तो हम लोग घरों पर मिलते ही नहीं या रिवालवर ताने हुए गार्डों के आने की प्रतीक्षा किया करते हैं। मोटर साइकिलों की मैशीनगन की सी फिट्फिट में, मोटरों की गड़गड़ाहट में और सीटियों और भोंपुओं की कान फाड़ देनेवाली आवाज़ में फ़ायरिंग का शब्द बिलकुल सुन ही नहीं पड़ता था। इस अड्डे की छत मकाई के लाल डंडों से ढँकी हुई है। इनमें से दाने हिलाये जा चुके हैं जिनका ढेर फ़र्श पर लगा हुआ है। मुर्ग़ा बड़ी खुशी के साथ खड़बड़ करता हुआ इन्हें चुग रहा है। इस शोर से स्टार डर रही है।

'इस खड़बड़ से हम कहीं पकड़े न जाँय!'

परन्तु घबड़ाने की कोई बात नहीं है, क्योंकि श्रीमती को हमारी उपस्थिति का ज्ञान नहीं है और पुलिस के यहाँ आने पर वह यह डींग ज़रूर मारेगी कि मैं एक सिपाही की विधवा हूँ और मेरा पति सार्वजनिक रक्षा-विभाग में नौकर था। सम्भवतः इस पर वे उसके मकान की तलाशी नहीं लेंगे। हम तह की हुई दरियों के ऊपर जा बैठे। सहसा मेरे कन्धे के ऊपर किसी चीज़ को देखकर स्टार आश्चर्य-चकित हो गई। रिवालवर पर हाथ रखकर मैंने पूछा—क्या है? मैंने जल्दी से मुड़कर दृष्टिपात किया।

'आखा! जनाब तशरीफ़ रखते हैं। आदाब अर्ज़। पहले मेरा

खयाल हुआ था कि आप डान फ़िडेल हैं। आपकी शकल उससे बहुत कुछ मिलती-जुलती है। शायद आप में उसी की आत्मा है। आप उसी की बढ़िया जाकट और ऊँचा टोप धारण किये हुए हैं। आपका चेहरा भी उसी की तरह पीला और सूखा हुआ जान पड़ता है।'

यह अपरिचित व्यक्ति अपनी भुजाएँ फड़फड़ाता है। उसका खाली पाजामा प्रातःकालीन समीर में हिल रहे हैं। यह अट्टा एक कोने में है। इसमें बिना शीशों और सीखचों की दो खिड़कियाँ हैं जिसमें से हवा खूब सरसर करती हुई आती जाती है। मैं इस पुतले को झुककर सलाम करता हूँ। नीचे, पुलिस क्रांतिकारियों की मैशीनगन की खोज में सिर मार रही है। समस्त उपांत सशंक है। मैं फिर सलाम करके कहता हूँ—

'मुझे आपसे अपनी नवयुवती सहचरी स्टार ग्रेशिया का परिचय कराते हुए बड़ी प्रसन्नता होती है। यह संसार में अकेली है किन्तु, अराजकवादिनी है। इसका अर्थ यह है कि हम सब पर इसकी रक्षा का भार है। कामरेड स्टार! मैं तुम्हारा डान फ़िडेल से परिचय कराता हूँ। आप मुर्दों की प्रतिष्ठा तथा गौरव बढ़ानेवाले हैं।'

वायु ने विभीषिका की दाईं भुजा उठा दी। स्टार ने उसको पकड़कर अच्छी तरह हाथ में लेकर देखा। सहसा उसने उसको छोड़-कर काँपते हुए कहा—

'यह क्या? यह तो बड़ी मज़बूत-सी मालूम होती है।'

मुर्ग़ा दाना चुगे जा रहा था। हम दोनो फिर दरियों के एक पुलंदे पर जाकर बैठ गये। पुतला वस्तुतः अच्छा बना था। वह जज या कम से कम एक निषेधार्थी व्यक्ति अवश्य मालूम होता था। वह कुछ कमीना और घमण्डी भी प्रतीत होता था। वह पक्षियों को उड़ाने के अभिप्राय से वहाँ लटकाया गया था। यहाँ एक कोने में गेहूँ रक्खे हुए थे। कुछ फल भी सूखने के लिए लटके हुए थे। हम अच्छी

तरह बैठकर गली का हल्ला सुनने लगे। शोरगुल, चीख़-पुकार और गोलियों की गड़बड़ में हमारी समझ में यह नहीं आता था कि वास्तव में वहाँ हो क्या रहा है। स्टार डरी हुई नहीं थी फिर भी उसने मेरा हाथ पकड़ रक्खा था। हम दोनों बातचीत नहीं कर रहे थे। जब मैंने उसकी ओर देखा तो वह सुखपूर्वक मुसकरा दी। उसकी ख़ाकी टोपी में उसका प्लेटदार रिवालवर मौजूद था। टोपी तह की हुई दरियों के पुलंदे पर रक्खी हुई थी। मैंने रिवालवर निकलवाकर अपने हाथ में लिया। वह ख़ाली था।

'क्या तुम कारतूस साथ नहीं रखा करती हो ?'

'नहीं।'

'क्या तुमने वह कारतूस जो मैंने तुम्हें दिया था और जिस पर तुमने और सामर ने अपने नामों के प्रथमाक्षर खोदे थे, छोड़ दिया ?'

उसने गम्भीर भाव धारण करते हुए सिर हिला दिया।

'यदि हम बारकों पर आक्रमण करेंगे तो मैं उसे छोड़ूँगी।'

'तब तो तुम्हें और भी कारतूसों की आवश्यकता पड़ेगी।'

'नहीं, वही काफ़ी होगा।'

मुर्ग़ा डरकर कूँ-कूँ करता हुआ हमारे पास कूद आया। स्पष्टतः डॉन फ़्रीडेल ने उसके एक ठोकर रसीद की थी। हवा से उसका पाजामा उड़ गया होगा। डॉन फ़्रीडेल छत से लटका हुआ था। यद्यपि उसकी कमर में फटेरे भरे हुए थे फिर भी उसकी कमर कभी-कभी मुड़ जाती थी और जब दोनों खिड़कियों में से सरसर हवा आती थी तो वह नाचने लगता था। उसका मुख शान्त रहता था किन्तु जब वह इधर-उधर छत की ओर मुड़ जाता था तो उसकी दृष्टि अजब-सी प्रतीत होती थी। हम थोड़ी देर मौन बैठे रहे। मुर्ग़े ने डॉन फ़्रीडेल की ओर संदिग्ध दृष्टि डाली। मैंने उससे अपने साथ बातचीत करने को कहा। उसने स्टार को सलाम किया; किन्तु उसने इसका कोई

उत्तर न दिया। हम लोग सामर के सम्बन्ध में बातचीत कर रहे थे। हम दोनों इस बात पर सहमत थे कि सामर का नैतिक पतन हुआ है और उसका क्रान्ति सम्बन्धी विश्वास कम होता जा रहा है। इसका कारण उसका अहंकार था। वह हमारे ऊपर अत्याचार करना चाहता था। यदि हमने उसके प्रस्ताव स्वीकार कर लिये होते तो निस्सन्देह उसका भाव बिलकुल और ही होता। स्टार ने कहा कि यह बात तो स्वाभाविक ही है।

'बहुत-सी स्वाभाविक बातें अच्छी नहीं होतीं।'

'नहीं, सभी अच्छी होती हैं।'

अब मुझे अपने इसी सिद्धान्त पर लौटना पड़ा कि स्वाभाविकता हिंसात्मक है। उदाहरणार्थ—किन्तु मैं उदाहरण सुनाऊँगा नहीं क्योंकि ऐसा करना उसे संकेत देना होगा। वह उसे समझती है और उससे पूर्णतः सहमत भी है। परन्तु यह समय इन मूर्खताओं के लिए नहीं है। हमारा एक कान गली की ओर लगा रहना चाहिये और दूसरा मकान के निचले भाग पर। गली में चीख-पुकार बढ़ जाती है और गोलियों की आवाज़ों के साथ मिलती हुई समीपतर आती जाती है। अब वह यहाँ से होते हुए बारकों की ओर जा रहे हैं। स्टार का मकान समीप है। चची आइज़ाबेला एजेन्टों को चिल्लाकर गालियाँ सुना रही है। बड़ी सावधानी के साथ, बहुत ज़्यादा झुके बिना, मैं अपने स्थान से चची आईज़ादेला को सारे पुलिसदल को गालियाँ देते हुए देखता हूँ। तदनन्तर एक एजेन्ट आकर उसको मकान के अन्दर ढकेल देता है। उसके हाथ में रिवालवर है। उसने अवश्य वह उसकी पसलियों में खोंस दिया है, तभी तो वह चुप होकर खाँस रही है। इस पर भी वह जल्दी से ऊपर जाकर खिड़की में खड़ी हो जाती है और फिर पुलिस को गालियाँ देने लग जाती है। अब वह बार-बार खाँसती भी जाती है। जिस एजेन्ट ने उसको अन्दर ढकेला है मैं उसे अच्छी

तरह पहचान लेता हूँ। उसका मुख बछड़े जैसा है, उसकी कमर झुकी हुई है। उसके कूबड़-सा निकला हुआ मालूम होता है। मैं उसे भूलूँगा नहीं। पुलिस की टुकड़ी बारकों की ओर चली जाती है। हमारे चारों ओर कुछ शान्ति-सी हो जाती है। हम अपने चाप को दबाने के अभिप्राय से एक दरी बिछा देते हैं और अट्टे के दूसरे सिरे की ओर जाते हैं। यदि फ़र्श का कोई तख़ता चरचर करने लगता है तो हम डर के मारे वहीं रुक जाते हैं। मुर्दों का गौरव तथा यश डॉन फ़्रीडेल अब नाचना आरम्भ कर देता है। मुझे उससे बातें करने में मज़ा आता है—

'क्या यह बिलकुल सत्य है कि लोगों ने तुम्हारे चचा को जो जनरल थे गोली से मारा था? शायद यह तो सच हो कि वह गोली से मारा गया था, किन्तु मेरे विचार में वह जनरल तो था नहीं। ज़्यादा से ज़्यादा एक सारजेन्ट होगा।'

डॉन फ़्रीडेल क्रोध के मारे सिर से पैर तक थर्रा उठता है। वह मेरी ओर लपकता है। हवा उसकी आस्तीन उठा देती है। स्टार डर कर पीछे हट जाती है। आस्तीन मेरी नाक से रगड़ जाती है। ऐसा मालूम होता है कि डॉन फ़्रीडेल का दम अभी-अभी निकला है।

'कहो, डॉन फ़्रीडेल दूसरी दुनियाँ का क्या हाल है? अभी तुमने परम पिता से अपनी उस पेशाबवाली बीमारी के सम्बन्ध में शिकायत की या नहीं?'

स्टार खिलखिला पड़ती है। उसका ख़याल है कि उसने डॉन फ़्रीडेल को हाँ-सूचक सिर हिलाते देखा है। मैंने भी यही देखा है।

'क्या तुम डॉन फ़्रीडेल हो?'

वह इसका उत्तर नहीं देता।

'शायद तुम श्रीमती क्लेटा के मृतक पति हो?'

वह अपनी एक आस्तीन उठाकर दाईं ओर से बाईं ओर को फिराता है।

'तो फिर तुम वही डॉन फ़ीडेल हो जिसके मरते समय मैंने तौलिया झाँकी थी ।'

चिल्ल-पुकार और हल्ला फिर समीप ही सुन पड़ता है । प्रकट है कि सावधानी के साथ कुछ कामरेडगण-पुलिस का पीछा कर रहे हैं ! वे उसपर गोली चलाने के सुअवसर की फ़िक्र में मालूम होते हैं । ठीक कोनोंपर खड़े होने और पहले गोली मारने पर सारी बात निर्भर है । अब ग्रूप हमारे समीप आ पहुँचे हैं । खिड़की में खड़ी हुई आइज़ाबेला हाथ के इशारे से बताती है कि पुलिस इधर गई है । मैं देख नहीं सकता कि वह किससे धीरे-धीरे बात कर रही है । हाथ में दाने लेकर स्टार मुर्ग़ों को अपने पास बुला रही है । वह पुतले के समीप बैठी है । सहसा वह चिल्लाकर भागती है । पुतले ने उसकी गरदन में बाँहे डाल दी हैं । वह हँसती है किंतु उसे यह बात रुचिकर नहीं है ।

अबकी बार हम फ़र्श पर बैठ जाते हैं । स्टार कहती है—

'हम भी कैसे एकाकी हैं । अड्डे भी श्मशान सदृश एकाकी प्रतीत होते हैं ।'

मैंने चारों ओर देखा । बात तो सच्ची है । मैंने उससे पूछा—

'क्या तुम किसी की हत्या कर सकती हो ?'

'हाँ । मैं कई दफ़ा यह बात सोच चुकी हूँ । किंतु यदि मैं किसी को मारूँगी तो अवश्य निर्द्वेष भाव से मारूँगी ।'

'मैं भी ऐसा कर सकता हूँ !'

हम फिर मौन हो जाते हैं । अतः स्टार कहती है—

'यदि मुझे पिताजी की तरह लोगों से घृणा होती तो वह दूसरी ही बात होती । किन्तु मैं सिविल गार्डों से घृणा नहीं करती । फिर भी जब जब मैं उनके मुख देखती हूँ तो मेरा जी यही चाहता है कि इनके सिर उड़ा दूँ ।'

'यदि हमें किसी को मारना ही पड़ जाय तो हमें निर्द्वेष भाव ही से

उसको मारना चाहिये। किंतु तुम्हें उसकी चिंता नहीं करनी चाहिये। रिवालवर मारने के बाद कारण की बात सोचो। क्रोध को पास न आने दो। होटलों में जो हत्याएँ हुआ करती हैं उनका कारण अधिकतर क्रोध ही हुआ करता है।'

'और फिर भी, कभी-कभी ऐसा प्रतीत होता है कि हम संसार में मारने या मरने को आये हैं।'

यही तो बात है। युद्ध की घोषणा हो चुकी है। हमें एक न एक पक्ष के साथ मिलकर हर समय व्यग्रता के साथ कर्त्तव्य पालन करना है। 'युद्ध' शब्द से अपेक्षाकृत दुर्बल-साथियों को सांत्वना मिलती है, क्योंकि युद्ध में सब कुछ उचित समझा जाता है। उन्हें क्रांतिकारी रूप में काम करने के लिए भी एक बूर्ज़्वा नीति का सहारा लेने की आवश्यकता प्रतीत होती है। स्टार का यह हाल नहीं है। वह अत्यंत सरल भाव से यह चाहती है कि उसके हृदय में घृणा उठे, किंतु उससे ऐसा होता नहीं।

'फिर भी,' उसने कहा,—'मैं समझती हूँ कि मैं घृणा कर सकती हूँ। मेरे इस जगह द्वेष का जन्म हो रहा है।'

वह अपनी बाँईं छाती को दबाकर एक प्रच्छन्नभाव से मुस्करा देती है। मुझे स्मरण है कि उसने किस भाव से अपने रिवालवर के लिए एक कारतूस माँगा था। यदि वह किसी से द्वेष न रखती तो वह जान-बूझकर यह काम कर ही नहीं सकती थी। किन्तु मैं इस विषय पर अधिक बात-चीत नहीं करूँगा, क्योंकि ऐसा करने से एक ऐसी ग़रीब लड़की का दिमाग़ जो पर्चे और बिल्ले बेचा करती है, व्यर्थ आकाश पर चढ़ा देना होगा। वह तो अभी अपनी लैम्प फैक्टरी की ओर से प्रतिनिधि चुनी जाने में भी असफल रही है। अभी-अभी जब हम यह कह रहे थे कि जो कुछ भी स्वाभाविक है वह उचित है तो मैंने उससे आवेश में ऐसी बातें कह डालीं और उसकी ओर इस प्रकार दृष्टिपात

किया मानो मैं उस पर लट्टू हो रहा होऊँ ! वह मुझे ऐसा करने को उकसाती है। और इसका कारण बस यही है कि मैं लाल टाई बाँधता हूँ। मुर्ग़ा हमारे पास आकर दरी के फूलों को खाने का प्रयत्न करता है। स्टार उसे कुछ छिले हुए दाने देती है। उसी क्षण नीचे से गोलियों का शब्द आता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पुलिस की टुकड़ी चली जा चुकी है और हमारे साथी उनका पीछा कर रहे हैं। आठ कामरेड गिरफ़्तार हो गये हैं और ये लोग उनको छुड़ा लाने की चिन्ता में हैं। कहीं इधर-उधर से एक गोली आकर हमारे सिर के ऊपर रक्खे हुए मक्का के पूलों में लगती है। हमारे ऊपर मक्का के दानों का एक मेंह-सा बरस पड़ता है, जिनको मुर्ग़ा बड़ी शांति के साथ चुगने लग जाता है। मालूम होता है कि इस मुहल्ले के सब मज़दूर यहीं आकर जमा हो गये हैं। श्रीमती क्लेटा नीचे डरके मारे चीखें मार रही है। जल्दी-जल्दी दरवाज़े और खिड़कियाँ बंद करने का शब्द सुन पड़ता है। फ़ायरिंग का शब्द भी बड़ा गहन मालूम होता है। कोई गार्ड मैशीनगन चलाता हुआ-सा जान पड़ता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि पुलिस आगे बढ़ रही है और मैशीनगन कुछ पीछे चली गई है। फ़ायरिंग की सीध से खिड़की कुछ हटी हुई है। अतः मैं बड़ी सावधानी से गर्दन निकालकर देखता हूँ। मेरी नाक से लगभग चार गज़ की दूरी पर, कोने में, मेरी ओर पीठ किये हुए एक एजेन्ट गोली चला रहा है। मैं दूसरी ओर देखता हूँ। कोई है ही नहीं। सारी गली जनशून्य है। सारी खिड़कियाँ और गैलरियाँ बन्द पड़ी हैं। मैं अपना रिवालवर निकालता हूँ। चौखट पर कलाई रखकर मैं उसके सिर का निशाना ताकता हूँ। घोड़ा दबाते समय मुझे यह मालूम होता है कि यह वही एजेन्ट है जिसने चची आइज़ाबेला के साथ दुर्व्यवहार किया था। इस बात से निशाना हिल जाता है और मुझे वह फिर ताकना पड़ता है। मुझे उसके सिर में गोली मारना है।

यदि वह तत्क्षण न भी मरे तो भी वह यह तो न बता सकेगा कि गोली किस ओर से आई। उसके टोप के आध इंच नीचे गरदन पर मैं निशाना ताकता हूँ। बिना सांस लिए जल्दी से घोड़ा चला देता हूँ। आहा! फिर! एजेन्ट के हाथ से रिवालवर छूट पड़ता है और वह लड़खड़ाकर दीवार पकड़ लेता है। अभी एक और गोली की आवश्यकता है। इस दफ़ा गोली उसकी कनपटी पर लगी क्योंकि उसने घबड़ाहट में मुँह फेर लिया था। अब वह पैरों की उगलियाँ ऊपर उठाये हुए सामने पड़ा हुआ है। किसी ने मुझे देखा नहीं है। बग़ल की गली में मोटर की फिट्‌फिट्‌ ने गोलियों की आवाज़ को दबा दिया है। मैं अट्टे में सिर करके स्टार की ओर घूरकर देखता हूँ।

'युद्ध सदृश निर्द्वेषभाव से, मेरी लक्ष्मी!'

मैं रिलावर सूँघता हूँ। उसमें से सुगन्ध निकल रही है। वह बड़ा पक्का और वफ़ादार साथी है। स्टार भी मेरी ओर संतोषपूर्ण दृष्टि से देखकर मेरे शब्द दुहराती है—

'निर्द्वेष भाव से, विलाकम्पा।'

किन्तु घृणा के समस्त भावों से आंतरिक हर्ष का भाव कहीं अधिक प्रबल हो उठता है। मेरे नेत्रों में नेत्र डालकर स्टार ने कहा—

'द्वेषरहित भाव से।'

डान फ़ीडेल भी यही कहता हुआ जान पड़ता है—

'द्वेष के बिना मारो और ईर्ष्या के बिना प्रेम करो। लोग प्रेम में भी जला करते थे और लड़ते समय हमारे हृदयों में द्वेष की अग्नि धधका करती थी। तुम लोग समस्त काम सहज भाव से किया करते हो। प्रेम और मृत्यु! इस सम्बन्ध में मेरे चचा, जनरल महोदय, क्या कहेंगे?'

वह मेरी कमर में बाँहें डालकर कहती है—

'द्वेष के बिना।'

उसके नेत्रों में एक विलक्षण आभा है। उसको बिना देखे हुए ही मेरे अधर उसके अधरों पर पहुँच जाते हैं। किन्तु इनके मिलने से एक विद्युत् धारा-सी चल निकलती है और मैं मानो बिजली का धक्का खाकर, कूद कर दूर जा खड़ा होता हूँ। मैं उससे दो गज़ दूर खड़ा हुआ हूँ। स्टार आँखे मूँदकर हँस रही है। मैं उसके पास जाकर उसकी कमर में भुजाएँ डाल देता हूँ।

'मृत्यु के सामने भी मनुष्य कैसी विचित्र बातें कर डालता है!'

वह सहमति प्रकट करती है और मेरे सीने पर अपना सिर रखकर मुझे ताकती है।

'जिसने दादी के साथ दुर्व्यवहार किया था, वही तो था न वह?'

'हाँ।'

'और तुमने उसे मार डाला? तुम बड़े वीर हो।'

मैं उसका सिर सुहलाता हूँ। उसके बाल मुलायम हैं और उसका छोटा-सा कान ठंडा है।

'मैंने उसे द्वेषरहित भाव से मारा है।'

'बिलकुल ठीक, बिलाकम्पा, घृणा के बिना।'

मैंने अपने सिर पर हाथ रखकर चोटों के निशान बतलाये।

'एक यहाँ, और एक यहाँ।

'यदि उन्हें यह मालूम हो जाय तो वे तुम्हें अवश्य मार डालें।'

'हाँ ज़रूर। किन्तु उन्हें यह मालूम ही नहीं।'

फ़ायरिंग अब दूर चला गया है। अब इस स्थान को छोड़ देना ही अच्छा है। मृतक एजेन्ट को देखकर वह स्टार के घर की तलाशी नहीं लेंगे। स्टार के मकान का सामना भी दूसरी ओर है। चूँकि हमें गली पार करनी है, हमें अपने रिवालवर यहीं छोड़ देने चाहिये। मैं सन्ध्या समय यहाँ आकर इनको ले जाऊँगा। स्टार मेरे साथ हर बात पर सहमत है। मैं उससे ज़रा देर रुकने को कहकर सीढ़ी ठीक-ठाक

करता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ आया श्रीमती क्रेटा के बिना जाने हुए हम यहाँ से जा सकते हैं या नहीं। वह इस समय अवश्य किसी अन्दर के कमरे में बन्द होगी। मैं सीढ़ी लगाकर धीरे-धीरे नीचे उतरता हूँ। मैं अभी कठिनता से सीढ़ी के नीचे के डंडे तक पहुँचा हूँगा कि मुझे ऊपर से स्टार की चीखें सुन पड़ती हैं। वह सहायता के लिए चिल्ला रही है। जिस चौड़े चबूतरे पर मैं इस समय खड़ा हुआ हूँ उस पर हिलती हुई छाया पड़ रही है। निस्तब्धता में ऐसा प्रतीत होता है मानो छाया दीवार से रगड़कर चल रही हो। अब अपनी पहचल के शोर की ज़रा भी परवा न करके मैं जल्दी-जल्दी सीढ़ी पर चढ़ता हूँ। ऊपर पहुँचकर मैं देखता हूँ कि स्टार फ़र्श पर चित पड़ी हुई है और उसकी टाँगे खुली हुई हैं। वह पुतला उसकी छाती पर सवार है। मेरे अंदर जाने से उसकी गठरियाँ हिलने लगती हैं और पुतले के दोनों जबड़े आपस में कटकटा रहे हैं। उसने मुँह फेरकर मुझे देख लिया है। उसका चेहरा जैसा कि मैं खयाल करता था काठ का नहीं है वह एक काशीफल है। उसका टोप गिर जाने से वह मुझे साफ़ दिखाई दे रहा है। हवा का एक तेज़ झोंका उसके पाजामे और जाकट को खिड़की के बाहर उठा ले जाता है। अब केवल उसका लकड़ी का ढाँचा अवशेष है। मैं झाड़ू के दस्ते को जो उसकी रीढ़ की हड्डी है तोड़ डालता हूँ। कद्दू को जो उसका सिर है कुचल देता हूँ और स्टार को उठा लेता हूँ। वह पीली पड़ गई है और हाँफ रही है। मुर्ग़ा मज़े से खिड़की के चौखटे पर गश्त लगा रहा है। उसकी छाया दीवार पर बड़ी भली मालूम होती है। उसका पेट खूब भरा हुआ है। वह गर्व से अपने पंख फैलाये हुए है। स्टार मेरे साथ नीचे उतरती है। यह एक आकस्मिक घटना थी कि हवा ने पुतले को मेरी सहचरी स्टार के ऊपर ला पटका, किन्तु यह भी बहुत संभव है कि डान फ्रीडेल जिसकी विषय-वासना ऐहिक जीवन में तृप्त नहीं हो पाई थी अब मरकर काम पीड़ित हो

उठा हो। एक गोली से मरे हुए जनरल की इस शानदार और सभ्य प्रवृत्ति से वह अपना पिंड किस प्रकार छुड़ा सकता है ! गली में पहुँच-कर, स्टार के घर में जाने से पहले, हमने उस एजेंट की लाश को बिना देखे हुए भी देखा । 'निस्सन्देह डान फ़्रीडेल का शव भी असाधारण तथा विशिष्ट है' और पुलिसमैन के शव को इंगित करते हुए मैंने कहा—'तुम्हें अपने पद से अधिक सम्मान प्राप्त हुआ है।'